

**मुख्य पाठ्यक्रम**

**समूह - I**

**पुनरावृत्ति परीक्षा प्रश्न-पत्र**

**मई, 2025**



**अध्ययन बोर्ड (अकादमिक)**

**भारतीय सनदी लेखाकार संस्थान**  
(संसद के अधिनियम द्वारा स्थापित)

**नई दिल्ली**

© भारतीय सनदी लेखाकार संस्थान

सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। इस पुस्तक के किसी भी भाग को प्रकाशक की लिखित पूर्व अनुमति के बिना, किसी भी प्रारूप में, या किसी भी माध्यम से, इलेक्ट्रॉनिक, मैकेनिकल, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग, या अन्यथा, पुनरुत्पादित, पुनर्प्राप्ति प्रणाली में संग्रहीत या प्रसारित नहीं किया जा सकता है।

संस्करण	:	मार्च, 2025
वेबसाइट	:	<a href="http://www.icai.org">www.icai.org</a>
विभाग/समिति	:	अध्ययन बोर्ड (अकादमिक)
ई-मेल	:	<a href="mailto:bosnoida@icai.in">bosnoida@icai.in</a>
कीमत	:	
आईएसबीएन सं.	:	
प्रकाशक	:	भारतीय सनदी लेखाकार संस्थान, आईसीएआई भवन, पोस्ट बॉक्स नं. 7100, इंद्रप्रस्थ मार्ग, नई दिल्ली- 110 002, भारत की ओर से प्रकाशन एवं सीडीएस निदेशालय अध्ययन बोर्ड में टाइपसेट और डिजाइन
मुद्रण	:	

# अंतर्वस्तु

पृष्ठ संख्या

उद्देश्य एवं दृष्टिकोण.....i – vi

पुनरावृत्ति परीक्षा प्रश्न-पत्र का उद्देश्य..... i

परीक्षा की योजना एवं तैयारी..... ii

विषय-वार प्रयोज्यता..... iii

## प्रश्न-पत्र-वार आरटीपी

प्रश्न-पत्र 1: वित्तीय रिपोर्टिंग ..... 1 – 23

प्रश्न-पत्र 2: वृहत वित्तीय प्रबंधन ..... 24 – 53

प्रश्न-पत्र 3: वृहत लेखा परीक्षा, आश्वासन एवं व्यावसायिक नैतिकता ..... 54 – 80

मानकों/मार्गदर्शन टिप्पणियों/विधायी संशोधनों आदि की मई, 2025 की मुख्य परीक्षा हेतु प्रयोज्यता  
..... 81 – 83

## पुनरावृत्ति परीक्षा प्रश्न-पत्र, मई, 2025 – उद्देश्य एवं दृष्टिकोण

(छात्रों को सलाह दी जाती है कि इस पुनरावृत्ति परीक्षा प्रश्न-पत्र से सर्वाधिक लाभ प्राप्त करने हेतु निम्नलिखित पैराग्राफ को ध्यान से पढ़ें)

### I. पुनरावृत्ति परीक्षा प्रश्न-पत्र का उद्देश्य

पुनरावृत्ति परीक्षा प्रश्न-पत्र अध्ययन बोर्ड (बीओएस) द्वारा अपने छात्रों को प्रदान किए जाने वाले कई शैक्षिक इनपुट में से एक है। छात्रों इसे आरटीपी के नाम से जानते हैं, यह अध्ययन बोर्ड के बहुत पुराने प्रकाशनों में से एक है, जिसका महत्व और प्रासंगिकता परीक्षा के दृष्टिकोण से समय की कसौटी पर हमेशा खरी उतरी है।

पुनरावृत्ति परीक्षा प्रश्न-पत्र के प्राथमिक उद्देश्य हैं:

- छात्रों को आगामी परीक्षा हेतु उनकी तैयारियों का आकलन करने में मदद करना;
- छात्रों को आगामी परीक्षा हेतु प्रासंगिक सभी नवीनतम घटनाक्रमों की जानकारी एक ही जगह पर प्राप्त करने का अवसर प्रदान करना;
- छात्रों के आत्मविश्वास के स्तर को बढ़ाना; तथा

छात्रों को यह ध्यान रखना चाहिए कि आरटीपी में पाठ्यक्रम के विभिन्न वर्गों पर आधारित विभिन्न प्रकार के प्रश्न होते हैं, इसलिए आरटीपी के प्रश्नों का उत्तर देने से पहले पूरे पाठ्यक्रम का अध्ययन करना अति-आवश्यक है। दूसरे शब्दों में, आरटीपी से सर्वाधिक लाभ प्राप्त करने के लिए, यह सलाह दी जाती है कि आरटीपी में दिए गए प्रश्नों को हल करना शुरू करने से पहले छात्रों को अध्ययन सामग्री और वैधानिक अपडेट्स/न्यायिक अपडेट्स, जहाँ भी लागू हो, को अच्छी तरह से पढ़ लेना चाहिए।

यहां जिन विषयों पर प्रश्न दिए गए हैं, उन्हें सावधानीपूर्वक चुना गया है तथा इन विभिन्न प्रकार के प्रश्नों को तैयार करने में पूरी सावधानी बरती गई है। छात्रों को स्व-मूल्यांकन करने और ठीक से तैयारी हेतु उनमें एक केंद्रित दृष्टिकोण विकसित के लिए विस्तृत उत्तर दिए गए हैं।

फाउंडेशन, इंटरमीडिएट तथा फाइनल स्तर के छात्रों के लिए वर्चुअल मोड में निःशुल्क संचालित किए जाने वाले प्रसिद्ध विषय विशेषज्ञों द्वारा लाइव लर्निंग क्लासेस छात्रों को घर रहते हुए आसानी से अपनी परीक्षाओं की तैयारी करने में बहुत मदद करते हैं क्योंकि इन क्लासेस को स्मार्ट फोन, लैपटॉप, आई-पैड, टैबलेट आदि जैसे हैंड-हेल्ड डिवाइसों के

माध्यम से कभी भी कहीं भी लाइव देखा जा सकता है या रिकॉर्ड किए गए लेक्चर्स को बाद में देखा जा सकता है। इसके अलावा, छात्रों को सलाह दी जाती है कि वे एमसीक्यू प्रश्न पत्र प्रैक्टिस पोर्टल पर बहुविकल्पीय प्रश्नों (एमसीक्यू) को हल करने का प्रयास करें, जो तय समय सीमा के भीतर खुद का मूल्यांकन करने का एक प्लेटफॉर्म है।

छात्र निदेशक, अध्ययन बोर्ड, भारतीय सनदी लेखाकार संस्थान, ए-29, सेक्टर-62, नोएडा 201309 (उत्तर प्रदेश) को आरटीपी में किसी तरह का सुधार करने के लिए अपने सुझाव भेज सकते हैं। आरटीपी बीओएस नॉलेज पोर्टल के अंतर्गत संस्थान की वेबसाइट <https://boslive.icai.org> पर भी उपलब्ध है, जहां से इसे डाउनलोड किया जा सकता है।

## II. परीक्षा की योजना एवं तैयारी

यह सबसे उचित रहेगा कि आरटीपी मिलने से पहले आप सभी विषयों की प्रासंगिक अध्ययन सामग्री को पढ़ चुके हों। उसमें चर्चा की गई अवधारणाओं/प्रावधानों/संशोधनों/मामलों को ठीक से समझें।

अध्ययन सामग्री और अपडेट्स को अच्छी तरह से पढ़ने के पश्चात्, आरटीपी में दिए गए प्रश्नों को स्वयं हल करना शुरू करना चाहिए। अध्ययन सामग्री में दी गई अवधारणाओं और प्रावधानों को दोहराने तथा खुद को अपडेटेड रहने हेतु आरटीपी एक प्रभावी साधन है। आरटीपी आपकी तैयारी के स्तर का आकलन करने के लिए प्रदान किए जाते हैं। इसलिए आपको उसमें दिए गए प्रश्नों को स्वयं हल करना चाहिए और उसके पश्चात् अपने उत्तरों की तुलना उसमें दिए गए उत्तरों से करना चाहिए।

### परीक्षा संबंधी युक्तियाँ

परीक्षा में एक छात्र का प्रदर्शन कितना अच्छा होगा यह उसकी तैयारी के स्तर और गहराई पर निर्भर करता है। हालाँकि, कुछ महत्वपूर्ण बिंदु हैं जो एक छात्र को परीक्षा में अपना प्रदर्शन बेहतर बनाने में मदद कर सकते हैं। ये उपयोगी सुझाव नीचे दिए गए हैं:

- परीक्षा हॉल में समय से पहुंचें।
- प्रश्न पत्र मिलने पर सबसे पहले उसे ध्यान से तथा अच्छी तरह से पढ़ लें। प्रश्न पत्र पढ़ने हेतु आपको अलग से 15 मिनट का समय दिया जाता है।
- अपने समय की योजना बनाएं ताकि प्रत्येक प्रश्न को उचित समय दिया जा सके।
- फर्स्ट इम्प्रेशन इज द लास्ट इम्प्रेशन। इसलिए जिस प्रश्न का उत्तर आप सबसे अच्छे तरीके से दे सकते हैं, उसे पहले हल करना चाहिए।

- सभी प्रश्नों को करने का प्रयास करें। इसलिए, यह महत्वपूर्ण है कि आप प्रत्येक प्रश्न को तय समय के भीतर हल करें। कुछ समय उत्तरों की जांच करने के लिए भी रखें।
- उत्तर शुरू करने से पहले प्रश्न को कई बार ध्यान से पढ़ें ताकि यह समझ सकें कि क्या उत्तर देना आवश्यक है।
- एक-एक कर प्रश्न के सभी भागों के उत्तर दें; एक ही प्रश्न के विभिन्न भागों का उत्तर अलग-अलग स्थानों पर न दें।
- साफ और सुपाठ्य लिखें।
- उत्तर में हमेशा संक्षिप्त और मुख्य बात ही लिखें और अनावश्यक पृष्ठ भरने का प्रयास न करें।
- उत्तर की तार्किक अभिव्यक्ति होनी चाहिए।
- यदि कोई प्रश्न स्पष्ट नहीं है, तो आप अपनी धारणाएँ बता सकते हैं तो प्रश्न का उत्तर दे सकते हैं।
- परीक्षा हॉल से बाहर निकलने से पहले अपने उत्तरों को ध्यान से देखें तथा महत्वपूर्ण बिंदुओं को रेखांकित करें।
- केस परिदृश्य आधारित बहुविकल्पीय प्रश्नों के मामले में, केस में दिए गए तथ्यों को ध्यान से पढ़ें। साथ ही, सही उत्तर चुनने से पहले, उस पर आधारित प्रत्येक बहुविकल्पीय प्रश्नों तथा सभी विकल्पों को ध्यान से पढ़ें।

### III. विषयवार प्रयोज्यता

#### प्रश्न-पत्र 1: वित्तीय रिपोर्टिंग

प्रश्न-पत्र 1: वित्तीय रिपोर्टिंग से संबंधित अध्ययन सामग्री का नवंबर, 2024 संस्करण उपयुक्त है। वित्तीय रिपोर्टिंग का पाठ्यक्रम नैतिकता एवं तकनीकी के साथ एकीकृत भारतीय लेखा मानक पर आधारित है। छात्रों को समझने में आसानी के लिए अध्ययन सामग्री को पाँच मॉड्यूल में बांटा गया है।

पाठ्यक्रम की विषय-वस्तु को समझने के लिए, अध्ययन सामग्री को अध्ययन संबंधी दिशानिर्देशों के संदर्भ के साथ पढ़ना जरूरी है। इसमें पाठ्यक्रम से हटाए गए विषय, विषय-वार दिए गए हैं। स्टडी संबंधी दिशानिर्देश इस पुनरावृत्ति परीक्षा प्रश्न-पत्र के अंत में संलग्न "मई, 2025 - मुख्य परीक्षा हेतु मानकों/मार्गदर्शन टिप्पणियों/विधायी संशोधनों आदि की प्रयोज्यता" में दिए गए हैं।

चार्ट का अधिक उपयोग किया गया है। अध्ययन सामग्री में दिए गए उदाहरण तथा चित्रण आपको अवधारणाओं के इस्तेमाल को समझने में मदद करेंगे। इसके पश्चात, अपने प्रश्नों को हल करने के कौशल को बेहतर बनाने हेतु प्रत्येक अध्याय के अंत में दिए गए प्रश्नों को हल करें। आपने कितना समझा, इसे परखने के लिए दिए गए उत्तरों से अपने उत्तरों की तुलना करें।

इसके पश्चात, इस आरटीपी यानी पुनरावृत्ति परीक्षा प्रश्न-पत्र में दिए गए प्रश्नों को अलग-अलग हल करें और परीक्षा के लिए आपकी तैयारी कैसी है, इसका आकलन करने के लिए दिए गए उत्तरों के साथ उनकी तुलना करें। वित्तीय रिपोर्टिंग के पुनरावृत्ति परीक्षा प्रश्न-पत्र (आरटीपी) में बीस प्रश्न तथा उनके उत्तर हैं।

प्रश्नों के उत्तर समझने में आसानी तथा प्रश्नों को हल करने के चरणों को समझने हेतु इनके साथ कार्य टिप्पण भी दिए गए हैं। प्रश्नों के उत्तर ऐसे तरीके से दिए गए हैं, जैसा परीक्षा में छात्रों से अपेक्षा की जाती है। छात्रों से अपेक्षा की जाती है कि वे परीक्षा के माहौल में इन प्रश्नों को हल करें और फिर अपने हल को पुनरावृत्ति परीक्षा प्रश्न-पत्र में दिए गए हल से तुलना करें और परीक्षा में अधिक अंक पाने हेतु अपनी तैयारी की रणनीति बनाएं।

### प्रश्न-पत्र 2: वृहत वित्तीय प्रबंधन

मूलतः, वृहत वित्तीय प्रबंधन का विषय रणनीतिक निर्णय लेने में वित्तीय प्रबंधन सिद्धांतों और तकनीकों को लागू करने की क्षमता हासिल करना है। मुख्य विषय जिनसे संख्यात्मक प्रश्न सामान्यतः पूछे जाते हैं, वे इस प्रकार हैं:

- जोखिम प्रबंधन
- वृहत पूंजी बजटन निर्णय
- सुरक्षा विश्लेषण एवं मूल्यांकन
- पोर्टफोलियो प्रबंधन
- म्यूचुअल फंड
- डेरिवेटिव
- विदेशी मुद्रा जोखिम एवं जोखिम प्रबंधन

- अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय प्रबंधन
- ब्याज दर जोखिम प्रबंधन
- व्यवसाय का मूल्यांकन
- विलय एवं अधिग्रहण

तदनुसार, इस पुनरावृत्ति परीक्षा प्रश्न-पत्र में जिन विषयों पर आधारित प्रश्न पूछे गए हैं, उनका विवरण इस प्रकार है:

प्रश्न सं.	विषय
1	केस परिदृश्य (जोखिम प्रबंधन)
2	केस परिदृश्य (ब्याज दर जोखिम प्रबंधन)
3	डेरिवेटिव विश्लेषण और मूल्यांकन
4	डेरिवेटिव विश्लेषण और मूल्यांकन
5	व्यवसाय मूल्यांकन
6	विदेशी मुद्रा जोखिम और जोखिम प्रबंधन
7	विदेशी मुद्रा जोखिम और जोखिम प्रबंधन
8	उन्नत पूंजी बजटन निर्णय
9	श्रेणी प्रबंधन
10	सुरक्षा मूल्यांकन
11	सुरक्षा मूल्यांकन
12	विलय, अधिग्रहण एवं कॉर्पोरेट पुनर्गठन
13	अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय प्रबंधन
14	सैद्धांतिक प्रश्न
15	सैद्धांतिक प्रश्न

### प्रश्न-पत्र 3: वृहत लेखा परीक्षा, आश्वासन एवं व्यावसायिक नैतिकता

पुनरावृत्ति परीक्षा प्रश्न-पत्र अध्ययन सामग्री तथा छात्रों से संबंधित पत्रिका, सारांश, सामान्य कार्य आदि जैसे ज्ञान के अन्य तरीकों से वैचारिक अध्ययन करते समय आपको मिली जानकारी को ताज़ा करने का एक साधन है।

वृहत लेखा परीक्षा, आश्वासन एवं व्यावसायिक नैतिकता का यह आरटीपी मई 2025 की परीक्षा हेतु प्रासंगिक है। कुल 20 प्रश्न जिसमें केस परिदृश्य आधारित

बहुविकल्पीय प्रश्न, अलग से दिए गए बहुविकल्पीय प्रश्न और वर्णनात्मक प्रश्न शामिल हैं, उन्नीस अध्यायों में बंटे पूरे पाठ्यक्रम से लिए गए हैं।

ये 20 प्रश्न गुणवत्ता नियंत्रण, लेखा परीक्षा साक्ष्य, समापन एवं समीक्षा, रिपोर्टिंग, लेखा परीक्षा संबंधी सेवाएं, डिजिटल लेखा परीक्षा एवं आश्वासन, समूह लेखा परीक्षा, बैंकों और गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों की लेखा परीक्षा की विशेष विशेषताएं, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों की लेखा परीक्षा का अवलोकन, सम्यक् तत्परता, विवेचन और फॉरेंसिक लेखांकन, सतत विकास लक्ष्य (एसडीजी) और पर्यावरण, सामाजिक एवं प्रशासन (ईएसजी) आश्वासन और लेखा परीक्षकों की व्यावसायिक नैतिकता एवं दायित्व आदि जैसे विभिन्न विषयों से लिए गए हैं।

आरटीपी में दिए गए कुछ प्रश्न वर्णनात्मक यानी प्रत्यक्ष सिद्धांत प्रश्न (ज्ञान व समझ) आधारित हैं जबकि उनमें से कुछ केस स्टडीज़ आधारित यानी अनुप्रयोग-उन्मुख सिद्धांत प्रश्न (अनुप्रयोग और विश्लेषण / मूल्यांकन और संकलन) हैं। प्रत्येक प्रश्न से पहले अध्याय का नाम स्पष्ट रूप से दर्शाया गया है। अध्ययन सामग्री में दिए गए उदाहरण और चित्रण आपको अवधारणाओं के इस्तेमाल को समझने में मदद करेंगे। प्रत्येक अध्याय के अंत में दिए गए प्रैक्टिस प्रश्नों को हल करें और फिर, अपनी ज्ञान के स्तर को जानने के लिए अपने उत्तरों की तुलना दिए गए उत्तरों से करें। इसके बाद, अपनी समझ के स्तर का आकलन करने और अपने विश्लेषणात्मक एवं समस्या-समाधान कौशल को बेहतर बनाने हेतु एमसीक्यू पेपर प्रैक्टिस डैशबोर्ड में अपलोड किए गए एमसीक्यू और केस परिदृश्य आधारित एमसीक्यू को हल करें।

अंत में, इस आरटीपी में दिए गए प्रश्नों को अलग से हल करें और परीक्षा हेतु अपनी तैयारी का आकलन करने के लिए दिए गए उत्तरों के साथ उनकी तुलना करें।





## प्रश्न-पत्र – 1: वित्तीय रिपोर्टिंग



### प्रश्न

#### केस परिदृश्य।

एबीसी लिमिटेड एक डायनामिक कंपनी है जो अपने बिजनेस पोर्टफोलियो को बढ़ाने के लिए सोच-समझकर अन्य कंपनियों के अधिग्रहण में लगी हुई है। अपनी ग्रोथ स्ट्रेटजी के रूप में, कंपनी ने हाल ही में पीक्यूआर लिमिटेड और आरएसटी लिमिटेड का अधिग्रहण किया है। हालांकि, इन अधिग्रहण से ग्रोथ का अवसर मिलता है, लेकिन इन अधिग्रहित कंपनियों के खिलाफ कुछ मुकदमे भी चल रहे हैं। हालाँकि, एबीसी लिमिटेड ने इन कानूनी मामलों से जुड़े संभावित वित्तीय जोखिमों को कम करने हेतु इन कंपनियों को बेचने वाले विक्रेताओं से क्षतिपूर्ति ली है। वर्ष के दौरान निम्नलिखित अधिग्रहण किए गए हैं -

- (i) एबीसी लिमिटेड ने एक्सवाईजेड लिमिटेड से एक पेय कंपनी पीक्यूआर लिमिटेड का अधिग्रहण किया। अधिग्रहण के समय, पीक्यूआर लिमिटेड अदालती मामले में प्रतिवादी है, जिसमें पीक्यूआर लिमिटेड के कुछ ग्राहकों ने आरोप लगाया है कि पीक्यूआर लिमिटेड के प्रोडक्ट्स में तय स्तर से अधिक कीटनाशक हैं, जिससे उनके स्वास्थ्य को नुकसान हुआ है। पीक्यूआर लिमिटेड पर ₹2 करोड़ के हर्जाने का मुकदमा चल रहा है। एक्सवाईजेड लिमिटेड ने मामले के कारण होने वाले नुकसान, यदि कोई हो, के लिए एबीसी लिमिटेड को ₹1 करोड़ तक की राशि का मुआवजा दिया है। अदालती मामले के लिए आकस्मिक देयता का उचित मूल्य ₹0.70 करोड़ है।
- (ii) एबीसी लिमिटेड ने एमएन लिमिटेड से आरएसटी लिमिटेड का अधिग्रहण करने हेतु ₹50 करोड़ दिए हैं। आरएसटी लिमिटेड ने फाइबर ग्लास युक्त प्रोडक्ट्स का निर्माण करती है और इन फाइबर ग्लास के प्रभावों से संबंधित 10 सामूहिक कार्रवाईयों (क्लास एक्शन) में इसका नाम लिया गया है, एमएन लिमिटेड ₹10 करोड़ की राशि तक किसी भी अदालती मामलों के प्रतिकूल परिणामों हेतु एबीसी लिमिटेड को क्षतिपूर्ति करने के लिए सहमत है। सामूहिक कार्रवाईयों में नुकसान की राशि निर्दिष्ट नहीं की गई है और पिछले अनुभव से पता चलता है कि दावे प्रत्येक ₹1 करोड़ तक हो सकते हैं, लेकिन उन्हें अक्सर कम राशि में निपटाया जाता है। एबीसी लिमिटेड अदालती मामलों का मूल्यांकन करता है और निर्णय लेता है कि परिणामों में संभावित भिन्नता के कारण,

आकस्मिक देयता को ठीक से मापा नहीं जा सकता है और तदनुसार अदालती मामलों के संबंध में कोई राशि तय नहीं है।

**उपरोक्त तथ्यों के आधार पर, प्रासंगिक भारतीय लेखांकन मानकों (इंड एएस) के आधार पर नीचे दिए गए प्रश्न 1 से 5 के लिए सबसे उपयुक्त उत्तर चुनें।**

1. ग्राहक द्वारा अदालती मामले से संबंधित पीक्यूआर लिमिटेड के अधिग्रहण के समय एबीसी लिमिटेड आकस्मिक देयता से संबंधित चिन्हित की गई देयता और क्षतिपूर्ति परिसंपत्तियों हेतु कितनी राशि का लेखा-जोखा रखेगा?
  - (क) ₹ 2 करोड़; ₹ 1 करोड़
  - (ख) ₹ 1 करोड़; ₹ 1 करोड़
  - (ग) ₹ 0.70 करोड़; ₹ 1 करोड़
  - (घ) ₹ 0.70 करोड़; ₹ 0.70 करोड़
2. ऐसी देयता एवं क्षतिपूर्ति परिसंपत्ति की मान्यता के कारण साख पर क्या प्रभाव पड़ेगा?
  - (क) साख पर शुद्ध प्रभाव शून्य होगा
  - (ख) साख के मूल्य में 0.30 करोड़ रुपये की कमी
  - (ग) साख के मूल्य में 0.30 करोड़ रुपये की वृद्धि
  - (घ) साख के मूल्य में 1 करोड़ रुपये की वृद्धि
3. मान लीजिए कि चिन्हित की गई देयता का उचित मूल्य 0.70 करोड़ रुपये के बजाय 1.20 करोड़ रुपये है, तो पीक्यूआर लिमिटेड के अधिग्रहण के समय देयता और क्षतिपूर्ति परिसंपत्तियों का मूल्य क्या होगा?
  - (क) ₹ 2 करोड़; ₹ 1 करोड़
  - (ख) ₹ 1.20 करोड़; ₹ 1 करोड़
  - (ग) ₹ 1 करोड़; ₹ 1 करोड़
  - (घ) ₹ 1.20 करोड़; ₹ 1.20 करोड़
4. ऐसी देयता और क्षतिपूर्ति परिसंपत्ति की मान्यता के कारण साख पर क्या प्रभाव पड़ेगा?
  - (क) साख के मूल्य में 1 करोड़ रुपये की वृद्धि
  - (ख) साख के मूल्य में 0.20 करोड़ रुपये की कमी

- (ग) साख के मूल्य में 0.20 करोड़ रुपये की वृद्धि  
 (घ) साख पर शुद्ध प्रभाव शून्य होगा
5. आरएसटी लिमिटेड के अधिग्रहण पर 10 सामूहिक कार्रवाईयों (क्लास एक्शन) के संबंध में क्षतिपूर्ति परिसंपत्ति की कितनी राशि का लेखा-जोखा रखा जाना चाहिए?
- (क) ₹ 10 करोड़  
 (ख) ₹ 1 करोड़  
 (ग) शून्य  
 (घ) ₹ 9 करोड़

केस परिदृश्य II

नीचे दिए गए तथ्यों के आधार पर प्रश्न 6 से 10 तक के सबसे उपयुक्त उत्तर चुनें:

तिथि	राशि (₹)	आयोजन
1 जनवरी, 20X6 को	7,500	10 वर्ष के उपयोगी जीवन के आधार पर मूल्यहास के साथ अर्जित परिसंपत्ति
31 दिसंबर, 20X7 को	240	क्षीणता के संकेतक दर्ज किए गए और हानि भते का हिसाब लगाया गया
28 फरवरी, 20X9 को		परिसंपत्तियों को बिक्री के लिए रखे गए के रूप में वर्गीकृत किया गया है
28 फरवरी, 20X9 को	4,600	उचित मूल्य में से बेचने की लागत घटाई गई
30 जून, 20X9 को	5,300	उचित मूल्य में से बेचने की लागत घटाई गई

6. वर्ष 20X8 के लिए परिसंपत्ति पर मूल्यहास की राशि होगी-
- (क) ₹ 750  
 (ख) ₹ 720  
 (ग) ₹ 240  
 (घ) ₹ 120
7. वर्ष 20X9 के लिए परिसंपत्ति पर मूल्यहास की राशि होगी-
- (क) ₹ 750  
 (ख) ₹ 720

- (ग) ₹ 240  
(घ) ₹ 120
8. 28 फरवरी, 20X9 को 'बिक्री हेतु धारित' के रूप में वर्गीकरण से ठीक पूर्व परिसंपत्ति का वहन मूल्य क्या होगा?  
(क) ₹ 4,920  
(ख) ₹ 5,040  
(ग) ₹ 4,600  
(घ) ₹ 5,300
9. 28 फरवरी, 20X9 को 'बिक्री हेतु धारित' के रूप में वर्गीकरण के तुरंत पश्चात् परिसंपत्ति का वहन मूल्य क्या होगा?  
(क) ₹ 4,920  
(ख) ₹ 5,040  
(ग) ₹ 4,600  
(घ) ₹ 5,300
10. 30 जून, 20X9 तक हानि प्रतिवर्तन के पश्चात् हानि प्रतिवर्तन की राशि और परिसंपत्ति का वहन मूल्य क्या होगा?  
(क) ₹ 560; ₹ 5,300  
(ख) ₹ 440; ₹ 5,040  
(ग) ₹ 560; ₹ 5,160  
(घ) ₹ 700; ₹ 5,300

**भारतीय लेखा मानक 28 "एसोसिएट्स एवं संयुक्त उद्यमों में निवेश"**

11. एक्स लिमिटेड ने 1 जून, 20X6 को ₹50,000 में वी लिमिटेड में 10% हिस्सेदारी हासिल की। वी लिमिटेड में निवेश को इक्विटी निवेश (ट्रेडिंग हेतु धारित नहीं) के रूप में दर्ज किया गया, जिसके लिए एफवीटीओसीआई में वित्तीय परिसंपत्तियों के बाद के मापन हेतु अपरिवर्तनीय विकल्प का इस्तेमाल गया है। एक्स लिमिटेड ने 31 मार्च, 20X7 को समाप्त वर्ष हेतु अन्य व्यापक आय में ₹30,000 के उचित मूल्य में वृद्धि को दर्शाया।

एक्स लिमिटेड ने 1 अप्रैल, 20X7 को ₹2,00,000 में वी लिमिटेड में अतिरिक्त 25% हिस्सेदारी हासिल की और इसपर महत्वपूर्ण अधिकार हासिल किया। वी लिमिटेड की शुद्ध परिसंपत्तियों का उचित मूल्य जून, 20X6 में ₹2,50,000 था और 1 अप्रैल, 20X7 को बढ़कर ₹4,00,000 हो गया था। वी लिमिटेड ने 1 जून, 20X6 और 1 अप्रैल, 20X7 के बीच ₹1,00,000 के लाभांश के बाद लाभ दर्ज किया।

जब इस तरह के निवेश से वी लिमिटेड पर एक्स लिमिटेड को महत्वपूर्ण अधिकार मिलता है, तो एक्स लिमिटेड को वी लिमिटेड में कई हिस्सों में अधिग्रहण के कारण निवेश का लेखाजोखा कैसे रखना चाहिए? इसके लिए अभीष्ट जर्नल प्रविष्टियाँ करें।

### इंड एस 109 "वित्तीय साधन"

12. 1 अप्रैल, 20X1 को, एबीसी लिमिटेड ₹15,00,000 के सममूल्य और 8% की वार्षिक निश्चित कूपन दर के साथ 10-वर्षीय बॉन्ड जारी करता है, जो समान विशेषताओं वाले बॉन्ड हेतु बाजार दरों के अनुरूप है। एबीसी लिमिटेड अपनी बेंचमार्क ब्याज दर के रूप में सिक्योर्ड ओवरनाइट फाइनेंसिंग दर (एसओएफआर) का उपयोग करता है। बॉन्ड की शुरुआत की तारीख पर, एसओएफआर 5% है। पहले वर्ष के अंत में:

- एसओएफआर घटकर 4.75% हो गया है; और
- बॉन्ड का उचित मूल्य ₹15,38,110 है। यह मूल्य 7.6% की ब्याज दर के अनुरूप है।
- बॉन्ड पर शेष नकदी प्रवाह नौ वर्षों हेतु प्रति वर्ष ₹1,20,000 और नौवें वर्ष के अंत में ₹15,00,000 है। 7.6% पर छूटे गए ये नकदी प्रवाह ₹15,38,110 के बराबर हैं।

एबीसी लिमिटेड एक फ्लैट यील्ड कर्व का पालन करता है, जिसके अनुसार ब्याज दरों में किए जाने वाले प्रत्येक परिवर्तन यील्ड कर्व में समानांतर बदलाव के परिणामस्वरूप होते हैं, और यह कि एसओएफआर में परिवर्तन बाजार की स्थितियों में एकमात्र प्रासंगिक परिवर्तन हैं।

निम्नलिखित छूट कारकों पर विचार किया जा सकता है -

छूट दर @7.75%	₹1 देय का वर्तमान मूल्य
9वें वर्ष के अंत में	51.1 पैसे
वर्ष 1-9 के लिए संचयी रूप से	6.312
वर्ष 10 के अंत में	47.4 पैसे
वर्ष 1-10 के लिए संचयी रूप से	6.786

**आवश्यक**

वर्ष 1 के अंत में ओसीआई को हस्तांतरित की गई राशि क्या है, जब बांड को उचित मूल्य पर मापा गया था?

**इंड एस 32 "वित्तीय साधन: प्रेजेंटेशन"**

13. 1 अप्रैल, 2X01 को, ए लिमिटेड ने 31 मार्च, 2X11 को परिपक्व होने वाले ₹1,000 के अंकित मूल्य के साथ 10% परिवर्तनीय डिबेंचर जारी किया। डिबेंचर ₹25 प्रति शेयर के रूपांतरण मूल्य पर ए लिमिटेड के इक्विटी शेयर में परिवर्तनीय है। ब्याज नकद में अर्ध-वार्षिक रूप से देय है। जारी करने की तिथि पर, ए लिमिटेड 11% की कूपन ब्याज दर वाले दस साल की अवधि के साथ गैर-परिवर्तनीय ऋण जारी कर सकता था।

1 अप्रैल, 2X06 को, परिवर्तनीय डिबेंचर का उचित मूल्य ₹1,700 है।

ए लिमिटेड डिबेंचर के धारक को ₹1,700 में डिबेंचर पुनर्खरीद करने हेतु एक निविदा प्रस्ताव देता है, जिसे धारक स्वीकार कर लेता है। पुनर्खरीद की तिथि पर, ए लिमिटेड 8% की कूपन ब्याज दर वाले पांच साल की अवधि के साथ गैर-परिवर्तनीय ऋण जारी कर सकता था।

**अभीष्ट**

ए लिमिटेड इस पुनर्खरीद को खाताबही में कैसे दर्शाता है?

**इंड एस 103 "व्यावसायिक संयोजन"**

14. 1 अप्रैल, 20X1 को, पीक्यूआर लिमिटेड ने ₹8,000 करोड़ में एक्सवाईजेड लिमिटेड के 30% शेयर खरीदे। 31 मार्च, 20X2 को, पीक्यूआर लिमिटेड ने इक्विटी अकाउंटिंग का उपयोग करके एक्सवाईजेड लिमिटेड के शुद्ध परिसंपत्ति परिवर्तनों में अपना हिस्सा निम्नानुसार दर्शाया:

(राशि करोड़ रुपये में)

लाभ या हानि का हिस्सा	700
ओसीआई विनिमय अंतर का हिस्सा	100
ओसीआई में पीपीई के पुनर्मूल्यांकन रिजर्व का हिस्सा	50

1 अप्रैल, 20X2 को, पीक्यूआर लिमिटेड ने ₹25,000 करोड़ की नकदी में एक्सवाईजेड लिमिटेड के शेष 70% का अधिग्रहण किया। उस तिथि पर निम्नलिखित अतिरिक्त जानकारी उपलब्ध है।

(राशि करोड़ रुपये में)

पहले से स्वामित्व वाले 30% अधिकार का उचित मूल्य	9,000
एक्सवाईजेड लिमिटेड की चिन्हित किए जाने योग्य शुद्ध परिसंपत्तियों का उचित मूल्य	30,000

**अभीष्ट**

ऐसे व्यावसायिक संयोजन का लेखा-जोखा कैसे रखा जाना चाहिए?

**इंड एस 103 “व्यावसायिक संयोजन”**

15. 1 जनवरी, 20X1 को, एच लिमिटेड ने ₹15,00,000 में एस लिमिटेड की सभी शेयर पूंजी का अधिग्रहण किया। अधिग्रहण की तिथि पर एस लिमिटेड की चिन्हित योग्य परिसंपत्तियों और देनदारियों के बही मूल्य और उचित मूल्य नीचे दिए गए हैं, साथ ही एस लिमिटेड के कर क्षेत्राधिकार में उनके कर आधार भी दिए गए हैं। अधिग्रहण पर उत्पन्न होने वाली कोई भी साख कर उद्देश्यों हेतु कटौती योग्य नहीं है। एच लिमिटेड और एस लिमिटेड के कर क्षेत्राधिकार में कर की दरें क्रमशः 30% और 40% हैं।

अधिग्रहीत शुद्ध परिसंपत्तियां	बुक वैल्यू ₹000	कर आधार ₹000	उचित मूल्य ₹000
भूमि एवं भवन	600	500	700
संपत्ति, संयंत्र और उपकरण	250	200	270
इन्वेंटरी	100	100	80
प्राप्य खाते	150	150	150
नकद एवं नकद समतुल्य	130	130	130
कुल परिसंपत्तियां	1,230	1,080	1,330
देय खाते	(160)	(160)	(160)
सेवानिवृत्ति लाभ दायित्व	(100)	-	(100)
आस्थगित कर देयता से पूर्व शुद्ध परिसंपत्तियां	970	920	(1070)
बही मूल्यों और कर आधारों के बीच अंतर पर आस्थगित कर देयता (₹ 50 @ 40%)	(20)		
अधिग्रहण पर शुद्ध परिसंपत्तियां	950	920	1,070

उपरोक्त जानकारी के आधार पर एस लिमिटेड के अधिग्रहण और साख पर उत्पन्न होने वाले आस्थगित कर की गणना करें।

## इंड एस 21 “विदेशी विनिमय दरों में परिवर्तन के प्रभाव”

16. भारत में निगमित पी लिमिटेड की विदेशी कंपनी एस लिमिटेड में 70% हिस्सेदारी है। पी लिमिटेड की कार्यात्मक मुद्रा रुपया (₹) है जबकि एस लिमिटेड की कार्यात्मक मुद्रा अमेरिकी डॉलर मुद्रा है। पी लिमिटेड ने एस लिमिटेड में अपना पूरा निवेश 3,200 हजार रुपये में बेच दिया। निम्नलिखित जानकारी प्रदान की गई है:

(₹ हजार में)

विवरण	एस कुल	पी का हिस्सा (70%)	एनसीआई (30%)
निवल परिसंपत्ति	4,000	2,800	1,200
विदेशी मुद्रा परिवर्तन रिजर्व लाभ	900	630	270

## अभीष्ट

कोई कंपनी विदेशी सहायक कंपनी के निपटान पर संचयी अनुवाद समायोजन (क्यूम्युलेटिव ट्रांसलेशन एडजस्टमेंट - सीटीए) का लेखा कैसे करती है?

## भारतीय लेखा मानक 2 “इन्वेंट्री”

17. ए लिमिटेड से संबंधित निम्नलिखित जानकारी प्रदान की गई है, जो एफआईएफओ लागत सूत्र का उपयोग करके अपनी इन्वेंट्री का लेखा-जोखा रखती है:
- पूर्ण क्षमता एक वर्ष में 10,000 श्रम घंटे की है।
  - सामान्य क्षमता प्रति वर्ष 7,500 श्रम घंटे की है।
  - वर्तमान अवधि के लिए वास्तविक श्रम घंटे 6,500 घंटे हैं।
  - कुल स्थिर उत्पादन उपरिव्यय ₹1,500 है,
  - कुल परिवर्तनीय उत्पादन उपरिव्यय ₹2,600 है।
  - कुल प्रारंभिक इन्वेंट्री 2,500 इकाई है।
  - एक वर्ष में उत्पादित कुल इकाइयाँ 6,500 इकाइयाँ हैं।
  - एक वर्ष में कुल 6,700 इकाइयाँ बेची गईं।
  - कुल अंतिम इन्वेंट्री 2,300 इकाई है।

**अभीष्ट**

उपरोक्त जानकारी के आधार पर चालू वर्ष हेतु सामान्य क्षमता पर तथा सामान्य से कम उत्पादन पर इन्वेंट्री के लिए उपरिव्यय लागत का आवंटन किस प्रकार किया जाएगा तथा यह भी दर्शाए कि लाभ-हानि विवरण में कितना व्यय चिन्हित किया जाएगा?

**भारतीय लेखा मानक 7 “नकदी प्रवाह का विवरण”**

18. 1 अप्रैल, 20X6 को एक भारतीय कंपनी (जो इसके लेन-देनों का लेखा-जोखा भारतीय रुपये (₹) में करती है) का प्रारंभिक तुलन-पत्र, जिसमें 1,00,000 रुपये नकद और 100,000 रुपये की शेयर पूंजी शामिल है। कंपनी 30 सितंबर, 20X6 को 2,200 अमेरिकी डॉलर का दीर्घावधि ऋण लेती है, जब विनिमय दर 1 अमेरिकी डॉलर = 87 रुपये है। वर्ष के दौरान कोई अन्य लेनदेन नहीं हुआ है। 31 मार्च, 20X7 की तुलन-पत्र तिथि पर विनिमय दर 1 अमेरिकी डॉलर = 85 रुपये है।

31 मार्च, 20X7 को तुलन-पत्र का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है:

	₹	₹
<b>परिसंपत्ति</b>		
नकद (1,00,000+1,91,400)		2,91,400
		2,91,400
<b>इक्विटी एवं देयता</b>		
<b>पूंजी और रिजर्व</b>		
शेयर पूंजी	1,00,000	
अन्य इक्विटी		
प्रतिधारित आय	4,400	1,04,400
<b>गैर-चालू देनदारियां</b>		
दीर्घकालिक ऋण		1,87,000
<b>कुल इक्विटी और देनदारियां</b>		2,91,400

**अभीष्ट:**

अनिश्चित लेनदेन से उत्पन्न विदेशी मुद्रा अंतर नकदी प्रवाह विवरण में किस प्रकार प्रतिबिंबित होगा?

**भारतीय लेखा मानक 24 "संबंधित पक्ष प्रकटीकरण"**

19. श्री वाई के पिता ए लिमिटेड में 100% शेयरों के मालिक हैं। श्री वाई और श्रीमती वाई बी लिमिटेड में 100% शेयरों के मालिक हैं। सुश्री जेड जो श्रीमती वाई की

बहन हैं, समय-समय पर बी लिमिटेड को बहीखाता सेवाएं प्रदान करती हैं। हालाँकि, सुश्री जेड बी लिमिटेड की कर्मचारी नहीं हैं। ए लिमिटेड ने वर्ष के दौरान बी लिमिटेड को दिए गए ₹1,50,000 के ऋण को बढ़ाकर ₹2,00,000 कर दिया है, जिसके लिए ए लिमिटेड बाजार दर से कम ब्याज लेता है।

**अभीष्ट:**

- (i) बताएं कि क्या श्री वाई के पिता और श्रीमती वाई की बहन बी लिमिटेड के संबंधित पक्ष हैं।
- (ii) ए लिमिटेड द्वारा बी लिमिटेड को दिए गए ऋण के संबंध में ए लिमिटेड तथा बी लिमिटेड दोनों के वित्तीय विवरणों में क्या प्रकटीकरण किया जाना है?
- (iii) क्या बी लिमिटेड को अपने वित्तीय विवरणों में श्रीमती वाई की बहन के साथ लेन-देन का प्रकटीकरण करना अभीष्ट है?

**इंड एस 102 "शेयर-आधारित भुगतान"**

20. 1 अप्रैल, 20X1 को एक कंपनी ने अपने कर्मचारियों के साथ शेयर-आधारित भुगतान समझौता किया। इसकी की शर्तें इस प्रकार हैं:

- कर्मचारियों को कंपनी के लिए पाँच साल तक काम करना जरूरी है; उसके बाद उन्हें कंपनी के शेयरों के मूल्य के बराबर नकद भुगतान होगा।
- यदि कंपनी पाँच साल की अवधि के दौरान आईपीओ लाती है, तो कर्मचारियों को नकद भुगतान के बजाय मुफ्त शेयर मिलेंगे। इसलिए, कर्मचारियों को आईपीओ के समय मुफ्त शेयर या 5वें वर्ष के अंत में नकद भुगतान मिल सकता है, लेकिन दोनों नहीं।
- अगले पांच वर्षों में किसी भी कर्मचारी के कंपनी छोड़ने की उम्मीद नहीं है।
- रिवार्ड की तिथि से लेकर दूसरे वर्ष के अंत तक, यह संभावना नहीं थी कि 5वें वर्ष से पहले कोई आईपीओ आयेगा।
- तीसरे वर्ष के अंत में, आईपीओ लाना संभावित हो जाता है; और प्रबंधन को उम्मीद है कि ऐसा 4वें वर्ष में होगा।
- चौथे वर्ष के अंत में, आईपीओ लाया जाता है; और कर्मचारियों को मुफ्त शेयर मिलते हैं।
- इक्विटी-सेटल अवार्ड विकल्प का उचित मूल्य अनुदान तिथि पर ₹1,000 है। कैश-सेटल विकल्प का उचित मूल्य,

पाँच वर्षों के भीतर आईपीओ लाने की संभावना को नज़रअंदाज़ करते हुए, इस प्रकार है:

- वर्ष 1 के अंत में ₹50;
- वर्ष 2 के अंत में ₹500;
- वर्ष 3 के अंत में ₹100; और
- वर्ष 4 के अंत में ₹50

**अभीष्ट:**

संस्था इस लेनदेन का लेखा कैसे करेगी?



**उत्तर**

**केस परिदृश्य I का उत्तर**

1. विकल्प (घ): ₹0.70 करोड़; ₹0.70 करोड़
2. विकल्प (क): साख पर शुद्ध प्रभाव शून्य होगा
3. विकल्प (ख): ₹1.20 करोड़; ₹1 करोड़
4. विकल्प (ग): साख के मूल्य में 0.20 करोड़ रुपये की वृद्धि
5. विकल्प (ग): शून्य

**केस परिदृश्य II का उत्तर**

6. विकल्प (ख) : ₹720
7. विकल्प (घ): ₹120
8. विकल्प (क): ₹4,920
9. विकल्प (ग): ₹4,600
10. विकल्प (ग): ₹560; ₹5,160
11. इक्विटी पद्धति को लागू करते समय, भारतीय लेखा मानक 28 के पैराग्राफ 10 के अनुसार, एसोसिएट्स में निवेश को शुरु में लागत के रूप में दर्शाया जाना चाहिए। हालाँकि, इसमें ऐसे मौजूदा निवेश का लेखा-जोखा कैसे रखा जाए, इस पर कोई विशिष्ट दिशानिर्देश नहीं है, जिसका लेखा-जोखा भारतीय लेखा मानक 109 के तहत रखा जाता है, जो बाद में एसोसिएट्स या संयुक्त उद्यम बन जाता है।

भारतीय लेखा मानक 103 के पैराग्राफ 42 से सादृश्य बनाकर उचित मूल्य दृष्टिकोण को लागू किया जा सकता है।

भारतीय लेखा मानक 103 का पैराग्राफ 42, 'व्यावसायिक संयोजन', उस स्थिति से संबंधित है, जहां अधिग्रहणकर्ता पर नियंत्रण कई चरणों में हासिल किया जाता है। ऐसे मामले में, अधिग्रहणकर्ता अधिग्रहीत कंपनी में अपने पहले से धारित इक्विटी को उसके अधिग्रहण-तिथि के उचित मूल्य पर पुनः मापेगा और परिणामी लाभ या हानि, यदि कोई हो, को लाभ या हानि या ओसीआई में, उचित रूप से दर्शाएगा। पिछली रिपोर्टिंग अवधियों में, अधिग्रहणकर्ता ने ओसीआई पर अधिग्रहणकर्ता में अपने इक्विटी के मूल्य में परिवर्तनों को चिन्हित किया हो सकता है। यदि ऐसा है, तो ओसीआई में चिन्हित की गई राशि को उसी आधार पर चिन्हित किया जाएगा, जैसा कि अधिग्रहणकर्ता द्वारा पहले से धारित इक्विटी अधिकार का सीधे निपटान किए जाने पर आवश्यक होगा।

उपर्युक्त मार्गदर्शन का इस्तेमाल करने पर, निम्नलिखित लेखांकन किया जाएगा:

**वी लिमिटेड पर महत्वपूर्ण प्रभाव हासिल करने पर साख की गणना**

विवरण	₹
पहले से धारित 10% ब्याज का उचित मूल्य [2,00,000/25% x10%]	80,000
अतिरिक्त 25% का उचित मूल्य (भुगतान की गई राशि)	<u>2,00,000</u>
एसोसिएट वी लिमिटेड में निवेश की लागत	2,80,000
घटाएँ: अर्जित पहचान योग्य शुद्ध परिसंपत्तियों का उचित मूल्य (4,00,000 x 35%)	<u>(1,40,000)</u>
साख	<u>1,40,000</u>

**जर्नल प्रविष्टियां**

विवरण	राशि (₹)	राशि (₹)
निवेश खाता (10%) ओसीआई (इक्विटी) में	नामे	30,000
एसोसिएट्स खाते में निवेश (35%) बैंक खाते में	नामे	2,80,000
निवेश (एफवीटीओसीआई) में (10%)		2,00,000
		80,000

ओसीआई (इक्विटी)	नामे	30,000	
प्रतिधारित आय में			30,000

12. बांड के उचित मूल्य में परिवर्तन की वह राशि, जो बाजार की स्थितियों में परिवर्तन के कारण बाजार जोखिम को उत्पन्न नहीं करती है, का अनुमान इस प्रकार लगाया जाता है:

**चरण (क)**

अवधि के प्रारंभ में बांड का आईआरआर 8% है।

**चरण (ख)**

क्योंकि बेंचमार्क ब्याज दर (एसओएफआर) 5% है, इसलिए आईआरआर का साधन-विशिष्ट घटक 3% है।

**चरण (ग)**

अवधि के अंत में साधन का संविदागत नकदी प्रवाह इस प्रकार है:

- अगले 9 वर्षों के लिए प्रति वर्ष ₹1,20,000 [ ₹15,00,000 x 8%] का ब्याज
- 9वें वर्ष के अंत में 15,00,000 रुपये का मूलधन चुकाना।

इन नकदी प्रवाहों का वर्तमान मूल्य 7.75% की छूट दर का उपयोग करके गणना की जाती है। यह दर नीचे दिए अनुसार प्राप्त की जाती है:

- अवधि के अंत में 4.75% एसओएफआर, प्लस
- 3% साधन - विशिष्ट घटक की गणना अवधि के प्रारंभ में की जाती है

इससे ₹15,23,940 का काल्पनिक वर्तमान मूल्य प्राप्त होता है

$$= [(15,00,000 \times 0.511) + (1,20,000 \times 6.312)].$$

**चरण (घ)**

अवधि के अंत में देयता का उचित मूल्य 15,38,110 रुपये है। इसलिए, एबीसी लिमिटेड को ओसीआई में 14,170 रुपये [15,38,110 रुपये - 15,23,940 रुपये] पेश करना चाहिए।

13. ए लिमिटेड के वित्तीय विवरणों में, डिबेंचर की अग्रणीत राशि को निर्गत करने पर निम्नानुसार आवंटित किया जाता है:

	₹
<b>देयता घटक</b>	
₹50 के 20 अर्ध-वार्षिक ब्याज भुगतानों का वर्तमान मूल्य, 11% पर छूट (₹ 50 x 11.95)	598
10 वर्षों में देय ₹1,000 का वर्तमान मूल्य, 11% पर छूट, अर्धवार्षिक चक्रवृद्धि (₹1,000 x 0.342)	<u>342</u>
	940
<b>इक्विटी घटक</b>	
कुल ₹ 1,000 आय और ऊपर आवंटित ₹ 940 के बीच का अंतर	<u>60</u>
<b>कुल प्राप्य</b>	<b><u>1,000</u></b>

पुनर्खरीद मूल्य निम्नानुसार आवंटित किया जाता है:

	वहन मूल्य (₹)	उचित मूल्य (₹)	अंतर (₹)
<b>देयता घटक:</b>			
शेष 10 अर्धवार्षिक ब्याज का वर्तमान मूल्य ₹ 50 का भुगतान, क्रमशः 11% और 8% पर छूट दी गई	377	406	
5 वर्षों में देय ₹ 1,000 का वर्तमान मूल्य, क्रमशः 11% और 8% पर छूट दी गई, अर्धवार्षिक चक्रवृद्धि	<u>585</u>	<u>676</u>	
	962	1,082	(120)
<b>इक्विटी घटक</b>	<u>60</u>	<u>618</u>	<u>(558)</u>
<b>कुल</b>	<b><u>1,022</u></b>	<b><u>1,700</u></b>	<b><u>(678)</u></b>

ए लिमिटेड डिबेंचर की पुनर्खरीद को निम्नानुसार दर्शाता है:

(₹)

देयता घटक	नामे	962	
ऋण निपटान व्यय (पी एंड एल)	नामे	120	
नकद में			1,082
(दायित्व घटक की पुनर्खरीद को दर्शाने के लिए)			

इक्विटी घटक	नामे	60	
रिजर्व और अधिशेष	नामे	558	618
नकद में			
(इक्विटी घटक के लिए भुगतान की गई नकदी को दर्शाने के लिए)			

ऋण निपटान व्यय (डेब-सेटलमेंट एक्सपेंस) ऋण घटक के वहन मूल्य और उसके उचित मूल्य के बीच अंतर को दर्शाता है।

14. भारतीय लेखा मानक 103 के पैराग्राफ 42 में प्रावधान है कि कई चरणों में हासिल किए गए व्यवसाय संयोजन में, अधिग्रहणकर्ता अधिग्रहीत कंपनी में अपने पहले से धारित इक्विटी को उसके अधिग्रहण-तिथि उचित मूल्य पर पुनः मापेगा और परिणामी लाभ या हानि, यदि कोई हो, को लाभ या हानि या अन्य व्यापक आय में, जैसा उचित हो, दर्शाएगा। पिछली रिपोर्टिंग अवधियों में, अधिग्रहणकर्ता ने अधिग्रहणकर्ता में अपने इक्विटी के मूल्य में परिवर्तनों को अन्य व्यापक आय में मान्यता दी हो सकती है। यदि ऐसा है, तो अन्य व्यापक आय में मान्यता प्राप्त राशि को उसी आधार पर मान्यता दी जाएगी, जैसा कि अधिग्रहणकर्ता द्वारा पहले से धारित इक्विटी हित का सीधे निपटान किए जाने पर आवश्यक होगा।

उपर्युक्त को लागू करते हुए, पीक्यूआर लिमिटेड अपने समेकित वित्तीय विवरणों में निम्नलिखित प्रविष्टि दर्ज करता है:

(राशि करोड़ रुपये में)

	नामे	जमा
एक्सवाईजेड लिमिटेड की चिन्हित योग्य शुद्ध परिसंपत्तियाँ	नामे	30,000
साख (डब्ल्यूएन1)	नामे	4,000
विदेशी मुद्रा अनुवाद रिजर्व	नामे	1,00
पीपीई पुनर्मूल्यांकन रिजर्व	नामे	50
नकद में		25,000
सहयोगी - एक्सवाईजेड लिमिटेड में निवेश हेतु (डब्ल्यूएन3)		8,850
प्रतिधारित आय (डब्ल्यूएन2)		50
पहले से धारित ब्याज पर लाभ प्राप्त करना एक्सवाईजेड को लाभ या हानि में चिन्हित की गई (डब्ल्यूएन4)		250
(एक्सवाईजेड लिमिटेड के अधिग्रहण को दर्शाने के लिए)		

**कार्य टिप्पण :**

1. साख की गणना इस प्रकार की जाती है: (₹ करोड़ में)

नकद प्रतिफल	25,000
एक्सचेंज में पहले से धारित इक्विटी हिस्सेदारी का उचित मूल्य	<u>9,000</u>
कुल प्रतिफल	34,000
अर्जित चिन्हित किए जाने योग्य शुद्ध परिसंपत्तियों का उचित मूल्य	<u>(30,000)</u>
साख	<u>4,000</u>

2. प्रतिधारित आय में क्रेडिट परिसंपत्ति, संयंत्र एवं उपकरण के पुनर्मूल्यांकन से संबंधित अन्य व्यापक आय में 50 करोड़ रुपये के अप्राप्त लाभ के प्रत्यावर्तन को दर्शाता है। भारतीय लेखा मानक 16 के अनुसार, इस राशि को लाभ या हानि में पुनर्वर्गीकृत नहीं किया जाता है।

3. 31 मार्च, 20X2 को सहयोगी कंपनी में निवेश की वहन राशि निम्नानुसार होगी: (₹ करोड़ में)

सहयोगी कंपनी में निवेश	8,000
लाभ या हानि का हिस्सा	700
ओसीआई में विनिमय अंतर का हिस्सा	100
ओसीआई में पीपीई के पुनर्मूल्यांकन रिजर्व का हिस्सा	<u>50</u>
	<u>8,850</u>

4. एक्सचेंज लिमिटेड में पहले से धारित इक्विटी ब्याज पर लाभ की गणना निम्नानुसार की जाती है: (₹ करोड़ में)

1 अप्रैल, 20X2 को एक्सचेंज लिमिटेड में 30% ब्याज का उचित मूल्य	9,000
1 अप्रैल, 20X2 को एक्सचेंज लिमिटेड में ब्याज की वहन राशि (डब्ल्यू.एन.3)	<u>(8,850)</u>
	150
ओसीआई में पहले से मान्यता प्राप्त अवास्तविक लाभ	<u>100</u>
लाभ या हानि में चिन्हित एक्सचेंज लिमिटेड में पहले से धारित ब्याज पर लाभ	<u>250</u>

15. एस लिमिटेड के अधिग्रहण और साख पर उत्पन्न होने वाले आस्थगित कर की गणना

	₹000	₹000
एस लिमिटेड की चिन्हित योग्य परिसंपत्तियों और देनदारियों का उचित मूल्य (आस्थगित कर को छोड़कर)		1,070
घटाएँ: कर आधार (टैक्स बेस)		(920)
अधिग्रहण पर उत्पन्न होने वाला अस्थायी अंतर		150
एस लिमिटेड के अधिग्रहण पर उत्पन्न होने वाली शुद्ध आस्थगित कर देयता (₹ 1,50,000 @ 40%) - बही आस्थगित कर की जगह क्रय प्रतिफल		60
		1,500
एस लिमिटेड की चिन्हित योग्य परिसंपत्तियों और देनदारियों का उचित मूल्य (आस्थगित कर को छोड़कर)	1,070	
आस्थगित कर	(60)	1,010
अधिग्रहण पर उत्पन्न होने वाली साख		490

गुडविल (साख) का कर आधार शून्य है, इसलिए गुडविल पर ₹4,90,000 का कर योग्य अस्थायी अंतर उत्पन्न होता है। साख पर कोई आस्थगित कर मान्यता नहीं दी जाती है। अधिग्रहणों पर उत्पन्न होने वाले अन्य अस्थायी अंतरों पर आस्थगित कर 40% (30% नहीं) पर प्रदान किया जाता है, क्योंकि अस्थायी अंतरों को उलट दिए जाने पर एस लिमिटेड के कर क्षेत्राधिकार में कर देय या वसूली योग्य होंगे।

16. भारतीय लेखा मानक 21 के पैराग्राफ 48 और 48ख के अनुसार, किसी विदेशी परिचालन के निपटान पर, उस विदेशी परिचालन से संबंधित विनिमय अंतर की संचयी राशि, जिसे अन्य व्यापक आय में मान्यता दी गई है और इक्विटी के अलग घटक में संचित किया गया है, को इक्विटी से लाभ या हानि (पुनर्वर्गीकरण समायोजन के रूप में) में पुनर्वर्गीकृत किया जाएगा, जब निपटान पर लाभ या हानि को मान्यता (भारतीय लेखा मानक 1, वित्तीय विवरणों की प्रस्तुति देखें) दी जाती है।

इसके अलावा, मानक में कहा गया है कि विदेशी परिचालन वाली किसी सहायक कंपनी के निपटान पर, उस विदेशी परिचालन से संबंधित विनिमय अंतर की संचयी राशि जिसे गैर-नियंत्रक हितों के लिए जिम्मेदार ठहराया गया है, उसे मान्यता से हटा दिया जाएगा, लेकिन उसे लाभ या हानि में पुनर्वर्गीकृत नहीं किया जाएगा।

जहां सहायक कंपनी आंशिक रूप से स्वामित्व में है (यानी, जहां गैर-नियंत्रक हित मौजूद है) और मूल कंपनी ने अपना पूरा हित बेच दिया है, गैर-नियंत्रक हित को आवंटित सीटीए की राशि को मान्यता से हटा दिया जाता है, लेकिन इसे लाभ या हानि में स्थानांतरित नहीं किया जाता है। गैर-नियंत्रक हित (जिसमें गैर-नियंत्रक हित का सीटीए का हिस्सा शामिल है) की मान्यता को हटाना सहायक कंपनी के निपटान पर लाभ या हानि को दर्शाने के लिए जर्नल प्रविष्टि का हिस्सा बनेगा।

पी लिमिटेड के समेकित वित्तीय विवरणों में, एस लिमिटेड में इसके निवेश के संबंध में निम्नलिखित राशियों (₹ हजार में) को मान्यता दी गई है:

- ₹4,000 की शुद्ध परिसंपत्ति और ₹1,200 के संबद्ध गैर-नियंत्रक हित;
- ₹900 के विदेशी मुद्रा लाभ को अन्य व्यापक आय में मान्यता दी गई, जिसमें से ₹270 गैर-नियंत्रक हितों के कारण थे और इसलिए इसे ₹1,200 गैर-नियंत्रक हितों में शामिल किया गया है;
- ₹630 के विदेशी मुद्रा लाभ को एस लिमिटेड में पी लिमिटेड के 70% शेयर से संबंधित इक्विटी के एक अलग घटक में संचित किया गया है।

पी लिमिटेड ने एस लिमिटेड में अपनी 70% हिस्सेदारी ₹3,200 में बेची और निम्नलिखित राशियों को दर्ज किया:

नकद/बैंक खाता	नामे	3,200	
एनसीआई	नामे	1,200	
विदेशी मुद्रा अनुवाद रिजर्व (ओसीआई)	नामे	630	
शुद्ध परिसंपत्तियों में			4,000
निपटान पर लाभ में {630+(3,200-2,800)}			1,030

यह देखा जा सकता है कि ओसीआई में पहले से मान्यता प्राप्त विदेशी मुद्रा लाभ के ₹630, यानी पी लिमिटेड को दी गई राशि को लाभ या हानि (निपटान पर लाभ) में पुनर्वर्गीकृत किया गया है और ओसीआई से समायोजित किया गया है। हालांकि, गैर-नियंत्रक हितों के कारण ऐसे लाभ के ₹270 को लाभ या हानि में

पुनर्वर्गीकृत नहीं किया गया है और इसे एनसीआई शेष के एक भाग के रूप में मान्यता नहीं दी गई है।

17. प्रबंधन को उत्पादित इकाइयों को क्रमशः ₹ 0.2 प्रति घंटा =  $\frac{2,600}{6,500}$  और ₹ 0.4 प्रति घंटा =  $\frac{1,500}{7,500}$  की दर से निश्चित उपरिव्यय लागत और परिवर्तनीय उपरिव्यय लागत आवंटित करनी चाहिए।

निश्चित उत्पादन उपरिव्यय अवशोषण दर:

$$\begin{aligned} &= \text{सामान्य क्षमता के अंतर्गत निश्चित उत्पादन उपरिव्यय} / \text{श्रम घंटे} \\ &= ₹ 1,500 / 7,500 \\ &= ₹ 0.2 \text{ प्रति घंटा} \end{aligned}$$

इसलिए, वर्ष के दौरान उत्पादित 6,500 इकाइयों (प्रति घंटा एक इकाई) के लिए आवंटित निश्चित उत्पादन उपरिव्यय = 6,500 इकाइयाँ x ₹ 0.2 = ₹ 1,300। शेष ₹ 200 उपरिव्यय जो आवंटित नहीं किया गया है, उसे लाभ b हानि में व्यय के रूप में मान्यता दी जाती है।

निश्चित उपरिव्यय आवंटित करने के लिए सामान्य क्षमता का उपयोग करके, कम उत्पादन के परिणामस्वरूप इन्वेंट्री को आवंटित निश्चित उपरिव्यय की राशि में वृद्धि नहीं की जाती है।

परिवर्तनीय उत्पादन उपरिव्यय अवशोषण दर:

$$\begin{aligned} &= \text{परिवर्तनीय उत्पादन उपरिव्यय} / \text{वर्तमान अवधि के लिए वास्तविक घंटे} \\ &= ₹ 2,600 / 6,500 \text{ यूनिट} \\ &= ₹ 0.4 \text{ प्रति घंटा} \end{aligned}$$

उपरोक्त दर के परिणामस्वरूप वर्ष के दौरान उत्पादित इकाइयों में सभी परिवर्तनीय उपरिव्ययों का आवंटन हो जाता है।

चूंकि प्रत्येक इकाई के उत्पादन में एक घंटा लगा है (6,500 घंटे / 6,500 इकाइयां उत्पादित), कुल स्थिर और परिवर्तनीय उत्पादन उपरिव्यय को इन्वेंट्री की लागत के हिस्से के रूप में मान्यता दी गई है:

$$\begin{aligned} &= \text{अंतिम इन्वेंट्री की इकाइयों की संख्या} \times \text{प्रत्येक इकाई के उत्पादन हेतु घंटों की संख्या} \times \\ &(\text{निश्चित उत्पादन उपरिव्यय अवशोषण दर} + \text{परिवर्तनीय उत्पादन उपरिव्यय अवशोषण दर}) \\ &= 2,300 \times 1 \times (\text{₹ } 0.2 + \text{₹ } 0.4) = ₹ 1,380 \end{aligned}$$

शेष ₹2,720  $\{ (\text{₹}1,500 + \text{₹}2,600) - \text{₹}1,380 \}$  को लाभ व हानि विवरण में व्यय के रूप में निम्नानुसार मान्यता दी गई है:

	₹
बेची गई वस्तुओं की लागत में अवशोषित (एफआईएफओ आधार पर) (6,500- 2,300) = 4,200 x ₹ 0.6	2,520
अनवशोषित स्थिर उपरिव्यय, जिसे विक्रय की गई वस्तुओं की लागत में भी शामिल किया जाता है	<u>200</u>
कुल	<u>2,720</u>

18. विदेशी मुद्रा ऋण, प्राप्य तिथि पर प्रचलित दर पर 1,91,400 रुपये (यूएस \$ 2,200 x 87 रुपये) में परिवर्तित होने के बाद, तुलन-पत्र तिथि पर 1,87,000 रुपये (यूएस \$ 2,200 x 85 रुपये) में परिवर्तित हो जाता है। 4,400 रुपये का विनिमय लाभ लाभ व हानि के विवरण में दर्शाया गया है। नकदी 1,00,000 रुपये (शेयर जारी करने से प्राप्त) और 1,91,400 रुपये (मुद्रा ऋण को तुरंत 1,00,000 रुपये में परिवर्तित करने पर प्राप्त) से बनी है।

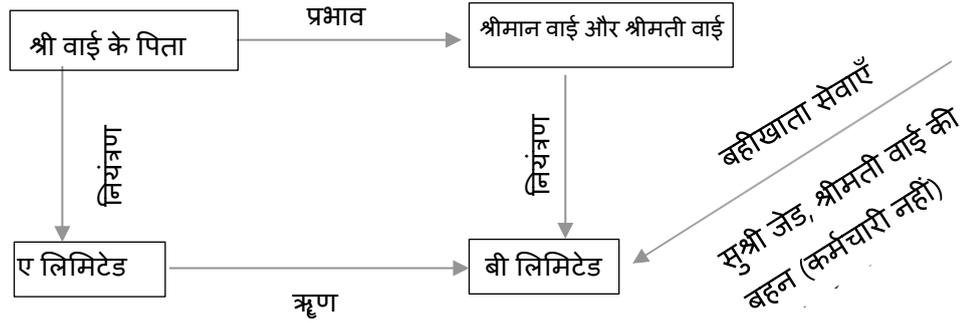
**नकद प्रवाह का विवरण**

	₹
<b>संचालनीय गतिविधियों से नकद प्रवाह</b>	
लाभ	4,400
घटाएँ: विदेशी मुद्रा लाभ	<u>(4,400)</u>
परिचालन गतिविधियों से शुद्ध नकदी प्रवाह	<u>0</u>
वित्तीय गतिविधियों से नकदी प्रवाह	
विदेशी मुद्रा ऋण की प्राप्तियां	<u>1,91,400</u>
वित्तीय गतिविधियों से शुद्ध नकदी प्रवाह	<u>1,91,400</u>
नकदी एवं नकदी समतुल्य में शुद्ध वृद्धि ए+बी	1,91,400
रिपोर्टिंग अवधि की शुरुआत में नकदी एवं नकदी समतुल्य	1,00,000
रिपोर्टिंग अवधि के अंत में नकदी एवं नकदी समतुल्य*	<u>2,91,400</u>

\* वर्ष के अंत में नकदी शेष को दर्शाता है।

₹4,400 के विनिमय लाभ का कोई नकदी प्रवाह प्रभाव नहीं है और यह वित्तपोषण गतिविधियों से संबंधित है। इसलिए, इसे लाभ से हटा दिया जाना चाहिए। यदि 31 मार्च, 20X8 को ऋण बकाया रहता है, तो इसी तरह का समायोजन आवश्यक होगा।

19.



- (i) श्री वाई के पिता और श्रीमती वाई की बहन बी लिमिटेड के संबंधित पक्ष हैं, यदि वे श्री वाई या श्रीमती वाई के 'करीबी परिवार' हैं। वे करीबी परिवार हैं यदि उनसे बी लिमिटेड के साथ अपने कार्य में श्री वाई या श्रीमती वाई को प्रभावित करने या प्रभावित होने की उम्मीद की जा सकती है। श्री वाई के पिता और श्री वाई और श्रीमती वाई 'करीबी परिवार' हैं, इसलिए श्री वाई के पिता बी लिमिटेड के आंशिक रूप से संबंधित हैं, जिसे श्री वाई और श्रीमती वाई द्वारा नियंत्रित किया जाता है।

श्री वाई के पिता के पास ए लिमिटेड में नियंत्रित हिस्सेदारी है। ए लिमिटेड बी लिमिटेड का एक संबंधित पक्ष है।

- (ii) दोनों संस्थाओं को अपने वित्तीय विवरणों में ऋण में ₹2,00,000 की वृद्धि के बारे में आवश्यक विवरण का प्रकटीकरण करना चाहिए। ए लिमिटेड को बैलेंस शीट की तारीख पर बी लिमिटेड से देय राशि का भी प्रकटीकरण करना चाहिए, साथ ही किसी भी प्रावधान और लिखी गई राशि के साथ। बी लिमिटेड को बैलेंस शीट की तारीख पर ए लिमिटेड को देय राशि का प्रकटीकरण करना चाहिए, साथ ही उस रियायती ब्याज दर का भी प्रकटीकरण करना चाहिए जिस पर बी लिमिटेड को ऋण दिया गया था।
- (iii) बी लिमिटेड को श्रीमती वाई की बहन के साथ लेन-देन का प्रकटीकरण करना होगा, यदि मामले के अन्य तथ्यों के आधार पर बहन को श्री वाई या श्रीमती वाई में से किसी एक के बी लिमिटेड के साथ अपने लेन-देन में प्रभावित होने या प्रभावित होने की उम्मीद हो सकती है।

यदि ऐसा प्रभाव है, तो लेनदेन और बकाया शेष राशि के बारे में भारतीय लेखा मानक 24 के पैरा 18 के अनुसार प्रकटीकरण किया जाना चाहिए।

20. पहले और दूसरे वर्ष के अंत में, कंपनी इक्विटी-सेटल अवार्ड हेतु कोई चार्ज दर्ज नहीं करेगी; ऐसा इसलिए क्योंकि निहित शर्तों के पूरा होने की उम्मीद नहीं (यानी, आईपीओ आना संभावित नहीं है) है।

इसलिए, देयता को मान्यता दी जाती है, क्योंकि वर्ष 3 तक नकद निपटान संभावित है। (इंड एस 102 के पैरा 42 को देखें)

	नामे (₹)	जमा (₹)
<b>वर्ष समाप्ति 31 मार्च, 20X2</b>		
कर्मचारी लाभ व्यय (₹ 50 / 5 वर्ष) शेयर-आधारित भुगतान देयता में (निहित अवधि में मान्यता प्राप्त नकद निपटान अवार्ड)	नामे 10	10
<b>वर्ष समाप्ति 31 मार्च, 20X3</b>		
कर्मचारी लाभ व्यय {(₹ 500 x 2/5)- ₹10} शेयर-आधारित भुगतान देयता में (निहित अवधि में मान्यता प्राप्त नकद-निपटान अवार्ड)	नामे 190	190

तीसरे वर्ष के अंत में, आईपीओ आना संभावित हो जाता है; इसलिए कंपनी इक्विटी-सेटल अवार्ड हेतु एक चार्ज दर्ज करेगी।

एसबीपी देयता का भी व्युत्क्रम होना वर्ष समाप्ति 31 मार्च, 20X4 चाहिए, क्योंकि यह अवार्ड अब संभावित नहीं माना जाता है।

	नामे	जमा
<b>वर्ष समाप्ति 31 मार्च, 20X4</b>		
शेयर-आधारित भुगतान देयता शेयर-आधारित भुगतान रिजर्व में (नकद-निपटान शेयर-आधारित भुगतान का व्युत्क्रम, क्योंकि आईपीओ संभावित माना जाता है)	नामे 200	200

कर्मचारी लाभ व्यय $\{(\text{₹ } 1,000 \times \frac{3}{4}) - \text{₹ } 200\}$ शेयर-आधारित भुगतान रिज़र्व में (इक्विटी-सेटलड अवार्ड अनुदान तिथि पर मापा गया उचित मूल्य ₹ 550 है, क्योंकि आईपीओ अब संभावित माना जाता है)	नामे	550	550
<b>वर्ष समाप्ति 31 मार्च, 20X5</b>			
कर्मचारी लाभ व्यय शेयर-आधारित भुगतान रिज़र्व में (निहित अवधि में मान्यता प्राप्त इक्विटी सेटलमेंट अवार्ड)	नामे	250	250
शेयर-आधारित भुगतान रिज़र्व इक्विटी शेयर पूंजी में (मुफ्त शेयर जारी करके शेयर-आधारित भुगतान अवार्ड का निपटान)	नामे	1,000	1,000

इक्विटी-सेटल अवार्ड ₹1,000 के उचित मूल्य पर मापा जाता है। इस अवार्ड हेतु सभी निहित शर्तें वर्ष 4 में पूरी हो गई हैं; इसलिए अवार्ड निहित हो गया है, और ₹250 (₹1,000 - ₹750) का शेष चार्ज लाभ और हानि के विवरण में मान्यता प्राप्त है।



## प्रश्न-पत्र – 2

### वृहत वित्तीय प्रबंधन



#### प्रश्न

#### जोखिम प्रबंधन

1. श्री बी सोच समझकर जोखिम लेने वाले व्यक्ति हैं। वह सप्ताह में 4 दिनों तक एक ही स्टॉक में अपनी पोजीशन लेते हैं। वह विकेंड के प्रभाव से बचने के लिए शुक्रवार को कोई पोजीशन नहीं लेते हैं और सप्ताह में केवल चार दिन यानी सोमवार से गुरुवार तक ही पोजीशन लेते हैं। वह सोमवार की सुबह पैसा ट्रांसफर करते हैं और शुक्रवार की सुबह शेष राशि निकाल लेते हैं। वह सिंगल स्टॉक (पोर्टफोलियो नहीं) में अधिकतम एक्सपोजर लेना चाहते हैं, जहां जोखिम मूल्य (वीएआर) उनके बैंक खाते में पड़ी शेष राशि से अधिक नहीं होनी चाहिए। स्थायी निर्देशों के अनुसार, उसके प्रबंधक द्वारा प्रत्येक सोमवार की सुबह बैंक खाते में पड़ी खाली शेष राशि पर पोजीशन ली जाती है।

सोमवार की सुबह (कैपिटल मार्केट खुलने से पहले) उन्होंने अपने बैंक खाते में ₹11 करोड़ की राशि ट्रांसफर की है। इस सोमवार को एक सावधि जमा भी परिपक्व हुई। सोमवार की सुबह बैंक द्वारा उसके खाते में ₹63,42,560 की परिपक्वता राशि भी जमा कर दी गई। हालाँकि, श्री बी को शाम को इसकी सूचना मिली। बैंक में हर समय ₹1,000 का न्यूनतम बैलेंस होना चाहिए।

स्टॉक एक्स और वाई के संबंध में अन्य जानकारी, जो इस सप्ताह हेतु विचाराधीन है, निम्नानुसार है:

एक्स		वाई	
प्रतिफल	संभाव्यता	प्रतिफल	संभाव्यता
6	0.10	6	0.10
7	0.25	7	0.25
8	0.30	8	0.30

9	0.25	10	0.20
10	0.10	12	0.10

उपरोक्त जानकारी के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

- I. उपलब्ध राशि जो श्री बी द्वारा सोमवार सुबह 4 दिनों के लिए संभावित जोखिम के लिए उपयोग की जा सकती है..... होगी।
  - (क) ₹ 11,00,00,000
  - (ख) ₹ 11,63,41,560
  - (ग) ₹ 11,00,01,000
  - (घ) ₹ 11,63,42,560
- II. श्री बी के जोखिम मूल्य (वीएआर) के लिए 99% विश्वास स्तर पर जेड-स्कोर है .....
  - (क) 1.64
  - (ख) 1.96
  - (ग) 2.33
  - (घ) 2.58
- III. स्टॉक एक्स का अपेक्षित रिटर्न ..... है।
  - (क) 7%
  - (ख) 8%
  - (ग) 9%
  - (घ) 10%
- IV. स्टॉक वाई का अपेक्षित रिटर्न ..... है।
  - (क) 7%
  - (ख) 8%
  - (ग) 9%
  - (घ) 10%

- V. श्री बी को अपने जोखिम मूल्य (वीएआर) को स्वीकार्य सीमा के भीतर बनाए रखते हुए अधिकतम लाभ प्राप्त करने हेतु किस स्टॉक में निवेश करना चाहिए?
- (क) स्टॉक एक्स  
(ख) स्टॉक वाई  
(ग) दोनों स्टॉक समान रूप से अच्छे हैं  
(घ) कोई भी स्टॉक उपयुक्त नहीं है

#### ब्याज दर जोखिम प्रबंधन

2. पी लिमिटेड अब से आने वाले 6 महीनों में 3 महीने की अवधि के लिए 60 करोड़ रुपये की राशि ऋण लेने की योजना बना रही है। वर्तमान ब्याज दर 9% प्रति वर्ष है, लेकिन 6 महीने के समय में इसके बढ़ने की संभावना है। कंपनी ब्याज दर में संभावित वृद्धि के खिलाफ खुद को सुरक्षित रखना चाहती है।

मुख्य वित्तीय अधिकारी के रूप में आपसे ब्याज दर जोखिम से बचाव के लिए पारंपरिक और आधुनिक दोनों तरीकों का सुझाव देने के लिए कहा गया है।

मान लीजिए कि पी लिमिटेड के बैंकर ने निम्नलिखित फॉरवर्ड रेट एग्रीमेंट (एफआरए) दरें उद्धृत की हैं:

3 x 6	9.10%	9.15%
6 x 9	9.20%	9.30%
9 x 12	9.35%	9.45%

#### उपरोक्त जानकारी के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

- I. मान लीजिए कि यदि पी लिमिटेड ब्याज दर जोखिम से बचाव के लिए फॉरवर्ड रेट एग्रीमेंट पद्धति को अपनाने हेतु सहमत होता है, तो उसी समझौते के लिए ब्याज दर ..... लागू होगी।
- (क) 9.10% प्रति वर्ष  
(ख) 9.30% प्रति वर्ष  
(ग) 9.35% प्रति वर्ष  
(घ) 9.45% प्रति वर्ष
- II. मान लीजिए कि यदि 6 महीने के बाद ब्याज की वास्तविक दर 9.60% होती है, तो निपटान राशि लगभग ..... होगी।
- (क) पी लिमिटेड द्वारा अपने बैंकर को ₹733,855 का भुगतान किया जाएगा।

- (ख) पी लिमिटेड द्वारा अपने बैंकर को ₹439,453 का भुगतान किया जाएगा।
- (ग) बैंकर द्वारा पी लिमिटेड को ₹439,453 का भुगतान किया जाएगा।
- (घ) बैंकर द्वारा पी लिमिटेड को ₹733,855 का भुगतान किया जाएगा।
- III. मान लीजिए यदि 6 महीने के बाद वास्तविक ब्याज दर 8.80% होती है, तो निपटान राशि लगभग ..... होगी।
- (क) पी लिमिटेड द्वारा अपने बैंकर को ₹ 733,855 का भुगतान किया जाएगा।
- (ख) पी लिमिटेड द्वारा अपने बैंकर को ₹ 439,453 का भुगतान किया जाएगा।
- (ग) बैंकर द्वारा पी लिमिटेड को ₹ 439,453 का भुगतान किया जाएगा।
- (घ) बैंकर द्वारा पी लिमिटेड को ₹ 733,855 का भुगतान किया जाएगा।
- IV. निम्नलिखित में से कौन सी तकनीक ब्याज दर जोखिम से बचाव की आधुनिक तकनीक नहीं है .....
- (क) ब्याज दर वायदा
- (ख) ब्याज दर विकल्प
- (ग) ब्याज दर स्वैप
- (घ) अग्रिम दर समझौता (फॉरवर्ड रेट एग्रीमेंट)

#### डेरिवेटिव विश्लेषण एवं मूल्यांकन

3. श्री एक्स, एबीसी एसेट मैनेजमेंट कंपनी में एक वरिष्ठ पोर्टफोलियो प्रबंधक हैं। उन्हें 90 दिनों में शेयरों का एक पोर्टफोलियो खरीदना चाहते हैं। हालांकि, वे आने वाले दिनों में शेयरों में अपेक्षित मूल्य वृद्धि को लेकर चिंतित हैं और इस संभावित मूल्य वृद्धि से बचने के लिए उन्होंने इंडेक्स पर 90-दिन के फॉरवर्ड कॉन्ट्रैक्ट पर पोजीशन लेने का फैसला किया है। इंडेक्स वर्तमान में 2290 पर कारोबार कर रहा है। यह मानते हुए कि उसी इंडेक्स पर सतत चक्रवृद्धि लाभांश यील्ड 1.75% है और जोखिम-मुक्त ब्याज दर 4.16% है, आपको यह निर्धारित करना है:
- (क) इस अनुबंध पर उचित फॉरवर्ड मूल्य।
- (ख) श्री एक्स को इंडेक्स पर फॉरवर्ड अनुबंध में क्या पोजीशन लेनी चाहिए।
- (ग) यदि कॉन्ट्रैक्ट की खरीद के 28 दिनों के बाद इंडेक्ट वैल्यू 2450 पर है, तो ली गई पोजीशन पर लाभ/हानि।
- (घ) यदि 90 दिनों की समाप्ति पर इंडेक्ट वैल्यू 2470 है, तो ली गई पोजीशन पर लाभ/हानि।

**टिप्पणी :** एक वर्ष में 365 दिन मानें और  $e^{0.005942}$  का वैल्यू = 1.005960,  $e^{0.001849} = 1.001851$

4. एबी लिमिटेड के इक्विटी शेयर वर्तमान में ₹500 प्रति शेयर की कीमत पर बिक रहे हैं। एक निवेशक एबी लिमिटेड के शेयर खरीदना चाहता है। निवेशक का मानना है कि 70% संभावना है कि कीमत अब से तीन महीने बाद ₹650 तक बढ़ जाएगी या 30% संभावना है कि यह ₹450 तक गिर जाएगी। फर्म के शेयरों पर एक कॉल ऑप्शन है जिसका प्रयोग केवल तीन महीने के अंत में ₹550 के एक्सरसाइज़ वैल्यू पर किया जा सकता है।

निम्नलिखित की गणना करें:

- यदि निवेशक एक अच्छा हेज चाहता है, तो उसे शेयर और ऑप्शन का कौन सा संयोजन चुनना चाहिए?
- बताएं कि निवेशक शेयर की कीमत की परवाह किए बिना समान पोजीशन कैसे बनाए रख पाएगा।
- यदि तीन महीने की अवधि के लिए जोखिम-मुक्त रिटर्न की दर 20% प्रति वर्ष है, तो अवधि की शुरुआत में ऑप्शन का मूल्य क्या है?
- ऑप्शन बायर्स के लिए रिटर्न की अपेक्षित दर क्या है?

#### व्यवसाय मूल्यांकन

5. एबीसी, एक बड़ा व्यवसायिक घराना अपनी पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनी केएलएम को बेचना सोच रहा है। एक अन्य बड़ी व्यावसायिक कंपनी एक्सवाईजेड ने केएलएम के लिए बोली लगाने में अपनी रुचि व्यक्त की है। एक्सवाईजेड को उम्मीद है कि अधिग्रहण के बाद केएलएम की वार्षिक आय में 10% की वृद्धि होगी।

संभावित अधिग्रहणों से होने वाले किसी भी संभावित लाभ को नज़रअंदाज़ करते हुए, निम्नलिखित जानकारी उपलब्ध है:

- अभी समाप्त हुए वित्तीय वर्ष के लिए केएलएम हेतु कर पश्चात लाभ ₹10 करोड़ होने का अनुमान है।
- केएलएम के कर-पश्चात लाभ में हर साल 7% की वृद्धि की प्रवृत्ति है और इसके जारी रहने की उम्मीद है।
- अनुमानित कर-पश्चात बाजार रिटर्न 10% है और जोखिम-मुक्त दर 4% है। इन दरों के जारी रहने की उम्मीद है।
- कॉर्पोरेट कर की दर 30% है।

	एक्सवाइजेड	एबीसी	समान बिजनेस लाइन में केएलएम के लिए प्रॉक्सी कंपनी
शेयरों की संख्या	100 लाख	80 लाख	--
वर्तमान शेयर मूल्य	₹ 287	₹ 375	--
लाभांश भुगतान	40%	50%	50%
ऋण: बाजार मूल्य पर इक्विटी	1:2	1:3	1:4
पी/ई अनुपात	10	13	12
इक्विटी बीटा	1	1.1	1.1

मान लें कि केएलएम का गियरिंग लेवल एबीसी के समान है और ऋण बीटा शून्य है।

आपको ज्ञात करना है:

- (क) प्रॉक्सी कंपनी हेतु उपलब्ध डेटा के आधार पर केएलएम के लिए इक्विटी की उचित लागत की गणना।
- (ख) अधिग्रहण से एक्सवाइजेड को किसी भी संभावित लाभ से पहले और बाद में केएलएम के लिए मूल्यों की श्रृंखला।
- (ग) एबीसी के भाग के रूप में केएलएम के बाजार मूल्य की गणना।

**टिप्पणी:** गणना को 2 दशमलव तक पूर्णांकित करें और आंकड़ा रु. करोड़ में परिकलित करें।

#### विदेशी मुद्रा जोखिम एवं जोखिम प्रबंधन

6. मेसर्स ओमेगा इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड सिंगापुर से सभी घटकों का आयात करके जर्मनी को एयर कंडीशनर निर्यात करता है। कंपनी 500 यूरो प्रति यूनिट की कीमत पर 2,400 यूनिट निर्यात कर रही है। आयातित घटकों की लागत S\$ 800 प्रति यूनिट है। प्रति यूनिट निश्चित लागत और अन्य परिवर्तनीय लागत क्रमशः ₹1,000 और ₹1,500 है। विदेशी मुद्राओं में नकदी प्रवाह छह महीने में देय है। वर्तमान विनिमय दरें इस प्रकार हैं:

₹/यूरो	51.50/55
₹/एस\$	27.20/25

छह महीने बाद विनिमय दरें इस प्रकार होंगी:

₹/यूरो	52.00/05
₹/एस\$	27.70/75

- (क) आपको लेनदेन जोखिम के कारण हानि/लाभ की गणना करनी है।  
 (ख) निम्नलिखित अतिरिक्त जानकारी के आधार पर लेनदेन और परिचालन जोखिम के कारण हानि/लाभ की गणना करें यदि एयर कंडीशनर का अनुबंधित मूल्य 25,000 रुपये है:

- (i) वर्तमान विनिमय दर इस प्रकार है:

₹/यूरो	51.75/80
₹/एस\$	27.10/15

- (ii) मांग की कीमत लोच 1.5 होने का अनुमान है

- (iii) भुगतान और प्राप्तियों का निपटान छह महीने के अंत में किया जाना है।

7. जेड लिमिटेड 2 मिलियन अमेरिकी डॉलर मूल्य का माल आयात करता है, और 90 दिन में भुगतान करता है। विदेशी आपूर्तिकर्ता ने 60 दिनों की ब्याज मुक्त ऋण अवधि और 30 दिनों के अतिरिक्त ऋण हेतु 8% प्रति वर्ष की दर से ब्याज की पेशकश की है।

जेड लिमिटेड के बैंकर 10% प्रति वर्ष की दर से 30 दिनों का ऋण प्रदान करते हैं और विदेशी मुद्रा के संबंध में उनका उद्धरण इस प्रकार है:

	₹
स्पॉट 1 यूएसडी	82.50
1 यूएसडी में 60 दिन आगे	83.40
1 यूएसडी में 90 दिन आगे	83.90

आपको निम्नलिखित विकल्पों का मूल्यांकन करना होगा:

- (i) आपूर्तिकर्ता को 60 दिनों में भुगतान, या  
 (ii) आपूर्तिकर्ता के 90 दिन के क्रेडिट ऑफर का लाभ।

टिप्पणी: -

1. एक वर्ष में 360 दिन मानें।

2. लागू दरों को छोड़कर पूर्ण संख्या तक पूर्णांकित गणना।

**वृहत पूंजी बजटन निर्णय**

8. एक फर्म के पास निवेश का एक ऑफर है, जिसके लिए ₹ 12 करोड़ के परिव्यय की आवश्यकता है। निवेश ऑफर का आर्थिक जीवन दो साल रहने की उम्मीद है, जिसमें कोई निस्तारण मूल्य नहीं है। पहले वर्ष में, 0.7 संभावना है कि कर पश्चात् नकदी प्रवाह ₹ 7.50 करोड़ होगा और 0.3 संभावना है कि कर पश्चात् नकदी प्रवाह ₹ 9 करोड़ होगा। वर्ष / नकदी प्रवाह के अनुरूप दूसरे वर्ष हेतु नकदी प्रवाह (कर पश्चात्) के लिए तय की गई संभावना इस प्रकार है:

(₹ करोड़ में)

नकदी प्रवाह वर्ष 1	₹ 7.50	₹ 9.00		
नकदी प्रवाह वर्ष 2	संभाव्यता	संभाव्यता		
	₹ 3.60	0.10	₹ 6.00	0.50
	₹ 4.80	0.50	₹ 7.50	0.30
	₹ 6.60	0.40	₹ 9.00	0.20

इस प्रकार के निवेश के लिए फर्म 15% छूट दर का उपयोग करती है।

अभीष्ट:

- (i) प्रस्तावित निवेश परियोजना हेतु निर्णय वृक्ष बनाएं।
- (ii) अपेक्षित शुद्ध वर्तमान मूल्य (एनपीवी) की गणना करें।
- (iii) सबसे अच्छा परिणाम क्या होगा और उसके घटित होने की संभावना कितनी है?
- (iv) यदि सबसे खराब परिणाम प्राप्त होता है तो परियोजना से कितना शुद्ध वर्तमान मूल्य प्राप्त होगा और इस एनपीवी के घटित होने की संभावना क्या है?
- (v) सलाह दें कि परियोजना को स्वीकार किया जाए या नहीं।

टिप्पणी:

1. 15% छूट कारक 1 वर्ष 0.870; 2 वर्ष 0.756
2. सभी गणनाएँ ₹ करोड़ में करें और उन्हें 2 दशमलव अंकों तक पूर्णांकित करें।

पोर्टफोलियो प्रबंधन

9. श्री हरि कुमार ने बाजार में उपलब्ध सभी स्टॉक को निम्नलिखित प्रकारों में वर्गीकृत किया है:

- (i) स्मॉल कैप ग्रोथ स्टॉक
- (ii) स्मॉल कैप वैल्यू स्टॉक
- (iii) लार्ज कैप ग्रोथ स्टॉक
- (iv) लार्ज कैप वैल्यू स्टॉक

श्री हरि कुमार ने मार्केट इंडेक्स में उपरोक्त श्रेणियों के स्टॉक के वेटेज का भी अनुमान लगाया है। इसके अलावा, इन श्रेणियों के स्टॉक पर तीन महत्वपूर्ण कारकों के प्रति रिटर्न की संवेदनशीलता का अनुमान इस प्रकार लगाया गया है:

स्टॉक की श्रेणी	मार्केट इंडेक्स में भार	फैक्टर I (बीटा)	फैक्टर II (बुक प्राइस)	फैक्टर III (मुद्रा स्फीति)
स्मॉल कैप ग्रोथ	15%	0.65	1.95	1.65
स्मॉल कैप वैल्यू	20%	1.25	2.23	2.15
लार्ज कैप ग्रोथ	15%	2.25	3.20	8.65
लार्ज कैप वैल्यू	50%	1.325	2.25	9.50
रिस्क प्रीमियम		8.85%	-4.25%	0.80%

ट्रेजरी बांड पर रिटर्न की दर 5.80% है

अभीष्ट:

- (क) आर्बिट्रेज मूल्य निर्धारण सिद्धांत का उपयोग करके, मार्केट इंडेक्स पर अपेक्षित रिटर्न निर्धारित करें।
- (ख) पूंजी परिसंपत्ति मूल्य निर्धारण मॉडल (सीएपीएम) का उपयोग करके, मार्केट इंडेक्स पर अपेक्षित रिटर्न का निर्धारण करें।
- (ग) श्री हरि कुमार केवल 'स्मॉल कैप ग्रोथ' और 'लार्ज कैप वैल्यू' स्टॉक वाला पोर्टफोलियो बनाना चाहते हैं। यदि वांछित पोर्टफोलियो के लिए लक्ष्य बीटा 1 है, तो सुझाव दें कि इसकी संरचना क्या होनी चाहिए।

**टिप्पणी:** गणना को 3 दशमलव अंक तक पूर्णांकित करें।

सुरक्षा मूल्यांकन

10. श्री जेड को दो साल बाद ₹18,00,000 की आवश्यकता होगी, जिसके लिए वह अभी एकमुश्त आवश्यक निवेश करना चाहते हैं। उनके पास दो प्रकार के बॉन्ड का विकल्प है। उनका विवरण नीचे दिया गया है:

	बॉन्ड एकस	बॉन्ड वाई
अंकित मूल्य	₹ 1,000	₹ 1,000
कूपन	8% वार्षिक देय	9% वार्षिक देय
परिपक्वता हेतु वर्ष	1	4
वर्तमान मूल्य	₹ 964.44	₹ 909.42
वर्तमान यील्ड	12%	12%

श्री जेड को सलाह दें कि क्या उन्हें अपना सारा पैसा एक ही प्रकार के बॉन्ड में निवेश करना चाहिए या उन्हें दोनों बॉन्ड खरीदने चाहिए और यदि हाँ, तो कितनी मात्रा में? मान लें कि कोई कॉल जोखिम या डिफॉल्ट जोखिम नहीं होगा।

टिप्पणी: -

- 3 दशमलव बिंदुओं तक पीवीएफ का उपयोग करें।
  - जबकि अधिग्रहित किए जाने वाले बॉन्ड की संख्या को पूर्णांकित किया जाना है, शेष गणना को 3 दशमलव बिंदुओं तक पूर्णांकित किया जाएगा।
11. 31.3.2023 तक सन लिमिटेड की पूंजी संरचना निम्नानुसार थी:

	(₹लाख में)
इक्विटी शेयर पूंजी ( ₹100 प्रत्येक)	600
6% वरीयता शेयर पूंजी	300
9% डिबेंचर	480
रिजर्व	240

सन लिमिटेड, आयकर की कटौती से पूर्व औसतन ₹240 लाख प्रतिवर्ष का लाभ, जो 30% है, और डिबेंचर पर ब्याज कमाता है।

समान स्थिति वाली कंपनियों के इक्विटी शेयरों पर सामान्य रिटर्न 7.2% है, बशर्ते:

- (क) कर पश्चात लाभ में कम से कम 3 बार निश्चित ब्याज और निश्चित लाभांश शामिल होता है।\*
- (ख) पूंजी गियरिंग अनुपात 0.5625 है।
- (ग) इक्विटी शेयर पूंजी पर यील्ड की गणना वितरित लाभ के 50% और अवितरित लाभ पर 5% के आधार पर की जाती है।

सन लिमिटेड नियमित रूप से 6% का इक्विटी लाभांश दे रहा है।

कंपनी के प्रति इक्विटी शेयर के मूल्य की गणना यह मानते हुए करें कि समान स्थिति वाली कंपनी की तुलना में जोखिम प्रीमियम के लिए समायोजन निम्नानुसार किया जाएगा:

- (i) ब्याज और निश्चित लाभांश कवरेज के लिए अंतर के प्रत्येक समय के लिए 1%
- (ii) पूंजी गियरिंग अनुपात के लिए अंतर के प्रत्येक समय के लिए 2%

पीएटी + डिबेंचर ब्याज

\* डिबेंचर ब्याज + वरीयता लाभांश

#### विलय, अधिग्रहण एवं कॉर्पोरेट पुनर्गठन

12. आर लिमिटेड और एस लिमिटेड ऐसी कंपनियाँ हैं जो एक ही उद्योग में काम करती हैं। चालू वित्त वर्ष के लिए दोनों कंपनियों के वित्तीय विवरण इस प्रकार हैं:

#### तुलन पत्र

विवरण	आर. लिमिटेड (₹)	एस. लिमिटेड (₹)
<b>इक्विटी और देयताएं</b>		
शेयरधारक निधि		
इक्विटी पूंजी (₹10 प्रत्येक)	20,00,000	16,00,000
प्रतिधारित आय	4,00,000	-
गैर चालू देनदारियां		
16% दीर्घकालिक ऋण	10,00,000	6,00,000
चालू देनदारियां	<u>14,00,000</u>	<u>8,00,000</u>
<b>कुल</b>	<b><u>48,00,000</u></b>	<b><u>30,00,000</u></b>

<b>परिसंपत्तियां</b>		
गैर-चालू परिसंपत्तियां	20,00,000	10,00,000
चालू परिसंपत्तियां	<u>28,00,000</u>	<u>20,00,000</u>
<b>कुल</b>	<b><u>48,00,000</u></b>	<b><u>30,00,000</u></b>

**आय विवरण**

	विवरण	आर. लिमिटेड (₹)	एस. लिमिटेड (₹)
क.	शुद्ध बिक्री	69,00,000	34,00,000
ख.	बेची गई वस्तुओं की लागत	<u>55,20,000</u>	<u>27,20,000</u>
ग.	<b>सकल लाभ (क-ख)</b>	13,80,000	6,80,000
घ.	परिचालन व्यय	4,00,000	2,00,000
ड.	ब्याज	<u>1,60,000</u>	<u>96,000</u>
च.	<b>कर पूर्व आय [ग-(घ+ड)]</b>	8,20,000	3,84,000
छ.	कर @ 35%	2,87,000	1,34,400
ज.	कर पश्चात आय (ईएटी)	5,33,000	2,49,600

**अतिरिक्त जानकारी:**

इक्विटी शेयरों की संख्या	2,00,000	1,60,000
लाभांश भुगतान अनुपात (डी/पी)	20%	30%
प्रति शेयर बाजार मूल्य	₹ 50	₹ 20

मान लीजिए कि दोनों कंपनियों इक्विटी शेयरों के एक्सचेंज के ज़रिए से विलय पर बातचीत कर रही हैं:

आपको करना है:

- दोनों कंपनियों के शेयर मूल्य को ईपीएस और पी/ई घटकों में विभाजित करें। साथ ही उनके ईपीएस आंकड़ों को रिटर्न ऑन इक्विटी (आरओई) और प्रति शेयर बुक वैल्यू/आंतरिक मूल्य घटकों में विभाजित करें।
- दोनों कंपनियों के लिए भविष्य की ईपीएस वृद्धि दर का अनुमान लगाएं।
- अपेक्षित परिचालन सहक्रियता के आधार पर, आर. लिमिटेड ने अनुमान लगाया कि एस लिमिटेड इक्विटी शेयर का आंतरिक मूल्य इसके अधिग्रहण पर 25 रुपये प्रति शेयर होगा। आपसे अपेक्षित है कि आप न्यायोचित इक्विटी शेयर एक्सचेंज अनुपातों की एक श्रृंखला तैयार करें जिसे आर लिमिटेड द्वारा एस लिमिटेड के शेयरधारकों को पेश किया जा सके।

भाग (i) और (ii) पर आपके विश्लेषण के आधार पर, क्या आप उम्मीद करते हैं कि बातचीत की शर्तें ऊपरी या निचली विनिमय अनुपात सीमा के करीब होंगी और क्यों?

**अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय प्रबंधन**

13. प्रस्तावित विदेशी निवेश में 1 मिलियन यूनिट के वार्षिक उत्पादन वाले संयंत्र का निर्माण शामिल है। इससे होने वाले उत्पादन का 10 अमेरिकी डॉलर प्रति यूनिट की बिक्री कीमत पर निर्यात किया जाएगा। विनिमय की वर्तमान दर पर स्थानीय उत्पादन की डॉलर लागत 6 अमेरिकी डॉलर प्रति यूनिट के बराबर है। डॉलर में 10% या 15% की गिरावट आने की उम्मीद है। अपेक्षित वर्तमान स्तर से स्थानीय उत्पादन की लागत एवं संभाव्यता में परिवर्तन इस प्रकार होगा:

अमेरिकी डॉलर के मूल्य में गिरावट (%)	उत्पादन की स्थानीय लागत में कमी (यूएसडी/ इकाई)	संभाव्यता
0	-	0.40
10	0.30	0.40
15	0.15 अतिरिक्त कटौती	0.20

वर्तमान विनिमय दर पर संयंत्र का मूल्यहास प्रतिवर्ष 1 मिलियन अमेरिकी डॉलर होगा। स्थानीय कर दर 30% मान लें।

आपको ज्ञात करना है:

- (i) विनिमय दर के सभी विभिन्न परिदृश्यों के अंतर्गत कर पश्चात वार्षिक नकदी प्रवाह (सीएफएटी)
- (ii) सीएफएटी का अपेक्षित मूल्य, यह मानते हुए कि लाभ का कोई प्रत्यावर्तन नहीं हुआ है।
- (iii) निवेश प्रस्ताव की व्यवहार्यता, जिसमें संयंत्र और कार्यशील पूंजी पर 25 मिलियन अमेरिकी डॉलर का आरंभिक निवेश माना गया है, जिसमें निवेश पर 11% की अपेक्षित दर से रिटर्न और विकल्प (ii) के तहत प्राप्त सीएफएटी के आधार पर रिटर्न शामिल है। सीएफएटी में प्रति वर्ष 3% की दर से निरंतर वृद्धि होगी।

**सैद्धांतिक प्रश्न**

14. “अंतर्निहित प्रतिभूतियों से जुड़े नकदी प्रवाह को दो या अधिक नई प्रतिभूतियों में विभाजित करके प्रतिभूतियाँ बनाई जाती हैं”। साधनों तथा उनके प्रकारों की व्याख्या करें।

15. विभिन्न तकनीकों के बारे में बताएं, जिनमें लेनदेन लागत शामिल नहीं होती है तथा इनका उपयोग विदेशी मुद्रा जोखिम को पूर्णतः या अंशतः ऑफसेट करने हेतु किया जा सकता है।



### सुझाए गए उत्तर/संकेत

1. I (ख)  
II (ग)  
III (ख)  
IV (ख)  
V (क)
2. I (ख)  
II (ग)  
III (क)  
IV (घ)
3. (क) अग्रिम मूल्य (फॉरवर्ड प्राइस) होगा  $= S_0 e^{n(r-y)}$   
जहां  $S_0$  = स्पॉट मूल्य  $n$  = अवधि  
 $r$  = जोखिम मुक्त ब्याज दर  $y$  = लाभांश प्रतिफल  
  
तदनुसार,  
फॉरवर्ड मूल्य  $= 2290 e^{90/365(0.0416 - 0.0175)}$   
 $= 2290 e^{0.005942}$   
 $= 2290(1.005960)$   
 $= 2303.65$   
(ख) श्री एक्स इंडेक्स पर फॉरवर्ड कॉन्ट्रैक्ट में लॉन्ग पोजिशन लेंगे।  
(ग) 28 दिनों के बाद लॉन्ग पोजिशन पर लाभ/हानि  
 $= 2450 - 2290 e^{(0.0416 - 0.0175)28/365}$

$$\begin{aligned}
&= 2450 - 2290 e^{0.001849} \\
&= 2450 - 2290(1.001851) \\
&= 2450 - 2294.24 \\
&= 155.76
\end{aligned}$$

(घ) परिपक्वता पर लॉन्ग पोजिशन पर लाभ/हानि

$$\begin{aligned}
&= S_n - S_0 e^{n(r-y)} \\
&= 2470.00 - 2303.65 \\
&= 166.35
\end{aligned}$$

4. (i) पूर्ण हेज की गणना करने के लिए हम हेज अनुपात ( $\Delta$ ) की गणना निम्नानुसार करेंगे:

$$\Delta = \frac{C1-C2}{S1-S2} = \frac{100-0}{650-450} = \frac{100}{200} = 0.50$$

निवेशक को प्रत्येक 1 कॉल ऑप्शन पर शॉर्टनिंग के लिए 0.50 शेयर खरीदना चाहिए या, निवेशक को प्रत्येक 2 कॉल ऑप्शन पर 1 शेयर खरीदना चाहिए।

(ii) यदि निवेशक 1 कॉल ऑप्शन के लिए 0.50 शेयर खरीदता है तो वह अपनी पोजिशन कैसे बनाए रख पाएगा।

(क) यदि शेयर की कीमत 650 रुपये तक जाती है तो खरीदे गए शेयर का मूल्य होगा:

निवेश की बिक्री आय (0.50 x ₹650)	₹ 325
शॉर्ट पोजिशन के कारण हानि ( ₹650 – ₹550)	<u>₹ 100</u>
	<u>₹ 225</u>

(ख) यदि शेयर की कीमत ₹ 450 तक गिर जाती है तो खरीदे गए शेयर का मूल्य होगा:

निवेश की बिक्री आय (0.50 x ₹450)	₹ 225
----------------------------------	-------

(iii) ऑप्शन का मूल्य, मान लीजिए, अवधि के आरंभ में P, निम्न प्रकार से गणना की जाएगी:

$$(\text{₹ } 250 - P) 1.05 = \text{₹ } 225$$

$$₹ 262.50 - 1.05P = ₹ 225$$

$$₹ 37.5 = 1.05P$$

$$P = ₹ 35.71$$

(iv) ऑप्शन पर अपेक्षित रिटर्न

$$\text{ऑप्शन का अपेक्षित मूल्य} = (₹650 - ₹550) \times 0.70 + ₹0 \times 0.30 = ₹70$$

$$\text{अपेक्षित रिटर्न दर} = \frac{70 - 35.71}{35.71} \times 100 = 96.02\%$$

5. (क) केएलएम के लिए इक्विटी की लागत की गणना करने हेतु सबसे पहले हम केएलएम के  $\beta$  की गणना निम्नानुसार करेंगे:

$$\beta (\text{प्रॉक्सी कंपनी के लिए अनगियर्ड इक्विटी}) = 1.1 \times 4 / [4 + (1 - 0.3)] = 0.94$$

$$0.94 = \beta \text{ इक्विटी गियर्ड} \times 3 / [3 + (1 - 0.3)]$$

$$\beta \text{ इक्विटी गियर्ड} = 1.16$$

$$\begin{aligned} \text{इक्विटी की लागत} &= 0.04 + 1.16 \times (0.10 - 0.04) \\ &= 10.96\% \end{aligned}$$

(ख) उपलब्ध आंकड़ों के आधार पर पी/ई और लाभांश-आधारित मूल्यांकन दृष्टिकोण का उपयोग करके मूल्यांकन की सीमा की गणना की जा सकती है।

(i) पी/ई का मूल्यांकन

(₹10 करोड़ की आय के आधार पर)

	प्रॉक्सी इकाई के पी/ई का उपयोग करते हुए	एक्सवाइज्ड के पी/ई का उपयोग करना
प्री सिनर्जिस्टिक वैल्यू	= 12 X ₹ 10 करोड़ = ₹ 120 करोड़	= 10 X ₹ 10 करोड़ = ₹ 100 करोड़
पोस्ट सिनर्जिस्टिक वैल्यू	= 12 X ₹ 10 करोड़ X 1.1 = ₹ 132 करोड़	= 10 X ₹ 10 करोड़ X 1.1 = ₹ 110 करोड़

## (ii) विभाजित मूल्यांकन मॉडल

	50% भुगतान के आधार पर	40% भुगतान के आधार पर
प्री सिनर्जिस्टिक वैल्यू	$= \frac{0.5 \times 10 \times 1.07}{0.1096 - 0.07}$ = ₹ 135.10 करोड़	$= \frac{0.4 \times 10 \times 1.07}{0.1096 - 0.07}$ = ₹ 108.08 करोड़
पोस्ट सिनर्जिस्टिक वैल्यू	$= \frac{0.5 \times 10 \times 1.1 \times 1.07}{0.1096 - 0.07}$ = ₹ 148.61 करोड़	$= \frac{0.4 \times 10 \times 1.1 \times 1.07}{0.1096 - 0.07}$ = ₹ 118.89 करोड़

## मूल्यांकन की सीमा

	पी/ई आधारित	लाभांश आधारित
प्री सिनर्जिस्टिक	₹ 100 करोड़	₹ 135.10
पोस्ट सिनर्जिस्टिक	₹ 110 करोड़	₹ 148.61

## (ग) बाजार मूल्य

यद्यपि केएलएम के मूल्य के बारे में कोई जानकारी उपलब्ध नहीं है, फिर भी केएलएम द्वारा उत्पन्न एबीसी की आय के अनुपात के आधार पर बाजार मूल्य की गणना करना संभव हो सकता है।

$$\begin{aligned} \text{एबीसी का बाजार मूल्य} &= 80 \text{ लाख शेयर} \times ₹375 &= ₹ 300 \text{ करोड़} \\ \text{एबीसी की कर पश्चात आय} &= ₹ 300 \text{ करोड़} / 13 &= ₹ 23.08 \text{ करोड़} \end{aligned}$$

यदि एबीसी का बाजार मूल्य केएलएम को एबीसी की सापेक्ष आय के अनुपात में आवंटित किया जाता है, तो केएलएम का बाजार मूल्य ₹300 करोड़  $\times [10/23.08] = ₹129.98$  करोड़ होगा।

केएलएम की कर पश्चात आय = ₹10 करोड़

यदि एबीसी का पी/ई अनुपात इस पर लागू किया जाए तो केएलएम का बाजार मूल्य हो जाता है ₹ 10 करोड़  $\times 13 = ₹ 130$  करोड़।

## 5. (i) वर्तमान विनिमय दरों पर लाभ

$$2400 [€ 500 \times ₹ 51.50 - (\$ 800 \times ₹ 27.25 + ₹ 1,000 + ₹ 1,500)]$$

$$2400 [₹ 25,750 - ₹ 24,300] = ₹ 34,80,000$$

विनिमय दरों में परिवर्तन के पश्चात लाभ

$$2400[€500 \times ₹ 52 - (S\$ 800 \times ₹ 27.75 + ₹ 1000 + ₹ 1500)]$$

$$2400[₹ 26,000 - ₹ 24,700] = ₹ 31,20,000$$

**लेन-देन जोखिम के कारण हानि**

$$₹ 34,80,000 - ₹ 31,20,000 = ₹ 3,60,000$$

(ii) नए स्पॉट विनिमय दरों पर आधारित लाभ

$$2400[₹ 25,000 - (800 \times ₹ 27.15 + ₹ 1,000 + ₹ 1,500)]$$

$$2400[₹ 25,000 - ₹ 24,220] = ₹ 18,72,000$$

छह महीने के अंत में विनिमय दरों में परिवर्तन के बाद लाभ

$$2400 [₹ 25,000 - (800 \times ₹ 27.75 + ₹ 1,000 + ₹ 1,500)]$$

$$2400 [₹ 25,000 - ₹ 24,700] = ₹ 7,20,000$$

**लेन-देन जोखिम के कारण लाभ में गिरावट**

$$₹ 18,72,000 - ₹ 7,20,000 = ₹ 11,52,000$$

$$€ \text{ में प्रत्येक इकाई (यूनिट) का वर्तमान मूल्य} = \frac{₹ 25,000}{₹ 51.50} = € 485.44$$

$$\text{विनिमय दर में परिवर्तन के बाद कीमत} = \frac{₹ 25,000}{₹ 51.75} = € 483.09$$

विनिमय दर में परिवर्तन के कारण मूल्य में परिवर्तन

$$€ 485.44 - € 483.09 = € 2.35 \text{ or } (-) 0.48\%$$

मांग की मूल्य लोच = 1.5

कीमत में गिरावट के कारण मांग में वृद्धि  $0.48 \times 1.5 = 0.72\%$  Size बढ़े

हुए ऑर्डर का आकार =  $2400 \times 1.0072 = 2417$  यूनिट

$$\text{लाभ} = 2417 [₹ 25,000 - (800 \times ₹ 27.75 + ₹ 1,000 + ₹ 1,500)]$$

$$= 2417 [₹ 25,000 - ₹ 24,700] = ₹ 7,25,100$$

**इसलिए, परिचालन जोखिम के कारण लाभ में कमी**

$$₹ 18,72,000 - ₹ 7,25,100 = ₹ 11,46,900$$

वैकल्पिक रूप से, यदि यह मान लिया जाए कि इकाइयों में परिवर्तन के साथ निश्चित लागत में कोई परिवर्तन नहीं होगा तो उत्तर इस प्रकार होगा:

$$\begin{aligned} \text{निश्चित लागत} &= 2400[\text{₹ } 1,000] = \text{₹ } 24,00,000 \\ \text{लाभ} &= 2417 [\text{₹ } 25,000 - (800 \times \text{₹ } 27.75 + \text{₹ } 1,500)] \\ &\quad - \text{₹ } 24,00,000 \\ &= 2417 (\text{₹ } 1,300) - \text{₹ } 24,00,000 = \text{₹ } 7,42,100 \end{aligned}$$

इसलिए, परिचालन जोखिम के कारण लाभ में कमी  
 $\text{₹ } 18,72,000 - \text{₹ } 7,42,100 = \text{₹ } 11,29,900$

7. (i) आपूर्तिकर्ता को 60 दिनों में भुगतान

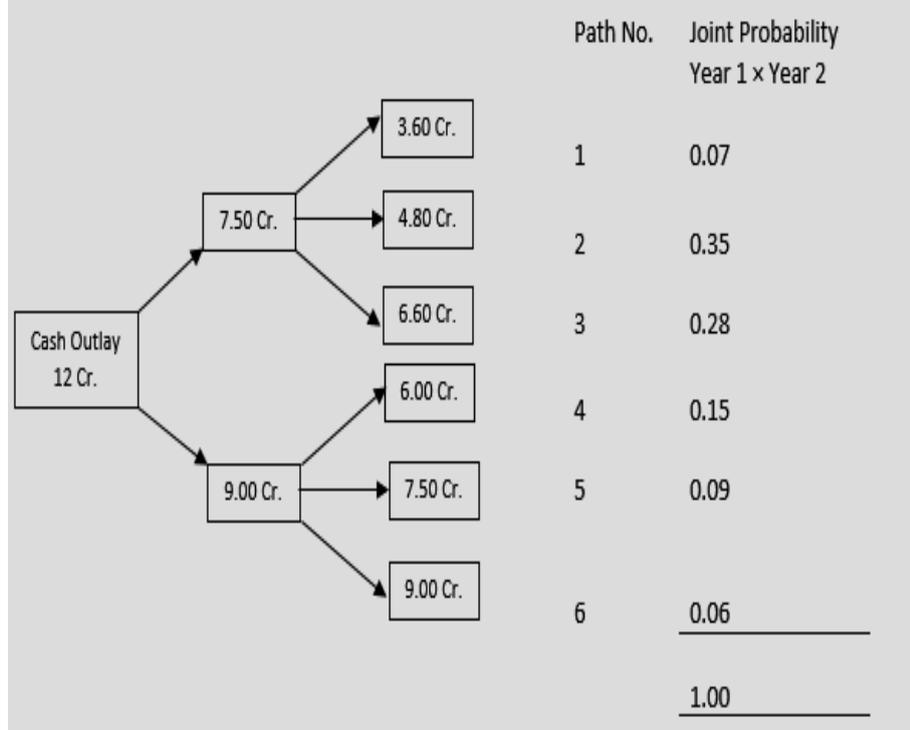
यदि आपूर्तिकर्ता को 60 दिनों में भुगतान किया जाता है, तो 1 यूएसडी के लिए लागू अग्रिम दर	₹ 83.40
देय भुगतान	यूएसडी 2,000,000
रुपये में आउटफ्लो (यूएसडी 2000000 × ₹ 83.40)	₹ 16,68,00,000
जोड़ें: 30 दिनों के लिए ऋण पर ब्याज @ 10% प्रति वर्ष	₹ 13,90,000
कुल आउटफ्लो ₹ में	₹ 16,81,90,000

(ii) आपूर्तिकर्ता के 90 दिन के क्रेडिट ऑफर का लाभ उठाना

देय राशि	यूएसडी 2,000,000
जोड़ें: 30 दिनों के लिए क्रेडिट अवधि पर 8% प्रति वर्ष की दर से ब्याज	यूएसडी 13,333
यूएसडी में कुल आउटफ्लो	यूएसडी 2,013,333
1 यूएसडी के लिए लागू अग्रिम दर	₹ 83.90
₹ में कुल आउटफ्लो (यूएसडी 2,013,333 × ₹ 83.90)	₹ 16,89,18,639

**सलाह:** विकल्प 1 बेहतर है क्योंकि इसमें नकदी का आउटफ्लो कम होता है।

8. (i) निर्णय वृक्ष आरेख चार्ट में प्रस्तुत किया गया है, जिसमें विभिन्न पथों और परिणामों की पहचान की गई है, तथा विभिन्न पथों/परिणामों की गणना और प्रत्येक पथ का एनपीवी निम्नलिखित तालिकाओं में प्रस्तुत किया गया है:



(ii) 15% छूट दर पर प्रत्येक पथ का शुद्ध वर्तमान मूल्य (एनपीवी) नीचे दिया गया है:

(₹करोड़ में)

पथ	वर्ष 1 नकदी प्रवाह (₹)	वर्ष 2 नकदी प्रवाह (₹)	कुल नकद आउटफ्लो (पीवी) (₹)	नकद आउटफ्लो (₹)	एन पी वी (₹)
1.	$7.50 \times 0.870 = 6.53$	$3.60 \times 0.756 = 2.72$	9.25	(12)	(-) 2.75
2.	6.53	$4.80 \times 0.756 = 3.63$	10.16	(12)	(-) 1.84
3.	6.53	$6.60 \times 0.756 = 4.99$	11.52	(12)	(-) 0.48
4.	$9.00 \times 0.870 = 7.83$	$6.00 \times 0.756 = 4.54$	12.37	(12)	0.37
5.	7.83	$7.50 \times 0.756 = 5.67$	13.50	(12)	1.50
6.	7.83	$9.00 \times 0.756 = 6.80$	14.63	(12)	2.63

## अपेक्षित शुद्ध वर्तमान मूल्य दर्शाने वाला विवरण

(₹करोड़ में)

पथ	एनपीवी ( ₹ )	संयुक्त संभावना	अपेक्षित एन.पी.वी. (₹)
1	(-) 2.75	0.07	(-) 0.19
2	(-) 1.84	0.35	(-) 0.64
3	(-) 0.48	0.28	(-) 0.13
4	0.37	0.15	0.06
5	1.50	0.09	0.14
6	2.63	0.06	0.16
			(-) 0.60

- (iii) सबसे अच्छा परिणाम पथ 6 होगा जब एनपीवी 2.63 करोड़ रुपये पर होगा। इस एनपीवी के घटित होने की संभावना 6% है और इसलिए अपेक्षित एनपीवी 0.16 करोड़ रुपये है।
- (iv) यदि सबसे खराब परिणाम प्राप्त होता है तो परियोजना का एनपीवी ऋणात्मक ₹2.75 करोड़ होगा। इस एनपीवी के घटित होने की संभावना 7% है और इसलिए एनपीवी ऋणात्मक ₹ 0.19 करोड़ (पथ 1) होगा।
- (v) परियोजना को स्वीकार नहीं किया जाना चाहिए क्योंकि संयुक्त संभाव्यता के आधार पर अपेक्षित एन.पी.वी. ऋणात्मक 0.60 करोड़ रुपये है।

## 9. (क) स्टॉक का रिटर्न

$$\text{स्मॉल कैप ग्रोथ} = 5.80 + 0.65 \times 8.85 + 1.95 \times (-4.25) + 1.65 \times 0.80 = 4.585$$

$$\text{स्मॉल कैप वैल्यू} = 5.80 + 1.25 \times 8.85 + 2.23 \times (-4.25) + 2.15 \times 0.80 = 9.105$$

$$\text{लार्ज कैप ग्रोथ} = 5.80 + 2.25 \times 8.85 + 3.2 \times (-4.25) + 8.65 \times 0.80 = 19.033$$

$$\text{लार्ज कैप वैल्यू} = 5.80 + 1.325 \times 8.85 + 2.25 \times (-4.25) + 9.50 \times 0.80 = 15.564$$

मार्केट इंडेक्स पर अपेक्षित प्रतिफल

$$0.15 \times 4.585 + 0.20 \times 9.105 + 0.15 \times 19.033 + 0.50 \times 15.564 = 13.145\%$$

वैकल्पिक रूप से इसकी गणना निम्न प्रकार से भी की जा सकती है: -

$$= 5.80 + [0.65 \times 0.15 + 1.25 \times 0.2 + 2.25 \times 0.15 + 1.325 \times 0.5] \times 8.85 + [1.95 \times 0.15 + 2.23 \times 0.2 + 3.2 \times 0.15 + 2.25 \times 0.5] \times (-4.25) + [1.65 \times 0.15 + 2.15 \times 0.2 + 8.65 \times 0.15 + 9.5 \times 0.5] \times 0.8 = 5.80 + 11.925 + (-9.960) + 5.38 = 13.145\%$$

(ख) सीएपीएम का उपयोग करते हुए,

$$\text{स्मॉल कैप ग्रोथ} = 5.80 + 0.65 \times 8.85 = 11.553\%$$

$$\text{स्मॉल कैप वैल्यू} = 5.80 + 1.25 \times 8.85 = 16.863\%$$

$$\text{लार्ज कैप ग्रोथ} = 5.80 + 2.25 \times 8.85 = 25.713\%$$

$$\text{लार्ज कैप वैल्यू} = 5.80 + 1.325 \times 8.85 = 17.526\% \text{ मार्केट}$$

इंडेक्स पर अपेक्षित प्रतिफल

$$= 0.15 \times 11.553 + 0.20 \times 16.863 + 0.15 \times 25.713 + 0.50 \times 17.526 = 17.726\%$$

(ग) आइए हम यह मान लें कि श्री हरि छोटे कैप वैल्यू स्टॉक में  $X_1$  % और बड़े कैप ग्रोथ स्टॉक में  $X_2$  % निवेश करेंगे

$$X_1 + X_2 = 1$$

$$0.65 X_1 + 1.325 X_2 = 1$$

$$0.65 X_1 + 1.325(1 - X_1) = 1$$

$$0.65 X_1 + 1.325 - 1.325 X_1 = 1$$

$$0.325 = 0.675 X_1$$

$$\frac{0.325}{0.675} = X_1$$

$$\text{अतः, } 0.481 = X_1 \text{ और } X_2 = 0.519$$

तदनुसार, फंड का 48.10% हिस्सा स्मॉल कैप ग्रोथ श्रेणी के शेयरों में निवेश किया जाना चाहिए और शेष 51.90% फंड को लार्ज कैप वैल्यू शेयरों में निवेश किया जाना चाहिए।

10. यह तय करने हेतु कि श्रीमान जेड को किस बॉन्ड में निवेश करना चाहिए, हम प्रत्येक बॉन्ड की अवधि की गणना इस प्रकार करेंगे:

**बॉन्ड एक्स की अवधि**

वर्ष	नकद प्रवाह	पीवी@ 12%		बांड वैल्यू का अनुपात	बांड वैल्यू x समय (वर्ष) का अनुपात
1	1,080	0.893	964.44	1.000	1.000

बांड की अवधि 1 वर्ष है।

**बांड वाई की अवधि**

वर्ष	नकद प्रवाह	पीवी@ 12%		बांड वैल्यू का अनुपात	बांड वैल्यू x समय (वर्ष) का अनुपात
1	90	0.893	80.37	0.089	0.089
2	90	0.797	71.73	0.079	0.158
3	90	0.712	64.08	0.070	0.210
4	1,090	0.636	693.24	<u>0.762</u>	<u>3.048</u>
			<u>909.42</u>	<u>1.000</u>	<u>3.505</u>

इस प्रकार, बांड की अवधि 3.505 वर्ष है।

वैकल्पिक रूप से, इसकी गणना निम्न प्रकार से भी की जा सकती है:

वर्ष	नकदी प्रवाह	पीवीएफ @12%	वर्तमान मूल्य (पीवी)	वर्ष x पी.वी.
1	90	0.893	80.37	80.37
2	90	0.797	71.73	143.46
3	90	0.712	64.08	192.24
4	1090	0.636	<u>693.24</u>	<u>2772.96</u>
			<u>909.42</u>	<u>3189.03</u>

$$\text{अवधि} = \frac{3189.03}{909.42} = 3.507$$

मान लीजिए कि बॉन्ड X में निवेश  $x_1$  है और इसलिए बॉन्ड Y में निवेश  $(1 - x_1)$  होगा। चूँकि आवश्यक अवधि 2 वर्ष है, इसलिए इन दोनों प्रतिभूतियों में से प्रत्येक में निवेश का अनुपात इस प्रकार से परिकलित किया जाएगा:

$$2 = x_1 + (1 - x_1) 3.505 \text{ or } 2 = x_1 + (1 - x_1) 3.507$$

$$x_1 = 0.60$$

तदनुसार, निवेश का अनुपात बांड एक्स में 60% और बांड वाई में 40% होगा।

**निवेश की राशि**

बॉन्ड एक्स	बॉन्ड वाई
2 वर्षों के लिए ₹ 18,00,000 का पीवी @ 12% x 60%	2 वर्षों के लिए ₹ 18,00,000 का पीवी @ 12% x 40%
= ₹ 18,00,000 (0.797) x 60%	= ₹ 18,00,000 (0.797) x 40%
= ₹ 8,60,760	= ₹ 5,73,840
खरीदे जाने वाले बांडों की संख्या	खरीदे जाने वाले बांडों की संख्या
= ₹ 8,60,760 / ₹ 964.44 = 892.50 यानी	= ₹ 5,73,840 / ₹ 909.42 = 631 यानी
इस प्रकार, 893 बांड	इस प्रकार, 631 बांड

**टिप्पणी:**

- (i) निवेशक को दो साल तक निवेशित रहना होगा। इसलिए, निवेशक इस धारणा के साथ दोनों बॉन्ड में निवेश कर सकता है कि बॉन्ड एक्स को उसी रिटर्न पर एक और साल हेतु फिर से निवेश किया जाएगा।
- (ii) इसके अलावा, उपरोक्त गणना में, अवधि के स्थान पर संशोधित अवधि का भी उपयोग किया जा सकता है।

**11. (क) कर पश्चात लाभ की गणना (पीएटी)**

	₹
ब्याज और कर पूर्व लाभ (पीबीआईटी)	2,40,00,000
घटाएँ: डिबेंचर ब्याज ( ₹4,80,00,000 × 9/100)	<u>43,20,000</u>
कर पूर्व लाभ (पीबीटी)	1,96,80,000
घटाएँ: 30% कर	<u>59,04,000</u>
कर पश्चात लाभ (पीएटी)	1,37,76,000
घटाएँ: वरीयता लाभांश	

(₹ 3,00,00,000 × 6/100)	18,00,000	
इक्विटी लाभांश (₹ 6,00,00,000 × 6/100)	<u>36,00,000</u>	<u>54,00,000</u>
प्रतिधारित आय (अविभाजित लाभ)		<u>83,76,000</u>

**ब्याज और निश्चित लाभांश कवरेज की गणना**

$$\begin{aligned}
 & \text{पीएटी + डिबेंचर ब्याज} \\
 & = \frac{\text{डिबेंचर ब्याज + वरीयता लाभांश}}{\text{1,37,76,000} \div \text{43,20,000}} \\
 & = \frac{\text{43,20,000} \div \text{18,00,000}}{\text{1,80,96,000}} = 2.96 \text{ गुना}
 \end{aligned}$$

**(ख) कैपिटल गियरिंग अनुपात की गणना**

$$\begin{aligned}
 \text{पूंजी गियरिंग अनुपात} &= \frac{\text{निश्चित प्रभार वाले फंड}}{\text{इक्विटी शेयरधारकों के फंड}} \\
 &= \frac{\text{वरीयता शेयर पूंजी + डिबेंचर}}{\text{इक्विटी शेयर पूंजी + रिजर्व}} \\
 &= \frac{\text{3,00,00,000} + \text{4,80,00,000}}{\text{6,00,00,000} + \text{2,40,00,000}} = 0.93
 \end{aligned}$$

**(ग) इक्विटी शेयरों पर प्रतिफल की गणना:**

इक्विटी शेयरों पर प्रतिफल की गणना वितरित लाभ के 50% और अवितरित लाभ पर 5% के आधार पर की जाती है:

	(₹)
वितरित लाभ पर (₹ 36,00,000 × 50/100)	18,00,000
अवितरित लाभ पर 5% (₹ 83,76,000 × 5/100)	<u>4,18,800</u>
इक्विटी शेयरों पर प्रतिफल	<u>22,18,800</u>

$$\begin{aligned} \text{इक्विटी शेयरों पर प्रतिफल \%} &= \frac{\text{शेयरों पर प्रतिफल}}{\text{इक्विटी शेयर पूंजी}} \times 100 \\ &= \frac{22,18,800}{6,00,00,000} \times 100 = 3.70\% \end{aligned}$$

**इक्विटी शेयरों पर अपेक्षित प्रतिफल की गणना**

- (क) सन लिमिटेड का ब्याज और निश्चित लाभांश कवरेज 2.96 गुना है, लेकिन इंडस्ट्री का औसत 3 गुना है। इसलिए, सन लिमिटेड के शेयरों में हर 1 बार के अंतर के लिए 1% की दर से जोखिम प्रीमियम जोड़ा जाता है।

$$\text{जोखिम प्रीमियम} = 3.00 - 2.96 (1\%) = 0.04 (1\%) = 0.04\%$$

- (ख) सन लिमिटेड का कैपिटल गियरिंग अनुपात 0.93 है, लेकिन इंडस्ट्री का औसत 0.5625 गुना है। इसलिए, सन लिमिटेड के शेयरों में हर 1 गुना अंतर के लिए 2% की दर से जोखिम प्रीमियम जोड़ा जाता है।

$$\text{जोखिम प्रीमियम} = (0.5625 - 0.93) (2\%) = 0.37 (2\%) = 0.74\%$$

सामान्य अपेक्षित रिटर्न	7.20
जोड़ें कम ब्याज और निश्चित ब्याज के लिए जोखिम प्रीमियम लाभांश कवरेज	0.04
जोड़ें उच्च ब्याज गियरिंग अनुपात के लिए जोखिम प्रीमियम	<u>0.74</u>
	<u>7.98</u>

इक्विटी शेयर का मूल्य

$$= \frac{\text{वास्तविक प्रतिफल}}{\text{अपेक्षित प्रतिफल}} \times \text{शेयर का चुकता मूल्य} = \frac{3.70}{7.98} \times 100 = ₹ 46.37$$

12. (i) आर लिमिटेड और एस लिमिटेड के ईपीएस, पी/ई अनुपात, आरओई और बीवीपीएस का निर्धारण।

	आर लिमिटेड	एस लिमिटेड
ईएटी ( ₹ )	5,33,000	2,49,600
एन	200000	160000
ईपीएस (ईएटी÷एन)	2.665	1.56
प्रति शेयर बाजार मूल्य	50	20
पीई अनुपात (एमपीएस/ईपीएस)	18.76	12.82

इक्विटी फंड (इक्विटी वैल्यू)	2400000	1600000
बीवीपीएस (इक्विटी वैल्यू ÷ एन)	12	10
आरओई (ईएटी ÷ ईएफ) या	0.2221	0.156
आरओई (ईएटी ÷ ईएफ) x 100	22.21%	15.60%

(ii) आर लिमिटेड और एस लिमिटेड के ईपीएस की वृद्धि दर का निर्धारण

	आर लिमिटेड	एस लिमिटेड
प्रतिधारण अनुपात (1-डी/पी अनुपात)	0.80	0.70
विकास दर (आरओई x प्रतिधारण अनुपात) या	0.1777	0.1092
विकास दर (आरओई x प्रतिधारण अनुपात) x 100	17.77%	10.92%

(iii) न्यायोचित इक्विटी शेयर विनिमय अनुपात

(क) बाजार मूल्य आधारित =  $MPSS/MPSR = ₹20 / ₹50 = 0.40:1$  (न्यूनतम सीमा)

(ख) आंतरिक मूल्य आधारित =  $₹25 / ₹50 = 0.50:1$  (अधिकतम सीमा)

चूंकि आर लिमिटेड की ईपीएस, पीई, आरओई और वृद्धि की उम्मीदें अधिक हैं, इसलिए तय की गई अवधि मौजूदा शेयर मूल्य के आधार पर निचली सीमा के करीब होने की उम्मीद की जाएगी।

13. (i) वार्षिक सीएफएटी की गणना

	परिदृश्य 1	परिदृश्य 2	परिदृश्य 3
वार्षिक बिक्री (यूनिट्स में) (क)	10,00,000	10,00,000	10,00,000
	यूएस \$	यूएस \$	यूएस \$
विक्रय मूल्य प्र.यू.	10.00	10.00	10.00
लागत प्र.यू.	6.00	5.70	5.55
लाभ प्र.यू. (ख)	4.00	4.30	4.45
कुल लाभ (क x ख)	40,00,000	43,00,000	44,50,000
घटाएँ: मूल्यहास	10,00,000	9,00,000	8,50,000
पीबीटी	30,00,000	34,00,000	36,00,000

घटाएँ: कर @30%	9,00,000	10,20,000	10,80,000
पीएटी	21,00,000	23,80,000	25,20,000
जोड़ें: मूल्यहास	10,00,000	9,00,000	8,50,000
अपेक्षित सीएफएटी (अमेरिकी डॉलर में)	31,00,000	32,80,000	33,70,000

(ii) सीएफएटी का अपेक्षित मूल्य

$$= \text{यूएस\$ } 31,00,000 \times 0.4 + \text{यूएस\$ } 32,80,000 \times 0.4 + \text{यूएस\$ } 33,70,000 \times 0.2$$

$$= \text{यूएस\$ } 32,26,000$$

(iii) प्रस्ताव की व्यवहार्यता:

$$\text{अपेक्षित सीएफएटी} = \text{यूएस\$ } 32,26,000$$

$$\text{अपेक्षित वृद्धि दर} = 3\%$$

$$\text{शाश्वत प्रवाह का अपेक्षित मूल्य} = \frac{\text{यूएस\$ } 32,26,000(1.03)}{0.11-0.03}$$

$$= \frac{33,22,780}{0.08} = \text{यूएस\$ } 4,15,34,750$$

	यूएस \$
इनफ्लो की वैल्यू	4,15,34,750
घटाएँ: प्रारंभिक व्यय	2,50,00,000
परियोजना का एन.पी.वी.	1,65,34,750

चूंकि एन.पी.वी. सकारात्मक है, इसलिए परियोजना व्यवहार्य है।

14. स्ट्रिप्ड सिक्योरिटीज अंतर्निहित सिक्योरिटीज से जुड़े नकदी प्रवाह को दो या अधिक नई सिक्योरिटीज में विभाजित करके बनाई जाती हैं। वे दो सिक्योरिटीज इस प्रकार हैं:

- इंटररेस्ट ओनली (आईओ) सिक्योरिटीज
- प्रिंसिपल ओनली (पीओ) सिक्योरिटीज

चूंकि प्रत्येक निवेशक को मूलधन और ब्याज दोनों मिलता है, इसलिए इसे ब्याज व मूलधन के दो हिस्सों में विभाजित किया जा सकता है।

इसके अनुसार, आईओ सिक्योरिटीज के धारक को केवल ब्याज मिलता है जबकि पीओ सिक्योरिटी धारक को केवल मूलधन मिलता है। अधिक अस्थिर होने के कारण ये सिक्योरिटीज निवेशकों को कम पसंद आती हैं।

यदि बाजार में परिपक्वता पर प्रतिफल बढ़ता है, तो पीओ की कीमत गिरती है क्योंकि ऋणकर्ता सस्ते ऋणों पर भुगतान को टालना पसंद करते हैं। जबकि यदि बाजार में ब्याज दर गिरती है, तो ऋणकर्ता ऋणों को चुकाना चाहते हैं क्योंकि वे कम ब्याज दर पर नए ऋण लेना पसंद करते हैं।

इसके विपरीत, जब बाजार में ब्याज दर बढ़ती है तो आईओ की सिक्योरिटीज का मूल्य बढ़ जाता है क्योंकि ऋण पर अधिक ब्याज ली जाती है। हालांकि, जब मूलधन के पूर्व भुगतान के कारण ब्याज दर होती है, तो आईओ की कीमत गिर जाती है।

इस प्रकार, उपरोक्त से यह स्पष्ट है कि मुख्यतः निवेशकों की धारणा से ही आईओ और पीओ की कीमत निर्धारित होती है।

15. आंतरिक तकनीकें वे तकनीकें हैं जिनमें स्पष्ट रूप से लेनदेन लागत शामिल नहीं होती है और इनका उपयोग जोखिम को पूर्णतः या अंशतः ऑफसेट करने के लिए किया जा सकता है। इन तकनीकों को आगे निम्नानुसार वर्गीकृत किया जा सकता है:

- (i) **घरेलू मुद्रा में चालान:** विक्रेता आमतौर पर अपनी ही मुद्रा या उस मुद्रा में बेचना चाहते हैं जिसमें वे लागत वहन करते हैं। इससे विदेशी मुद्रा जोखिम से बचा जा सकता है लेकिन खरीदारों की प्राथमिकताएँ अन्य मुद्राओं की हो सकती हैं। तेल या एल्युमीनियम जैसे कई बाजारों में, यह आवश्यक है कि बिक्री उसी मुद्रा में की जाए जो प्रमुख प्रतिस्पर्धियों द्वारा उद्धृत की गई हो, जो विक्रेता की अपनी मुद्रा नहीं हो सकती है। क्रेता के बाजार में, विक्रेता खरीदार की आदर्श मुद्रा में चालान जारी करने की ओर अधिक प्रवृत्त होते हैं। विक्रेता खरीदार के लक्ष्यों के जितना करीब होगा, उसके पास बिक्री करने का उतना ही अधिक मौका होगा।
- (ii) **लीडिंग एवं लैगिंग:** लीडिंग एवं लैगिंग का मतलब विदेशी मुद्राओं में भुगतान के समय में बदलाव से है। देय तिथि से पहले भुगतान को लीडिंग कहा जाता है जबकि देय तिथि के बाद भुगतान में देरी को लैगिंग कहा जाता है। इन तकनीकों का उद्देश्य प्रासंगिक मुद्राओं के अपेक्षित अवमूल्यन और/या पुनर्मूल्यांकन का लाभ उठाना है। लीड एवं लैग भुगतान उस स्थिति में विशेष महत्व रखते हैं जब फॉरवर्ड कॉन्ट्रैक्ट तय नहीं रहते हैं। उदाहरण के लिए जब हम - पुनर्मूल्यांकन अपेक्षा - को उलट देते हैं, तो यह लैगिंग हेतु उपयुक्त हो सकता है।
- (iii) **नेटिंग:** नेटिंग में संबद्ध कंपनियाँ शामिल होती हैं, जो एक-दूसरे के साथ व्यापार करती हैं। यह तकनीक काफी आसान है। समूह कंपनियाँ केवल बकाया राशि हेतु अंतर-संबद्ध ऋणग्रस्तता का निपटान करती हैं। सकल अंतर-समूह व्यापार, प्राप्य व

देय राशि को नेट आउट किया जाता है। सबसे आसान योजना को बाइलेट्रल नेटिंग के रूप में जाना जाता है और इसमें कंपनियों के जोड़े शामिल होते हैं। सहयोगियों की प्रत्येक जोड़ी एक-दूसरे के साथ अपनी व्यक्तिगत स्थिति को नेट आउट करती है और प्रत्येक कंपनी की खरीद या उसके नेटिंग पार्टनर को बिक्री में से कम से कम नकदी प्रवाह कम हो जाता है। बाइलेट्रल नेटिंग में अन्य समूह कंपनियों की शुद्ध स्थिति को शामिल करने का कोई प्रयास नहीं होता है।

- (iv) **मैचिंग:** हालाँकि नेटिंग और मैचिंग ऐसे शब्द हैं जिनको अक्सर एक दूसरे की जगह पर इस्तेमाल किया जाता है, लेकिन इनमें अंतर हैं। नेटिंग ऐसा शब्द है जिसका इस्तेमाल कंपनियों के समूह के भीतर संभावित फ्लो हेतु किया जाता है जबकि मैचिंग को इंटर-ग्रुप और थर्ड-पार्टी बैलेंसिंग दोनों के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है।
- (v) **प्राइस वेरिएशन (मूल्य भिन्नता):** प्राइस वेरिएशन में विनिमय दर में परिवर्तन के प्रतिकूल प्रभावों से निपटने के लिए बिक्री मूल्य बढ़ाया जाता है। इस रणनीति को लेकर यह सवाल उठता है कि अगर कंपनी ऐसा कर सकती है तो उसने पहले ही कीमतें क्यों नहीं बढ़ाईं। कुछ देशों में, मूल्य वृद्धि जोखिम प्रबंधन की एकमात्र कानूनी रूप से उपलब्ध रणनीति है।
- (vi) **परिसंपत्ति एवं देयता प्रबंधन:** इस तकनीक का उपयोग तुलन-पत्र, आय विवरण या नकदी प्रवाह के जोखिमों को प्रबंधित करने हेतु किया जा सकता है। नकदी प्रवाह जोखिम पर ध्यान केंद्रित करना आर्थिक रूप से समझदारी भरा है लेकिन शुद्ध विनिमय जोखिम पर जोर देना गलत है। इसलिए, यहाँ हमारा ध्यान नकदी प्रवाह जोखिम प्रबंधन तकनीक के रूप में परिसंपत्ति देयता प्रबंधन पर है।



### प्रश्न-पत्र – 3:

## वृहत लेखा परीक्षा, आश्वासन एवं व्यावसायिक नैतिकता



### प्रश्न

#### भाग क: बहुविकल्पीय प्रश्न

#### इंटीग्रेटेड केस परिदृश्य

वर्ष 2002-03 में निगमित डब्लूवाईजेड लिमिटेड, दो उन्नत संयंत्रों और 6,000 से अधिक कर्मचारियों वाली एक अग्रणी यूनिकॉर्न स्टार्टअप और सिलिकॉन वेफर्स का शीर्ष विनिर्माता है। स्टॉक एक्सचेंज में सूचीबद्ध होने वाले अपने उद्योग में अग्रणी के रूप में, डब्लूवाईजेड लिमिटेड वित्तीय बाजार में अपनी दीर्घकालिक एवं प्रभावशाली मौजूदगी को रेखांकित करता है। कंपनी लगातार सेबी के लिस्टिंग दायित्वों एवं प्रकटीकरण अनिवार्यता विनियमों 2015 का अनुपालन करती है, नियामक अनुपालन सुनिश्चित करती है और निवेशकों व हितधारकों के बीच विश्वसनीयता बनाए रखती है।

प्रकृति, आकार तथा सीमा को ध्यान में रखते हुए, कंपनी ने मेसर्स केएपी एंड कंपनी और मेसर्स बीएमएस एंड कंपनी को अपना संयुक्त लेखा परीक्षक नियुक्त किया है। दोनों फर्मों ने एसए 299 के अनुसार अपने काम को विभाजित किया, प्रशासन की जिम्मेदारी संभालने वाले व्यक्तियों को कार्य का आवंटन साझा किया और लेखापरीक्षा प्रक्रियाओं का संचालन करना शुरू किया।

ऑडिट एंगेजमेंट के दौरान, मेसर्स केएपी एंड कंपनी को प्रॉपर्टी प्लांट एंड इक्विपमेंट (पीपीई) रजिस्टर को सत्यापित करने हेतु नियुक्त किया गया था। मेसर्स केएपी एंड कंपनी के एंगेजमेंट पार्टनर श्री के. ने सत्यापन प्रक्रिया की, लेकिन उन्होंने इसका कोई दस्तावेज नहीं रखा। इसके अलावा, उन्होंने वित्तीय वर्ष के अंत में पीपीई पर क्षति परीक्षण (इम्पेयरमेंट टेस्टिंग) नहीं किया।

प्रोक्योर टू पे प्रोसेस (पी2पी) के सत्यापन की जिम्मेदारी मेसर्स बीएमएस एंड कंपनी के एंगेजमेंट पार्टनर श्री बी. की थी। हालांकि, उन्हें प्रबंधन द्वारा बताया गया कि उनके आंतरिक लेखा परीक्षक श्री ई. ने पहले ही पी2पी प्रक्रिया का सत्यापन कर लिया है और प्रासंगिक लेखा परीक्षा प्रक्रियाएं पूरी कर ली हैं और इसलिए उन्होंने श्री ई. के काम पर भरोसा किया। उन्होंने न तो आंतरिक लेखा परीक्षक के काम का मूल्यांकन करने हेतु कोई अलग लेखा परीक्षा प्रक्रिया की और न ही आंतरिक लेखा परीक्षकों के काम की पर्याप्तता के मूल्यांकन को लेकर निकाले गए अपने निष्कर्ष का दस्तावेजीकरण किया।

इसके अलावा, व्यवसाय के पैमाने में वृद्धि को देखते हुए, डब्लूवाईजेड लिमिटेड के प्रबंधन ने वर्ष के दौरान अपने व्यवसाय में ईआरपी को लागू करने का निर्णय लिया और इंफो लिमिटेड को अपने व्यवसाय हेतु उपयुक्त ईआरपी तैयार करने का अनुबंध दिया। ईआरपी का विकास 12 अगस्त, 2023 को पूरा हुआ। प्रबंधन ने ईआरपी को अपनाना शुरू कर दिया और अपने पुराने तरीकों को बदलना शुरू कर दिया। इसे अपनाने में 4 महीने का समय लगा और 3 दिसंबर, 2023 को सफलतापूर्वक पूरा हुआ। पिछले सॉफ्टवेयर में ऑडिट ट्रेल सुविधा नहीं थी और ऑडिट ट्रेल 3 दिसंबर, 2023 से चालू हुआ था। हालाँकि, कंपनी के लेखापरीक्षकों ने अपनी मुख्य ऑडिट रिपोर्ट में ऑडिट ट्रेल से संबंधित उपरोक्त मामले पर कुछ भी रिपोर्ट नहीं किया है।

उपर्युक्त के अलावा, डब्लूवाईजेड लिमिटेड की एक भारतीय पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनी, एबीसी प्राइवेट लिमिटेड है, जो शेयरों एवं प्रतिभूतियों के अधिग्रहण के व्यवसाय में है। मेसर्स पीक्यूआर एंड कंपनी. एबीसी प्राइवेट लिमिटेड की लेखापरीक्षक है।

एबीसी प्राइवेट लिमिटेड की महत्वपूर्ण वित्तीय जानकारी निम्नानुसार है:

क्र.सं.	विशिष्ट	राशि (₹)
1.	प्रदत्त पूंजी	₹ 67 लाख
2.	वित्तीय संस्थानों से ऋण एवं उधार	₹ 72 लाख
3.	कारोबार	₹ 154 लाख
4.	रिजर्व एवं अधिशेष	₹ 18.36 लाख

उपर्युक्त मामले के आधार पर, निम्नलिखित एमसीक्यू का उत्तर दें:

- मेसर्स केएपी एंड कंपनी के सहभागी श्री के. ने सत्यापन प्रक्रिया का कोई भी दस्तावेजीकरण नहीं किया और वित्तीय वर्ष के अंत में पीपीई पर क्षति परीक्षण (इम्पेयरमेंट टेस्टिंग) नहीं किया। एसए 299 के अनुसार उपयुक्त विकल्प चुनें।
  - श्री के. अपने कार्यों के लिए व्यक्तिगत रूप से जिम्मेदार हैं और उक्त कार्य उनकी जिम्मेदारी थी।
  - नहीं, श्री बी और श्री के संयुक्त रूप से जिम्मेदार हैं क्योंकि वे दोनों संयुक्त लेखा परीक्षक थे।
  - श्री के. जिम्मेदार हैं और साथ ही श्री बी भी जिम्मेदार हैं, क्योंकि श्री बी को श्री के. के कार्य को सत्यापित करना अनिवार्य था और उन्होंने इसे सत्यापित नहीं किया है।
  - न तो श्री के और न ही श्री बी श्री के कार्यों के लिए उत्तरदायी हैं।

2. कंपनी के प्रबंधन ने एक नई ईआरपी प्रणाली को अपनाया है और तदनुसार, 03 दिसंबर, 2023 से ऑडिट ट्रेल को केवल नई ईआरपी प्रणाली में बनाए रखा गया था। क्या ऑडिट ट्रेल की रिपोर्टिंग अनिवार्यता के संबंध में ऑडिटर्स का ऐसा करना उचित था?
- (क) हां, ऑडिटर्स की कार्रवाई उचित थी क्योंकि यह ईआरपी के कार्यान्वयन का पहला वर्ष था। इसलिए ऑडिटर इसकी रिपोर्ट करने के लिए उत्तरदायी नहीं हैं।
- (ख) हां, ऑडिटर्स की कार्रवाई उचित थी क्योंकि ऑडिट ट्रेल वर्ष के दौरान चालू था और इसलिए ऑडिटर इसकी रिपोर्ट करने के लिए उत्तरदायी नहीं हैं।
- (ग) नहीं, ऑडिटर्स की कार्रवाई उचित नहीं थी क्योंकि ऑडिट ट्रेल पूरे वर्ष चालू नहीं था और इसलिए ऑडिटर्स का यह कर्तव्य है कि वे मुख्य ऑडिट रिपोर्ट में इसकी रिपोर्ट करें।
- (घ) हाँ, लेखा परीक्षकों की कार्रवाई उचित थी क्योंकि लेखापरीक्षा ट्रेल को मुख्य लेखापरीक्षा रिपोर्ट में रिपोर्ट करने की आवश्यकता नहीं थी।
3. मेसर्स बीएमएस एंड कंपनी के एंगेजमेंट पार्टनर श्री बी, प्रोक्योर टू पे प्रक्रिया की पुष्टि करने हेतु जिम्मेदार थे, उन्होंने ऐसी कोई प्रक्रिया नहीं की और बिना कोई दस्तावेज रखे आंतरिक लेखा परीक्षक के काम पर भरोसा किया। एसए 610 के अनुसार निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
- (क) श्री बी आंतरिक लेखा परीक्षक के काम पर भरोसा कर सकते हैं। हालाँकि, उन्हें पहले आंतरिक लेखा परीक्षक से चर्चा करनी चाहिए और आंतरिक लेखा परीक्षक के काम की पर्याप्तता का मूल्यांकन करना चाहिए और आंतरिक लेखा परीक्षक के काम के मूल्यांकन के संबंध में इसका दस्तावेजीकरण करना चाहिए।
- (ख) आंतरिक लेखा परीक्षक ने पहले ही पी2पी प्रक्रिया पर लेखा परीक्षा प्रक्रिया की है और इसलिए सांविधिक लेखा परीक्षक बिना किसी अन्य लेखा परीक्षा प्रक्रिया और दस्तावेजीकरण के काम पर भरोसा कर सकता है।
- (ग) लेखा परीक्षा प्रक्रिया और आंतरिक लेखा परीक्षा का दायरा सांविधिक लेखा परीक्षा से पूरी तरह अलग है और इसलिए, सांविधिक लेखा परीक्षक आंतरिक लेखा परीक्षक के काम का उपयोग नहीं कर सकता है।
- (घ) आंतरिक लेखा परीक्षक ने पहले ही पी2पी प्रक्रिया पर लेखा परीक्षा प्रक्रिया पूरी कर ली है और इसलिए सांविधिक लेखा परीक्षक आंतरिक लेखा परीक्षक के काम का मूल्यांकन करने के बाद उस पर भरोसा कर सकता है। हालाँकि, सांविधिक लेखा परीक्षक को इसका दस्तावेजीकरण करने की आवश्यकता नहीं है।

4. उपरोक्त मामले पर विचार करते हुए, क्या एबीसी प्राइवेट लिमिटेड पर सीएआरओ, 2020 के तहत रिपोर्टिंग लागू होगी?
- (क) नहीं, क्योंकि कंपनी एक प्राइवेट लिमिटेड कंपनी है।
- (ख) नहीं, क्योंकि कंपनी शेयरों एवं प्रतिभूतियों के अधिग्रहण के व्यवसाय में है।
- (ग) हाँ, क्योंकि कंपनी सूचीबद्ध कंपनी डब्ल्यूआईजेड लिमिटेड की पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनी है।
- (घ) नहीं, क्योंकि कंपनी कंपनी अधिनियम, 2013 के अनुसार एक छोटी कंपनी है।
5. डब्ल्यूआईजेड लिमिटेड का समेकित वित्तीय विवरण तैयार करते समय, डब्ल्यूआईजेड लिमिटेड के लेखा परीक्षकों और एबीसी प्राइवेट लिमिटेड के लेखा परीक्षक के बीच जिम्मेदारी का विभाजन निम्नलिखित में किसमें रिपोर्ट किया जाना चाहिए:
- (क) ध्यानाकर्षण पैराग्राफ
- (ख) मुख्य लेखा परीक्षा मामला अनुभाग
- (ग) चालू समुत्थान पैराग्राफ
- (घ) अन्य ध्यानाकर्षण पैराग्राफ

#### स्वतंत्र एमसीक्यू

6. शाखा के एक ऋणकर्ता सुबन इंजीनियरिंग ने 31 मार्च, 2024 तक ₹413 लाख की बकाया राशि के साथ ₹400 लाख की अपनी स्वीकृत नकद ऋण सीमा (कैश क्रेडिट लिमिट) का पूरा उपयोग कर लिया था। बैंक ने उसके खाते को उप-मानक परिसंपत्ति (सब स्टैंडर्ड एसेट) घोषित कर दिया है।

जांच के दौरान, डीजीएम ने पाया कि ऋणकर्ता का परिसर क्षतिग्रस्त पड़ा हुआ था, जिसमें कोई मशीनरी, स्टॉक या अन्य परिसंपत्ति मौजूद नहीं थी। ऋणकर्ता से संपर्क करना मुश्किल था, और परिसंपत्तियों के सत्यापन से पुष्टि हुई कि ₹33 लाख की प्राप्य मूल्य वाली जमीन को छोड़कर कोई गिरवी रखी गई सिक्योरिटी उपलब्ध नहीं थी। बैंक ने इस रिपोर्ट को स्वीकार कर लिया और खाते को सब स्टैंडर्ड एसेट मानते हुए प्रावधान किया।

क्या सुबन इंजीनियरिंग के खाते का सही वर्गीकरण एवं प्रावधान मानदंड लागू किए गए हैं?

- (क) खाते को सही वर्गीकृत किया गया है, लेकिन प्रत्याभूत (सिक्वोर्ड) हिस्से पर निर्दिष्ट प्रावधान करने के अलावा अनसिक्वोर्ड हिस्से के सौ प्रतिशत के लिए प्रावधान किया जाना चाहिए।
- (ख) खाते को संदिग्ध परिसंपत्ति के रूप में वर्गीकृत किया जाना चाहिए था और सिक्वोर्ड हिस्से पर आवश्यक प्रावधान करने के अलावा अनसिक्वोर्ड हिस्से के सौ प्रतिशत के लिए प्रावधान किया जाना चाहिए था।
- (ग) खाते को हानि परिसंपत्ति के रूप में वर्गीकृत किया जाना चाहिए था और खाताबही में पूर्ण प्रावधान किया जाना चाहिए था।
- (घ) खाते को संदिग्ध परिसंपत्ति के रूप में वर्गीकृत किया जाना चाहिए था और खाताबही में पूर्ण प्रावधान किया जाना चाहिए था।
7. सीए प्रवीण को केएसएन लिमिटेड द्वारा वर्ष 2023-24 के लिए नियुक्त किया गया है। कंपनी के पेट्रोल डेटा की जांच करते समय, उनके ध्यान में आया है कि बाल श्रम को रोकने वाले कानून के प्रावधानों का पालन नहीं किया जा रहा है और कंपनी बाल श्रम को नियोजित कर रही है। कंपनी अपने टर्नओवर का कुछ हिस्सा निर्यात भी करती है और विदेशी खरीदारों की एजेंसियों द्वारा की गई अनुपालन लेखापरीक्षा में इस मामले पर किसी का ध्यान नहीं गया।
- बाल श्रम के मामले से संबंधित लेखापरीक्षक की टिप्पणी के संबंध में, इस मामले में आगे उनके लिए सबसे उपयुक्त कार्यवाही कौन सी है?
- (क) सीए प्रवीण को इस मामले को अनदेखा करना चाहिए क्योंकि इससे वित्तीय विवरणों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा।
- (ख) सीए प्रवीण को मामले की रिपोर्ट संबंधित सरकारी विभाग को देनी चाहिए।
- (ग) सीए प्रवीण को वित्तीय विवरणों पर संभावित प्रभाव का मूल्यांकन करने हेतु आगे की जानकारी हासिल करनी चाहिए। इसके अलावा, उन्हें ऑडिट जोखिम मूल्यांकन के लिए गैर-अनुपालन के निहितार्थों का मूल्यांकन करना चाहिए।
- (घ) सीए प्रवीण को ऑडिट रिपोर्ट में संशोधित राय व्यक्त करनी चाहिए।
8. मोहिनी लिमिटेड ने ऑडिट रिपोर्ट की तारीख से ठीक एक दिन पहले अपने निर्विवाद वैधानिक बकाया का भुगतान किया। इसके बाद, अब ऑडिटर का मानना है कि सीएआरओ, 2020 के तहत केवल विवादित बकाया की रिपोर्ट करने की आवश्यकता है क्योंकि निर्विवाद बकाया का भुगतान ऑडिट रिपोर्ट की तारीख से

पहले हो चुका है। इस स्थिति में ऑडिटर के लिए निम्नलिखित में से कौन सा सबसे उपयुक्त उपाय है?

- (क) लेखा परीक्षक को विवादित वैधानिक बकाया राशि की रिपोर्ट केवल सीएआरओ, 2020 के पैरा 3 के खंड (viii) (ख) के अनुसार करना आवश्यक है, क्योंकि यदि लेखापरीक्षा रिपोर्ट की तारीख को या उससे पहले भुगतान किया जाता है तो निर्विवाद वैधानिक बकाया राशि की रिपोर्ट करने की कोई आवश्यकता नहीं है।
- (ख) लेखा परीक्षक को सीएआरओ, 2020 के पैरा 3 के खंड (vii) (ए) और (ख) के अनुसार विवादित और निर्विवाद दोनों वैधानिक बकाया की रिपोर्ट करना आवश्यक है।
- (ग) लेखा परीक्षक को सीएआरओ, 2020 के तहत विवादित और निर्विवाद वैधानिक बकाया के लिए विशिष्ट रिपोर्टिंग अनिवार्यताओं को निर्धारित करने हेतु कानूनी सलाहकार से परामर्श करना चाहिए।
- (घ) लेखा परीक्षक को प्रबंधन के साथ मामले पर चर्चा करनी चाहिए और सीएआरओ, 2020 रिपोर्ट में विवादित और निर्विवाद दोनों वैधानिक बकाया की रिपोर्ट करने के लिए उनकी सहमति लेनी चाहिए।

#### भाग ख: वर्णनात्मक प्रश्न

##### लेखापरीक्षा, विवरण एवं मार्गदर्शन टिप्पण गुणवत्ता नियंत्रण पर मानक

9. मेसर्स जिनकुशल एंड कंपनी को वित्तीय वर्ष 2023-24 हेतु एससी लिमिटेड का लेखा परीक्षक नियुक्त किया गया है। मेसर्स जिनकुशल एंड कंपनी के भागीदारों में से एक सीए जिन ने 19 जून, 2024 तक लेखापरीक्षा कार्य पूरा कर लिया। दुर्भाग्य से, अगली सुबह, मुख्य लेखापरीक्षा रिपोर्ट पर हस्ताक्षर करने हेतु एससी लिमिटेड के कार्यालय की ओर जाते समय, वह एक सड़क दुर्घटना का शिकार हो गए और उनकी मृत्यु हो गई। इसलिए मेसर्स जिनकुशल एंड कंपनी के एक अन्य भागीदार सीए कुशल ने सीए जिन द्वारा किए गए कार्य की समीक्षा किए बिना एससी लिमिटेड के खातों पर हस्ताक्षर कर दिए। कारण सहित बताएं कि क्या सीए कुशल द्वारा वित्तीय विवरणों पर ऐसी राय व्यक्त करना सही है, जिसकी लेखापरीक्षा किसी अन्य लेखा परीक्षक द्वारा की गई है।

##### लेखा - परीक्षा प्रमाण

10. 31 मार्च, 2024 को समाप्त वर्ष के लिए लुक्स लिमिटेड के वित्तीय विवरणों की लेखापरीक्षा के दौरान, सीए सुयश, सांविधिक लेखापरीक्षक ने एसए 505 के अनुसार

लेखापरीक्षा प्रक्रियाओं के भाग के रूप में कुछ व्यापार प्राप्तियों एवं व्यापार देय राशियों के लिए बाहरी पुष्टि का अनुरोध किया:

- (i) सीए सुयश ने ₹15,50,000 की शेष राशि हेतु एक देनदार को एक पुष्टि का अनुरोध भेजा, जो 6 महीने से अधिक समय से बकाया था, और उसे सीधे लेखापरीक्षक को जवाब देने पर जोर दिया, यह पुष्टि करते हुए कि वे बताई गई शेष राशि से सहमत हैं या असहमत हैं।
- (ii) उन्होंने ₹13,25,000 की बकाया राशि वाले एक लेनदार को भी पुष्टि का अनुरोध भेजा, जिसमें केवल तभी जवाब देने का अनुरोध किया गया, जब बताई गई राशि से असहमति हो।

सीए सुयश को उपर्युक्त देनदार और लेनदार से निम्नलिखित तरीके से जवाब मिले:

- देनदार ने पुष्टि की कि, उनके रिकॉर्ड के अनुसार, कंपनी की खाताबही के अनुसार ₹15,50,000 के बजाय, उन्हें लुक्स लिमिटेड को ₹14,90,000 का भुगतान करना था।
- लेनदार ने पुष्टिकरण अनुरोध का जवाब नहीं दिया।

देनदार और लेनदार को लेखापरीक्षक द्वारा भेजे गए पुष्टि अनुरोध के प्रकार को बताएं और समझाएँ। साथ ही, देनदार से प्राप्त पुष्टि में विसंगति और लेनदार से पुष्टि प्राप्त न होने पर लेखापरीक्षक को क्या कार्रवाई करनी चाहिए, इस पर चर्चा करें।

### समाप्ति और समीक्षा

11. उदित एंड कंपनी, फन जर्नी लिमिटेड की वैधानिक लेखापरीक्षक है, जो टूर एवं ट्रेवल व्यवसाय में संलग्न कंपनी है। कंपनी का वार्षिक कारोबार ₹1,200 करोड़ और लाभ ₹150 करोड़ है। लेखापरीक्षा की योजना बनाते समय, लेखा परीक्षकों ने प्रबंधन से लिखित अभ्यावेदन पत्र की आवश्यकता पर चर्चा की, ताकि यह पुष्टि की जा सके कि:

- (i) लेखा परीक्षक को लेखा परीक्षा की शर्तों में सहमति के अनुसार सभी प्रासंगिक जानकारी दी गई है; और
- (ii) सभी लेन-देन रिकॉर्ड किए गए हैं और वित्तीय विवरणों में दर्शाए गए हैं

चूँकि लेखा परीक्षा पूरी होने वाली थी, इसलिए लेखा परीक्षक ने लिखित अभ्यावेदन की आवश्यकता सहित किसी मामले पर प्रबंधन से असहमति जताई, जिसको लेकर तर्क दिया गया कि लेखा परीक्षा के दौरान दी गई मौखिक पुष्टि पर्याप्त है।

इसलिए, अलग से लिखित अभ्यावेदन की आवश्यकता नहीं है। हालाँकि, उदित एंड कंपनी ने समझाया कि एसए 580 के तहत प्रबंधन से औपचारिक लिखित बयान पाना अनिवार्य है। फन जर्नी लिमिटेड ने लेखा परीक्षक के कई अनुरोधों के बावजूद लिखित अभ्यावेदन पत्र देने से इनकार कर दिया।

- (क) क्या लिखित अभ्यावेदन पत्र मांगने के लिए लेखा परीक्षक का तर्क उचित है?
- (ख) ऐसे लिखित अभ्यावेदन का स्वरूप क्या होना चाहिए?
- (ग) यदि प्रबंधन लिखित अभ्यावेदन देने से इनकार करता है तो लेखा परीक्षक को आगे क्या करना चाहिए?

#### रिपोर्टिंग

12. सीएआरओ, 2020 के प्रावधानों के संदर्भ में टिप्पणी:

- (क) रेलॉन लिमिटेड का वित्तीय वर्ष 2023-24 के दौरान ₹650 करोड़ का कारोबार है। जुलाई 2023 से इस पर ₹15 लाख का आयकर बकाया है। लेखा परीक्षक द्वारा पूछताछ करने पर कंपनी के प्रबंधन ने उन्हें बताया कि उन्होंने आयकर अधिकारियों के समक्ष उक्त मांग को लेकर आपत्ति पत्र दायर किया है, हालांकि, विभाग से कोई प्रतिक्रिया अभी तक नहीं मिली है। क्या सीएआरओ, 2020 के तहत लेखा परीक्षक की कोई रिपोर्टिंग जिम्मेदारी है?
- (ख) लेखापरीक्षा के दौरान, सीए कुणाल ने पाया कि प्रबंधन द्वारा नियमित अंतराल पर कंपनी की इन्वेंट्री का भौतिक सत्यापन किया गया है। वर्ष के अंत में प्रबंधन द्वारा अपने लेखा बही के संबंध में किए गए भौतिक सत्यापन के अनुसार सूची का सारांश निम्नलिखित है:

(राशि करोड़ रुपये में)

विवरण	भौतिक सत्यापन के अनुसार	लेखाबही के अनुसार
कच्चा माल	1,160	1,180
प्रगतिरत कार्य	410	430
तैयार माल	2,500	2,790
स्टोर और स्पेयर्स	220	180
<b>कुल</b>	<b>4,290</b>	<b>4,580</b>

## लेखापरीक्षा संबंधी सेवाएं

13. संकलन कार्य एक ऐसा कार्य है जिसमें कोई प्रैक्टिशनर किसी कंपनी की वित्तीय जानकारी को लागू वित्तीय रिपोर्टिंग ढांचे के अनुसार तैयार करने और पेश करने में प्रबंधन की सहायता हेतु अपनी लेखांकन और वित्तीय रिपोर्टिंग विशेषज्ञता का इस्तेमाल करता है और एक रिपोर्ट तैयार करता है।
- (i) ऐसे कार्य के तहत तैयार की गई वित्तीय जानकारी किस उद्देश्य के लिए आवश्यक हो सकती है?
- (ii) ऐसे कार्य के लिए प्रैक्टिशनर की रिपोर्ट के घटकों पर संक्षेप में चर्चा करें।

## डिजिटल लेखापरीक्षा और आश्वासन

14. डीसीबी लिमिटेड में वित्त प्रबंधक युवी को अपने मोबाइल फोन पर एक टेक्स्ट संदेश मिला, जिसमें कहा गया था कि यह संदेश उनके बैंक से आया है। संदेश में कहा गया है कि:

"प्रिय ग्राहक, संदिग्ध गतिविधि के कारण आपका अकाउंट अस्थायी रूप से निलंबित कर दिया गया है। अकाउंट को फिर से एक्टिव करने के लिए, कृपया निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करके अपने विवरण सत्यापित करें: [sendyourinfo-link.com]। 24 घंटे के भीतर ऐसा न करने पर अकाउंट बंद हो जाएगा। हमारी बैंकिंग सेवाओं का इस्तेमाल करने के लिए धन्यवाद।"

युवी अपने अकाउंट की सुरक्षा को लेकर चिंतित है। क्या युवी किस प्रकार के फिशिंग साइबर अटैक का शिकार हुए? इसके अलावा इस तरह के अन्य प्रकार के फिशिंग अटैक के बारे में भी बताएं।

## समूह लेखापरीक्षा

15. एडविक इन्वेस्टमेंट्स लिमिटेड एक कंपनी है जिसकी चुकता शेयर पूंजी ₹1 करोड़ है, इसकी एक सहायक कंपनी इन्वेस्टर्स फंड मैनेजमेंट लिमिटेड है। एडविक इन्वेस्टमेंट्स लिमिटेड का मुख्य बिजनेस निवेशकों से धन एकत्र करना और इस धन को विभिन्न फंडों में निवेश करना है। इस कंपनी ने कई ग्राहकों से ₹10 करोड़ एकत्र किए, जो कंपनी के शेयरधारक हैं।

एडविक इन्वेस्टमेंट्स लिमिटेड के खातों की लेखापरीक्षा करते समय सीए चिराग ने पाया कि एकत्रित की गई ₹12 करोड़ की पूरी राशि विभिन्न कंपनियों के शेयरों और डिबेंचर में निवेश की गई है और इन शेयरों की कीमतों में वृद्धि के कारण

अर्जित लाभ कंपनी के विभिन्न शेयरधारकों को वितरित किया गया है। इसके सभी निवेशों का प्रदर्शन उचित मूल्य के आधार पर मापा जाता है।

अब, सीए चिराग ने एडविक इन्वेस्टमेंट्स लिमिटेड के वित्तीय विवरणों की लेखापरीक्षा करते समय एक मुद्दा उठाया कि क्या कंपनी अधिनियम, 2013 की धारा 129(3) के अनुसार समेकित वित्तीय विवरण आवश्यक हैं? उपरोक्त मुद्दे का विश्लेषण करें और अपनी राय दें।

**बैंकों और गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों के लेखापरीक्षा की विशेष विशेषताएं**

16. नूतन एंड कंपनी को आरबीआई के साथ पंजीकृत एक निजी क्षेत्र के बैंक जोई बैंक लिमिटेड का वैधानिक लेखापरीक्षक नियुक्त किया गया है। श्री चहल, संबद्धता भागीदार, ने चेकलिस्ट के अनुसार लेखापरीक्षा करते समय, निम्नलिखित बातों का पता चला, जो लेखापरीक्षा प्रश्नों का हिस्सा होंगे, जिन्हें नीचे बताया गया है:-

क्र.सं.	पूछे गए प्रश्न
1	एनपीए में से एक को नेट बुक वैल्यू से अधिक कीमत पर बेचा गया। लाभ को दर्शाया नहीं गया, लेकिन इसके संबंध में अतिरिक्त प्रावधान को रिवर्स कर दिया गया है।
2	राज्य सरकार द्वारा गारंटीकृत अग्रिम राशि पर ब्याज को आय में दर्शाया गया है, भले ही ऐसा अग्रिम 90 दिनों से अधिक समय से बकाया है।
3	एक ऐसा खाता है जिसके लिए तदर्थ सीमा की ऐसी तदर्थ स्वीकृति की तिथि से 180 दिनों तक समीक्षा नहीं की गई है और ऐसे खाते को खाताबही में निष्पादित परिसंपत्ति माना गया है।
4	बकाया वायदा विनिमय अनुबंधों के सत्यापन पर, विदेशी मुद्राओं में से एक के संबंध में 'शुद्ध स्थिति (नेट पोजिशन)' का समायोजन नहीं किया गया था और पर्याप्त मात्रा में प्रकटीकरण किया गया था।
5	खातों में से एक के मामले में, मौजूदा सीमा के 25% और 120 दिनों की अवधि के लिए एक अतिरिक्त अस्थायी सीमा स्वीकृत की गई है।

कृपया वे कारण बताएं जिनके कारण श्री चहल द्वारा ऐसे मुद्दे उठाए गए होंगे और ऐसे मुद्दों को हल करने हेतु जोई बैंक लिमिटेड की ओर से जिम्मेदार व्यक्ति द्वारा की जा सकने वाली कार्रवाइयों का वर्णन करें।

## सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों के लेखापरीक्षा का अवलोकन

17. राज्य सरकार के स्वामित्व वाला एक सार्वजनिक उपक्रम राज्य में ताप विद्युत संयंत्र की स्थापना का कार्य करता था। सीएंडएजी ने अपनी लेखापरीक्षा रिपोर्ट में, समय पर कुलिंग प्लांट में किस तरह का वाटर ट्रीटमेंट लगाया जाए, इसपर निर्णय न लेने के कारण कार्य पूरा होने में देरी की बात कही। इसके अलावा, कंपनी द्वारा ले-आउट में बार-बार बदलाव और मिट्टी की फिर से जांच की वजह से देरी के अन्य कारणों की ओर इशारा किया गया। उपरोक्त मामले में किस तरह के लेखापरीक्षा का उल्लेख किया गया है? ऐसे लेखापरीक्षा करने में उपयोग की जाने वाली विधियां बताएं।

## सम्यक् तत्परता, जांच और फॉरेंसिक लेखा

18. एमएफ लिमिटेड, औद्योगिक एवं उपभोक्ता उत्पादों में विशेषज्ञता वाली एक विनिर्माण कंपनी, खरीद व उत्पादन रिकॉर्ड बनाए रखने के बावजूद महत्वपूर्ण इन्वेंट्री की कमी का सामना कर रही है। प्रबंधन को धोखाधड़ी का संदेह है, क्योंकि स्टॉक मिलान, उत्पादन बर्बादी रिपोर्ट और इन्वेंट्री समायोजन में विसंगतियां पाई गई हैं।

संदेह के कुछ कारणों में शामिल हैं:

- स्टॉक रिकॉर्ड में बार-बार मैन्युअल समायोजन।
- सामान्य से अधिक उत्पादन बर्बादी, ऐतिहासिक डेटा के साथ असंगत।
- कच्चे माल को उत्पादन के लिए जारी किया गया दिखाया गया, लेकिन कारखाने से गायब।
- तैयार माल भेजा गया, लेकिन बिक्री खातों में दर्ज नहीं किया गया।
- लगातार महीनों में इन्वेंट्री में बिना कारण कमी।

उपरोक्त को ध्यान में रखते हुए, आपको धोखाधड़ी को उजागर करने की प्रक्रिया को सत्यापित करने और की जाने वाली सुधारात्मक कार्रवाई के विकल्पों का मूल्यांकन करने हेतु एमएफ लिमिटेड द्वारा नियुक्त किया गया है। जांच लेखाकार के रूप में आपके सत्यापन के विषय-क्षेत्र क्या होंगे और इन्वेंट्री के गबन के सत्यापन हेतु क्या प्रक्रिया अपनाई जाएगी?

सतत विकास लक्ष्य (एसडीजी) और पर्यावरण, सामाजिक एवं प्रशासन (ईएसजी) आश्वासन

19. एक प्रमुख कपड़ा निर्माण कंपनी सुकरन लिमिटेड, अपने कर्मचारियों द्वारा कार्यस्थल को लेकर विभिन्न चिंताओं के संबंध में आलोचना का सामना कर रही है। कुछ कर्मचारियों ने वेतन भुगतान में देरी की बात कही है, जबकि अन्य ने काम का समय अधिक होने की बात कही है जो उनके वर्क-लाइफ बैलेंस को प्रभावित करते हैं। इसके अलावा, कुछ कर्मचारियों ने कारखाने में अपर्याप्त सुरक्षा उपायों की शिकायत की है, जिससे अक्सर छोटी दुर्घटनाएँ होती रहती हैं। बीआरएसआर का कौन सा सिद्धांत इससे संबंधित है? इस सिद्धांत के मूल घटकों का उल्लेख करें।

लेखा परीक्षकों की व्यावसायिक नैतिकता और दायित्व (नया)

20. (क) केबी एंड एसोसिएट्स को आयरन कंपनी लिमिटेड का वैधानिक लेखा परीक्षक नियुक्त किया गया है। केंद्र सरकार के पास इस कंपनी में चुकता शेयर पूंजी का 72% हिस्सा है। कंपनी के नियुक्ति पत्र में केबी एंड एसोसिएट्स को लेखापरीक्षा स्वीकार करने हेतु बहुत कम समय दिया गया था। सीए यश, जो कि एंगेजमेंट पार्टनर है, ने पिछले लेखापरीक्षक से संपर्क किया लेकिन समय की कमी के कारण उसे पिछले लेखापरीक्षक से जवाब मिलने से पहले ऑडिट असाइनमेंट पर अपनी स्वीकृति देनी पड़ी। इसलिए सीए यश ने नियुक्ति की सशर्त स्वीकृति दी और ऑडिट शुरू किया। चार्टर्ड अकाउंटेंट्स एक्ट, 1949 और उसके अंतर्गत दी गई अनुसूचियों के संदर्भ में चर्चा करें कि क्या सीए यश ने इसका अनुपालन किया है।
- (ख) यदि सीए यश भाग (क) में दी गई उपरोक्त स्थिति में कदाचार के दोषी हैं, तो सीए यश के मामले किस प्राधिकारी के समक्ष रखे गए होंगे तथा चार्टर्ड अकाउंटेंट्स एक्ट, 1949 के अनुसार उक्त प्राधिकारी द्वारा उन पर क्या दंड लगाया जा सकता था?



### सुझाए गए उत्तर/संकेत

भाग क: बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर

1. (क)
2. (ग)
3. (क)
4. (ग)
5. (घ)
6. (ग)
7. (ग)
8. (ख)

भाग ख: वर्णनात्मक प्रश्नों के उत्तर

9. **किसी अन्य लेखा परीक्षक द्वारा किए गए कार्य पर निर्भर रहना:** एसए 220 "वित्तीय विवरणों की लेखापरीक्षा के लिए गुणवत्ता नियंत्रण" के अनुसार, अनुबंध के दौरान लेखापरीक्षा का कार्यभार संभालने वाला अनुबंध भागीदार या संबद्धता भागीदार ऐसी समीक्षा प्रक्रियाओं को कर सकता है जो कि पेशेवर मानकों तथा विनियामक और कानूनी अनिवार्यताओं के अनुसार किया गया है; आगे विचार हेतु महत्वपूर्ण मामले उठाए गए हैं; उचित परामर्श हुए हैं तथा परिणामी निष्कर्षों को प्रलेखित व कार्यान्वित किया गया है; किए गए कार्य की प्रकृति, समय व सीमा को संशोधित करने की आवश्यकता है; किया गया कार्य निष्कर्षों का समर्थन करता है तथा उचित रूप से प्रलेखित है; प्राप्त साक्ष्य लेखापरीक्षा रिपोर्ट का समर्थन करने के लिए पर्याप्त व उचित है; तथा अनुबंध प्रक्रियाओं के उद्देश्य पूरे हो गए हैं।

इसके अलावा, आचार संहिता के अनुसार यह लेखापरीक्षक की पेशेवर ज़िम्मेदारी है और इसका पालन किया जाना चाहिए कि जब लेखापरीक्षक सहायकों को काम सौंपता है या अन्य लेखापरीक्षक तथा विशेषज्ञों द्वारा किए गए काम का उपयोग करता है, तो वह वित्तीय जानकारी पर अपनी राय बनाने और व्यक्त करने के लिए ज़िम्मेदार बना रहेगा। हालाँकि, वह दूसरों द्वारा किए गए काम पर भरोसा करने का हकदार होगा, बशर्ते वह पर्याप्त कौशल

व सावधानी बरते और उसे यह मानने का कोई कारण पता न हो कि उसे ऐसा नहीं करना चाहिए था।

हालांकि, लेखापरीक्षक को सौंपे गए काम का सावधानीपूर्वक निर्देशन, पर्यवेक्षण एवं समीक्षा करनी चाहिए। उसे उचित आश्वासन हासिल करना चाहिए कि अन्य लेखापरीक्षक/विशेषज्ञों और सहायकों द्वारा किया गया कार्य उसके उद्देश्य हेतु पर्याप्त है।

दिए गए मामले में, अंतिम रिपोर्ट पर हस्ताक्षर करने से पहले सभी ऑडिटिंग प्रक्रियाएं सीए जिन द्वारा की गई हैं। हालांकि, उनकी मृत्यु के कारण रिपोर्ट पर उनके द्वारा हस्ताक्षर नहीं किए जा सके। बाद में, सीए कुशल ने सीए जिन द्वारा किए गए कार्य पर भरोसा करते हुए रिपोर्ट पर हस्ताक्षर किए। यहां, सीए कुशल ऑडिट रिपोर्ट पर हस्ताक्षर कर सकते हैं, हालांकि, राय व्यक्त करने की जिम्मेदारी उनकी होगी। वह सीए जिन द्वारा किए गए कार्य पर भरोसा कर सकते हैं बशर्ते कि वह आगे पर्याप्त कौशल और उचित देखभाल का प्रयोग करे और उनके द्वारा किए गए कार्य की समीक्षा करे।

10. **सकारात्मक पुष्टि अनुरोध:** ऐसा अनुरोध कि पुष्टि करने वाला पक्ष लेखापरीक्षक को सीधे जवाब दे, यह इंगित करते हुए कि पुष्टि करने वाला पक्ष अनुरोध में दी गई जानकारी से सहमत है या असहमत है या अनुरोधित जानकारी देता है।

**अपवाद -** ऐसी प्रतिक्रिया जो पुष्टि करने हेतु अनुरोधित जानकारी, या कंपनी के रिकॉर्ड में निहित जानकारी और पुष्टि करने वाले पक्ष द्वारा प्रदान की गई जानकारी के बीच अंतर को इंगित करती है। अंतर के कारण का विश्लेषण करने के बाद पूरी प्रक्रिया के लिए अपवाद का आकलन किया जाना चाहिए।

दी गई स्थिति में, लेखा परीक्षक ने ₹15,50,000 की राशि हेतु सकारात्मक पुष्टि अनुरोध देनदार को भेजा है जो 6 महीने से अधिक समय से बकाया था, हालांकि, पुष्टि करने हेतु अनुरोध की गई जानकारी, या कंपनी के रिकॉर्ड में निहित (यानी ₹15,50,000) और पुष्टि करने वाले पक्ष द्वारा प्रदान की गई जानकारी (यानी ₹14,90,000) के बीच अंतर के कारण अपवाद पुष्टि की स्थिति बन रही है।

लेखा परीक्षक का मूल्यांकन, जब लेखा परीक्षक द्वारा निष्पादित की गई अन्य लेखा परीक्षा प्रक्रियाओं के साथ ध्यान में रखा जाता है, तो यह निष्कर्ष निकालने में लेखा परीक्षक की सहायता कर सकता है कि क्या पर्याप्त उचित लेखा परीक्षा साक्ष्य प्राप्त किए गए हैं या क्या

आगे की लेखा परीक्षा प्रक्रियाएं करना आवश्यक है, जैसा कि एसए 330 द्वारा अपेक्षित है यदि किसी प्रतिक्रिया में अपवाद होने का संकेत है।

कंपनी को पुष्टि करने वाले पक्ष द्वारा इंगित विसंगति की जांच और समाधान करने हेतु कहा जाना चाहिए।

**नकारात्मक पुष्टिकरण अनुरोध** - ऐसा अनुरोध कि पुष्टि करने वाला पक्ष लेखापरीक्षक को सीधे जवाब दे, केवल तभी जब पुष्टि करने वाला पक्ष असहमत हो। दिए गए मामले में, लेखापरीक्षक ने ₹13,25,000 के लिए एक ऋणदाता को नकारात्मक पुष्टिकरण अनुरोध भेजा है। ऋणदाता द्वारा प्रतिक्रिया न देने का अर्थ है कि ऋणदाता राशि से सहमत है। इस प्रकार, लेखापरीक्षक को इस मामले में कोई कार्रवाई करने की आवश्यकता नहीं है।

11. (क) एसए 580, "लिखित अभ्यावेदन" के अनुसार, लेखा परीक्षक प्रबंधन से लिखित अभ्यावेदन देने का अनुरोध करेगा कि प्रबंधन ने लागू वित्तीय रिपोर्टिंग ढांचे के अनुसार वित्तीय विवरणों को तैयार करने की अपनी जिम्मेदारी पूरी कर ली है, जिसमें लेखा परीक्षा अनुबंध की शर्तों में निर्धारित अनुसार ज़रूरी होने पर उनकी निष्पक्ष प्रस्तुति भी शामिल है।

इसके अलावा, लेखा परीक्षक प्रबंधन से लिखित अभ्यावेदन देने का अनुरोध करेगा कि:

- (i) प्रबंधन ने लेखा परीक्षक को लेखा परीक्षा अनुबंध की शर्तों में सहमति के अनुसार सभी प्रासंगिक जानकारी दी है
- (ii) सभी लेन-देन रिकॉर्ड किए गए हैं और वित्तीय विवरणों में दर्शाए गए हैं।

दिए गए मामले में, फन जर्नी लिमिटेड ने लेखा परीक्षक के कई अनुरोधों के बावजूद लिखित अभ्यावेदन पत्र देने से इनकार कर दिया। इस प्रकार, उपरोक्त के मददेनजर लेखा परीक्षक का तर्क सही है।

- (ख) एसए 580 के अनुसार लिखित अभ्यावेदन, लेखा परीक्षक को संबोधित अभ्यावेदन प्रारूप में होगा। यदि कानून या विनियमन के तहत प्रबंधन को अपने उत्तरदायित्वों के बारे में लिखित सार्वजनिक बयान देने की आवश्यकता है, तथा लेखा परीक्षक यह निर्धारित करता है कि ऐसे बयानों में कुछ या सभी आवश्यक अभ्यावेदन शामिल हैं, तो ऐसे बयानों में शामिल प्रासंगिक मामलों को अभ्यावेदन पत्र में शामिल करने की आवश्यकता नहीं है।

- (ग) एसए 580 के अनुसार, यदि प्रबंधन अनुरोधित लिखित अभ्यावेदनों में से एक या एक से अधिक अभ्यावेदन उपलब्ध नहीं कराता है, तो लेखा परीक्षक को:
- प्रबंधन के साथ इस मामले पर चर्चा करनी चाहिए;
  - प्रबंधन की सत्यनिष्ठा का फिर से आकलन करना चाहिए और अभ्यावेदनों (मौखिक या लिखित) और सामान्य रूप से लेखापरीक्षा साक्ष्य की विश्वसनीयता पर इसके प्रभाव का मूल्यांकन करना चाहिए; और
  - एसए 705 (संशोधित) के अनुसार लेखापरीक्षक की रिपोर्ट में राय पर संभावित प्रभाव का निर्धारण करने सहित उचित कार्रवाई करनी चाहिए।

इसके अलावा, यदि लेखापरीक्षक यह निष्कर्ष निकालता है कि प्रबंधन की सत्यनिष्ठा को लेकर संदेह है, जैसे कि लिखित अभ्यावेदन विश्वसनीय नहीं हैं या प्रबंधन आवश्यक लिखित अभ्यावेदन नहीं देता है, तो लेखापरीक्षक एसए 705 (संशोधित) के अनुसार वित्तीय विवरणों पर राय देने से इनकार कर देगा।

इस प्रकार, लिखित अभ्यावेदन देने से इनकार करने से लेखापरीक्षक की पर्याप्त उचित लेखापरीक्षा साक्ष्य पाने की क्षमता प्रभावित हो सकती है, जिससे इसकी संभावना हो सकती है कि लेखापरीक्षा रिपोर्ट संशोधित हो जाए।

12. (क) सीएआरओ, 2020 के पैराग्राफ 3 के तहत लेखा परीक्षक की रिपोर्टिंग जिम्मेदारी: लेखा परीक्षक को सीएआरओ, 2020 के पैराग्राफ 3 के खंड (vii) (क) के अनुसार रिपोर्ट करना आवश्यक है कि क्या कंपनी उचित प्राधिकरणों को समय पर माल व सेवा कर, भविष्य निधि, कर्मचारी राज्य बीमा, आयकर, बिक्री कर, सेवा कर, सीमा शुल्क, उत्पाद शुल्क, मूल्य वर्धित कर, उपकर व किसी भी तरह का अन्य वैधानिक बकाया सहित निर्विवाद वैधानिक बकाया राशि जमा करती है और यदि नहीं, तो देय होने की तारीख से छह महीने से अधिक की अवधि के लिए संबंधित वित्तीय वर्ष के अंतिम दिन तक बकाया वैधानिक बकाया राशि की सीमा का विवरण दिया जाएगा;

इसके अलावा, लेखा परीक्षक को सीएआरओ, 2020 के पैराग्राफ 3 के खंड (vii) (ख) के अनुसार वहां भी रिपोर्ट करना आवश्यक है, जहां उप-खंड (क) में संदर्भित वैधानिक बकाया किसी विवाद के कारण जमा नहीं किया गया है, तो इसकी राशि और उस फोरम का उल्लेख किया जाएगा जहां विवाद लंबित (संबंधित विभाग को केवल प्रतिनिधित्व को विवाद नहीं माना जाएगा) है।

दिए गए मामले में, रेलॉन लिमिटेड पर जुलाई 2023 से ₹15 लाख की आयकर देनदारी बकाया है। हालांकि प्रबंधन ने आपत्ति पत्र दायर किया है, लेकिन कोई औपचारिक विवाद नहीं दर्ज कराया गया है, और बकाया छह महीने से अधिक समय तक भुगतान नहीं किया गया है।

इसलिए, लेखा परीक्षक को सीएआरओ, 2020 के पैरा 3 के खंड (vii)(क) के तहत इसकी रिपोर्ट करना आवश्यक है।

- (ख) सीएआरओ, 2020 के खंड (3)(ii)(क) के अनुसार, लेखा परीक्षक को यह रिपोर्ट करना आवश्यक है कि प्रबंधन द्वारा किए गए भौतिक सत्यापन पर इन्वेंट्री के प्रत्येक वर्ग हेतु कुल मिलाकर 10% या उससे अधिक की कोई विसंगतियां देखी गईं या नहीं और यदि हां, तो क्या उन्हें खाता बही में ठीक से दर्शाया गया है।

**भौतिक सत्यापन और लेखा बही में पाई गई विसंगतियों के प्रतिशत की गणना**

विवरण	भौतिक सत्यापन के अनुसार	लेखा बही के अनुसार	परिवर्तन
कच्चा माल	1,160	1,180	10% से कम
प्रगतिरत कार्य	410	430	10% से कम
तैयार माल	2,500	2,790	10% से अधिक
स्टोर और स्पेयर्स	220	180	10% से अधिक

चूंकि, तैयार माल और स्टोर व स्पेयर के मूल्य में विसंगतियां सीएआरओ, 2020 के खंड (3)(ii)(क) के तहत निर्दिष्ट 10% सीमा से अधिक हैं, इसलिए लेखा परीक्षक को इन विसंगतियों की तदनुसार रिपोर्ट करनी चाहिए।

13. (i) एसआरएस 4410, "संकलन संबद्धता (कॉम्प्लेशन इंगेजमेंट)" के अनुसार, वित्तीय जानकारी जो संकलन संबद्धता का विषय है, विभिन्न उद्देश्यों के लिए आवश्यक हो सकती है, जिनमें शामिल हैं:
- कानून या विनियमन में तय अनिवार्य आवधिक वित्तीय रिपोर्टिंग अनिवार्यताओं का अनुपालन करने हेतु, यदि कोई हो या
  - प्रासंगिक कानून या विनियमन के तहत अनिवार्य वित्तीय रिपोर्टिंग से संबंधित उद्देश्यों के लिए, उदाहरण के लिए:

- प्रबंधन या प्रशासन की जिम्मेदारी संभालने वाले व्यक्तियों के लिए, उनके विशेष उद्देश्यों के लिए उपयुक्त आधार पर तैयार किया गया (जैसे कि आंतरिक उपयोग के लिए वित्तीय जानकारी तैयार करना)
  - किसी अनुबंध या समझौते के अन्य रूप के तहत बाहरी पक्षों के लिए की गई आवधिक वित्तीय रिपोर्टिंग के लिए (जैसे कि अनुदान के प्रावधान या निरंतरता का समर्थन करने के लिए किसी फंडिंग निकाय को प्रदान की गई वित्तीय जानकारी)
  - लेन-देन के उद्देश्यों के लिए, उदाहरण के लिए, कंपनी के स्वामित्व या वित्तपोषण संरचना में परिवर्तन से जुड़े लेनदेन का समर्थन करने के लिए (जैसे कि विलय या अधिग्रहण के लिए)
- (ii) संकलन संबद्धता हेतु जारी की गई प्रैक्टिशनर की रिपोर्ट लिखित में होगी, और इसमें निम्नलिखित बातें शामिल होंगी: -
- (क) रिपोर्ट का शीर्षक;
  - (ख) संबद्धता की शर्तों के अनुसार, पत्र पानेवाला;
  - (ग) यह बयान कि प्रैक्टिशनर ने प्रबंधन द्वारा प्रदान की गई जानकारी के आधार पर वित्तीय जानकारी तैयार की है;
  - (घ) संकलन कार्य के संबंध में तथा वित्तीय सूचना के संबंध में प्रबंधन या प्रशासन हेतु उपयुक्त रूप से नियुक्त व्यक्तियों की जिम्मेदारियों का विवरण;
  - (ङ) लागू वित्तीय रिपोर्टिंग ढांचे की पहचान तथा, यदि विशेष प्रयोजन वित्तीय रिपोर्टिंग ढांचे का उपयोग किया जाता है, तो वित्तीय सूचना में उस विशेष प्रयोजन वित्तीय रिपोर्टिंग ढांचे के विवरण का विवरण या संदर्भ;
  - (च) वित्तीय सूचना की पहचान, जिसमें वित्तीय सूचना के प्रत्येक घटक का शीर्षक शामिल है, यदि इसमें एक से अधिक घटक शामिल हैं, तथा वित्तीय सूचना की तिथि या वह अवधि जिससे यह संबंधित है;

- (छ) वित्तीय जानकारी संकलित करने में प्रैक्टिशनर की जिम्मेदारियों का विवरण, जिसमें यह भी शामिल है कि यह कार्य इस एसआरएस के अनुसार किया गया था, तथा प्रैक्टिशनर ने प्रासंगिक नैतिक अनिवार्यताओं का अनुपालन किया है;
- (ज) इस एसआरएस के अनुसार संकलन कार्य में क्या शामिल है, इसका विवरण;
- (झ) स्पष्टीकरण कि: -
- (i) चूंकि संकलन कार्य आश्वासन कार्य नहीं है, इसलिए प्रैक्टिशनर को संकलन हेतु प्रबंधन द्वारा प्रदान की गई जानकारी की सटीकता या पूर्णता को सत्यापित करने की जरूरत नहीं है; तथा
- (ii) तदनुसार, प्रैक्टिशनर इस बारे में लेखापरीक्षा राय या समीक्षा निष्कर्ष व्यक्त नहीं करता है कि वित्तीय जानकारी लागू वित्तीय रिपोर्टिंग ढांचे के अनुसार तैयार की गई है या नहीं।
- (ञ) यदि वित्तीय जानकारी विशेष प्रयोजन वित्तीय रिपोर्टिंग ढांचे का उपयोग करके तैयार की जाती है, तो एक पैराग्राफ जो:
- (i) उस उद्देश्य को दर्शाता हो जिसके लिए वित्तीय जानकारी तैयार की गई है और, यदि आवश्यक हो, तो इच्छित यूजर्स की विवरण देता हो, या वित्तीय जानकारी में नोट का संदर्भ देता है जो इस जानकारी का प्रकटीकरण करता है; और
- (ii) रिपोर्ट के पाठकों का ध्यान इस तथ्य की ओर आकर्षित करता है कि वित्तीय जानकारी एक विशेष उद्देश्य ढांचे के अनुसार तैयार की गई है और इसके परिणामस्वरूप, जानकारी अन्य उद्देश्यों हेतु उपयुक्त नहीं हो सकती है;
- (ट) प्रैक्टिशनर की रिपोर्ट की तारीख;
- (ठ) प्रैक्टिशनर का हस्ताक्षर; और
- (ड) हस्ताक्षर का स्थान।

14. युवी जिस तरह के फ़िशिंग साइबर हमले का शिकार हुए, वह स्मिशिंग है। यह एक तरह की धोखाधड़ी है जिसमें प्रतिष्ठित कंपनियों से होने का दावा करते हुए टेक्स्ट संदेश भेजे जाते हैं ताकि व्यक्ति अपना पासवर्ड या क्रेडिट कार्ड नंबर जैसी व्यक्तिगत जानकारी बता दे।

फ़िशिंग साइबर हमलों के अन्य प्रकार हैं:

**स्पीयर फ़िशिंग:** यह एक प्रकार का फ़िशिंग अटैक है जो आम तौर पर दुर्भावनापूर्ण ईमेल के ज़रिए व्यक्तियों या संगठनों को लक्षित करता है। स्पीयर फ़िशिंग का लक्ष्य लॉगिन क्रेडेंशियल जैसी संवेदनशील जानकारी चुराना या टारगेट के डिवाइस को मैलवेयर से प्रभावित करना है।

**व्हेलिंग:** व्हेलिंग हमला एक प्रकार का सोशल इंजीनियरिंग अटैक है जिसमें विशेष रूप से सीनियर या सी-लेवल के कार्यकारी कर्मचारियों को लक्षित किया जाता है जिसका उद्देश्य पैसे या जानकारी चुराना या आगे फिर से साइबर हमला करने के लिए व्यक्ति के कंप्यूटर का एक्सेस पाना है।

**विशिंग:** विशिंग, एक वॉयस फ़िशिंग हमला है, जिसमें किसी प्रतिष्ठित संगठन से होने का दिखावा करते हुए फ़ोन कॉल और वॉयस मैसेज का धोखाधड़ीपूर्ण उपयोग किया जाता है, ताकि व्यक्ति को अपना बैंक विवरण और पासवर्ड जैसी निजी जानकारी देने के लिए राजी किया जा सके।

15. कंपनी अधिनियम, 2013 की धारा 129(3) के अनुसार, जहां किसी कंपनी की एक या एक से अधिक सहायक कंपनियां हैं, जिनमें सहयोगी कंपनी और संयुक्त उद्यम शामिल हैं, वह अपने स्वयं के वित्तीय विवरणों के अतिरिक्त कंपनी और सभी सहायक कंपनियों का समेकित वित्तीय विवरण उसी रूप और तरीके से तैयार करेगी, जैसा कि उसका अपना है।

कंपनी अधिनियम, 2013 की धारा 129 की उप-धारा 6 के अनुसार, केंद्र सरकार स्वयं या कंपनियों के एक वर्ग या वर्गों द्वारा आवेदन पर, अधिसूचना द्वारा, कंपनियों के किसी वर्ग या वर्गों को धारा 129 या उसके तहत बनाए गए नियमों की किसी भी आवश्यकता का अनुपालन करने से छूट दे सकती है।

निवेश संस्था ऐसी संस्था है जो:

- (क) उन निवेशकों को निवेश प्रबंधन सेवाएं प्रदान करने के उद्देश्य से एक या एक से अधिक निवेशकों से धन लेती हैं;
- (ख) अपने निवेशक(कों) को यह वचन देती है कि उसका व्यावसायिक उद्देश्य केवल उनकी पूंजी बढ़ाना, निवेश आय या दोनों से रिटर्न हेतु धन का निवेश करना है; और

(ग) अपने सभी निवेशों के प्रदर्शन को उचित मूल्य के आधार पर मापता व मूल्यांकन करती है।

यदि भारतीय लेखा मानक 110 के पैराग्राफ 31 के अनुसार किसी निवेश संस्था को लाभ या हानि के माध्यम से उचित मूल्य पर अपनी सभी सहायक कंपनियों को मापना आवश्यक है, तो उसे समेकित वित्तीय विवरण प्रस्तुत करने की आवश्यकता नहीं है। मूल कंपनी यह निर्धारित करेगी कि वह एक निवेश संस्था है या नहीं।

हालांकि, भारतीय लेखा मानक 110 के पैराग्राफ 33 के अनुसार, किसी निवेश संस्था की मूल कंपनी उन सभी संस्थाओं को समेकित करेगी, जिन्हें वह नियंत्रित करती है, जिसमें निवेश संस्था सहायक कंपनी के माध्यम से नियंत्रित की जाने वाली संस्थाएं भी शामिल हैं, जब तक कि मूल कंपनी स्वयं एक निवेश संस्था न हो।

एडविक इन्वेस्टमेंट्स लिमिटेड हेतु गए मामले में उपरोक्त को लागू करते हुए, जो ऊपर बताई गई सभी शर्तों को पूरा करता है, यह एक निवेश संस्था है। भारतीय लेखा मानक 110 के पैरा 31 और 33 को लागू करके, यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि एडविक इन्वेस्टमेंट्स लिमिटेड को कंपनी अधिनियम, 2013 की धारा 129 (3) के अनुसार समेकित करने की आवश्यकता नहीं है।

16.

क्र.सं.	इस प्रश्न का कारण	प्रश्न के उत्तर में की जाने वाली कार्रवाई
1.	एनपीए की बिक्री के मामले में, जहां बिक्री एनबीवी से अधिक मूल्य पर की जाती है, लेखा परीक्षक को यह सुनिश्चित करना जरूरी है कि कोई लाभ स्वीकृत न हो, तथा अतिरिक्त प्रावधान को वापस न लिया जाए, बल्कि अन्य गैर-निष्पादित वित्तीय परिसंपत्तियों की बिक्री के कारण उत्पन्न होने वाली कमी/हानि की पूर्ति करने हेतु उसे बरकरार रखा जाए।	अतिरिक्त प्रावधान को वापस लेने की प्रविष्टि को बहीखातों में रद्द कर दिया जाएगा तथा ऐसे अतिरिक्त प्रावधान को अन्य गैर-निष्पादित वित्तीय परिसंपत्तियों की बिक्री के कारण उत्पन्न होने वाली कमी/हानि की पूर्ति करने के लिए बनाए रखा जाएगा।
2.	राज्य सरकार द्वारा गारंटीकृत अग्रिम को एनपीए माना जाएगा, भले ही वह 90 दिनों से अधिक समय तक बकाया रहे और एनपीए के	ऐसे अग्रिम पर चिन्हित ब्याज आय को बदल दिया जाएगा तथा उसे तभी आय

	मामले में, आय की पहचान के प्रयोजन के लिए, ऐसे अग्रिम पर ब्याज को तब तक आय नहीं माना जाएगा, जब तक कि ब्याज वसूल न हो जाए।	माना जाएगा जब वह वसूल हो जाए।
3.	जिन खातों के लिए तदर्थ सीमा की समीक्षा ऐसी तदर्थ स्वीकृति की तारीख से 180 दिनों तक नहीं की गई है, उन्हें एनपीए माना जाना चाहिए।	खाताबही में इसका प्रावधान उस तिथि से निष्पादित परिसंपत्ति से गैर निष्पादित परिसंपत्ति में परिवर्तित हो जाएगा, जिस तिथि को व्यवहार में ऐसा परिवर्तन अपेक्षित होगा।
4.	प्रत्येक विदेशी मुद्रा के संबंध में शुद्ध स्थिति सामान्यतः बराबर होनी चाहिए तथा इसमें बहुत अधिक राशि की कमी नहीं होनी चाहिए।	प्रत्येक विदेशी मुद्रा के संबंध में शाखा की शुद्ध "पोजिशन" को समायोजित किया जाना चाहिए तथा पर्याप्त राशि द्वारा कवर किया जाना चाहिए।
5.	अतिरिक्त अस्थायी सीमाएं स्वीकृत की जा सकती हैं, जो मौजूदा सीमा के अधिकतम 20% और अधिकतम 90 दिनों की अवधि के लिए होंगी।	ऐसे खाते के मामले में अतिरिक्त अस्थायी सीमा की शर्तों को संशोधित कर मौजूदा सीमा का 20% और अधिकतम अवधि 90 दिन कर दी जाएगी।

17. दी गई स्थिति में, निष्पादन लेखापरीक्षा की जाएगी क्योंकि यह किसी सरकारी संगठन, कार्यक्रम, गतिविधि या कार्य के प्रदर्शन का स्वतंत्र आकलन करने के उद्देश्य से साक्ष्य की एक वस्तुनिष्ठ और व्यवस्थित जांच है, ताकि सार्वजनिक जवाबदेही में सुधार करने और सुधारात्मक कार्रवाई की देखरेख या प्रारंभ करने की जिम्मेदारी वाले पक्षों द्वारा निर्णय लेने में सुविधा प्रदान करने हेतु जानकारी प्रदान की जा सके।

निष्पादन लेखापरीक्षा करने में उपयोग की जाने वाली कुछ विधियों में शामिल हैं:

- (i) प्रक्रियाओं का विश्लेषण: इसमें गतिविधि की योजना बनाने, संचालन करने, जाँच करने व निगरानी करने हेतु मौजूद प्रणालियों की समीक्षा शामिल है।

इसमें वित्तीय रिपोर्ट, बजट, कार्यक्रम दिशानिर्देश, प्रक्रिया मैनुअल आदि जैसे दस्तावेजों की जांच शामिल होगी।

- (ii) केस स्टडी: केस स्टडी किसी कंपनी, योजना या कार्यक्रम का वर्णनात्मक विश्लेषण है। इसमें समीक्षाधीन पूरे विषय-क्षेत्र के संदर्भ में किसी विशेष मुद्दे का विश्लेषण शामिल है।
- (iii) मौजूदा डेटा का उपयोग: लेखापरीक्षा कर्मचारियों को कंपनी के प्रबंधन और अन्य प्रासंगिक स्रोतों द्वारा रखे गए डेटा की जांच करनी चाहिए। शुद्धता तथा पूर्णता के लिए उपलब्ध डेटा के परीक्षण के आधार पर लेखापरीक्षा निष्कर्ष आश्वासन स्तर को बढ़ाता है।
- (iv) सर्वेक्षण: सर्वेक्षण घटनाओं तथा स्थितियों के अंतर्संबंध का आकलन करने हेतु सदस्यों से मिली जानकारी एकत्र करने की एक विधि है। पूर्व निर्धारित मापदंडों पर सर्वेक्षण लेखापरीक्षा निष्कर्षों को पूरक कर सकते हैं, जिससे लेखापरीक्षा की गुणवत्ता बढ़ती है।
- (v) परिणामों का विश्लेषण: कार्यक्रम की दक्षता निर्धारित करने हेतु लेखापरीक्षक को वास्तविक आउटपुट-इनपुट विश्लेषण करने की आवश्यकता होती है।
- (vi) मात्रात्मक विश्लेषण: इसमें आय, राजस्व जैसे वित्तीय से संबंधित उपलब्ध डेटा या लाभार्थियों के विवरण आदि जैसे कार्यक्रम कार्यान्वयन से संबंधित डेटा की जांच शामिल है। हालाँकि, इसकी उच्च मात्रा के कारण लेखापरीक्षक के लिए पूरे डेटा पर काम करना संभव नहीं हो सकता है। ऐसे मामलों में, नमूनाकरण तकनीकों का उपयोग करने की आवश्यकता होती है।

18. **इन्वेंट्री धोखाधड़ी** - इन्वेंट्री धोखाधड़ी कई और विविध तरह के होती है लेकिन यहाँ माल के दुरुपयोग व उनके छिपाने से संबंधित है।

- (i) कर्मचारी आसानी से परिसर से सामान हटा सकते हैं।
- (ii) माल की चोरी को क्षतिग्रस्त माल आदि के रूप में लिखकर छुपाया जा सकता है।
- (iii) चोरी करने वाले कर्मचारियों द्वारा इन्वेंट्री रिकॉर्ड में हेराफेरी की जा सकती है ताकि खाताबही में दिखाई गई मात्रा मौजूद इन्वेंट्री की वास्तविक मात्रा से मेल खाए।

- (iv) उत्पादन हेतु जारी की गई मात्रा को बढ़ाना कच्चे माल और स्टोर आइटम को गबन करने का एक और तरीका है।
- (v) स्टॉक वास्तव में भेजा गया लेकिन बिक्री/देनदार के खाते में दर्ज नहीं किया गया।

**इन्वेन्ट्री के गबन की सत्यापन प्रक्रिया** - यह ट्रेडिंग स्टॉक, कच्चे माल, विनिर्माण स्टोर, उपकरण या अन्य समान वस्तुओं (जो आसानी से नकदी में परिवर्तित हो सकते हैं) का हो सकता है। ऐसा नुकसान एक कर्मचारी द्वारा एक बार या लंबे समय तक बार-बार चोरी की वजह से हो सकता है, जब उनका पता नहीं चला हो। ऐसी चोरी आमतौर पर कई व्यक्तियों के बीच मिलीभगत से होती है। इसलिए, उनका पता लगाने के लिए, सिस्टम में कमजोरी का पता लगाने हेतु सभी वस्तुओं की प्राप्ति, भंडारण व प्रेषण आदि की पूरी प्रणाली की समीक्षा की जानी चाहिए।

चोरी के लिए जिम्मेदार कारकों का निर्धारण और अपराध तय करना निम्नलिखित के अभाव में मुश्किल होगी:

- (क) इन्वेन्ट्री नियंत्रण की प्रणाली, और इन्वेन्ट्री की आवाजाही का रिकॉर्ड न होना, या
- (ख) पर्याप्त डेटा की उपलब्धता जिससे ऐसा रिकॉर्ड बनाया जा सके। ऐसी जांच में पहला कदम इन्वेन्ट्री में रखी गई मात्रा और इन्वेन्ट्री बुक में दर्शाई गई मात्रा की भौतिक जांच करके जोरी की गई इन्वेन्ट्री की विभिन्न वस्तुओं और उनकी मात्राओं को जांचना है। जांच करने वाले लेखाकार को उत्पादन/बिक्री या किसी अन्य उद्देश्य हेतु स्टोर में मौजूद और जारी किए गए स्टॉक को संभालने वाले व्यक्तियों की जिम्मेदारियों का पता लगाना चाहिए। बिना पर्यवेक्षण के किसी एक ही व्यक्ति के हाथों में अत्यधिक नियंत्रण का तलाशे क्योंकि इससे जांच का दायरा बढ़ जाएगा।

इसके बाद, इन्वेन्ट्री बुक में दर्ज इन्वेन्ट्री की सभी प्राप्तियों और निर्गम को माल आवक व जावक रजिस्ट्रों में प्रविष्टियों और खरीद व बिक्री के संबंध में दस्तावेजी साक्ष्य के संदर्भ में सत्यापित किया जाना चाहिए। इससे प्राप्त नहीं हुई लेकिन भुगतान की गई इन्वेन्ट्री के साथ-साथ जारी की गई लेकिन ग्राहकों से चार्ज नहीं की गई इन्वेन्ट्री का विवरण सामने आएगा। इसके अलावा, लेखाबही में दर्ज आवक व जावक दोनों रिटर्न के संबंध में प्रविष्टियों की जाँच इन्वेन्ट्री बुक में संगत प्रविष्टियों के साथ की जानी चाहिए। साथ ही, इन्वेन्ट्री बुक के योग की जाँच की जानी चाहिए। अंत में, इन्वेन्ट्री के भौतिक सत्यापन में पाई गई कमियों को ऊपर बताए गए तरीके से खाताबही की जाँच करने पर देखी गई विसंगतियों के साथ

मिलाया जाना चाहिए। औद्योगिक कंपनी के मामले में, कारखाने को कच्चा माल, भंडार और उपकरण जारी करना और गोदाम में निर्मित माल की रसीदों को भी संबंधित स्रोत दस्तावेजों के साथ सत्यापित किया जाना चाहिए।

कभी-कभी, प्रबंधन द्वारा उत्पादन के एक हिस्से को हटाकर और उत्पादन में परिणामी कमी को उत्पादन में अपव्यय को बढ़ाकर समायोजित करके इन्वेंटरी का गबन भी किया जाता है; इन्वेंटरी व भंडार के इसी तरह के गबन को उत्पादन हेतु जारी की गई मात्रा को बढ़ाकर कवर किया जाता है। ऐसी कमियों का पता लगाने के लिए, जांच करने वाले लेखाकार को किसी इंजीनियर की सहायता लेनी चाहिए। इसके लिए वह उत्पादन में कमी के लिए जिम्मेदार कारकों को जान सकता है और सही ढंग से निर्धारित कर सकता है कि उत्पादन में कमी किस हद तक बढ़ाई गई है। इस संबंध में, पहले उत्पादन में अपव्यय की सीमा को दर्शाने वाले पिछले रिकॉर्ड से भी मार्गदर्शन लिया जा सकता है। इसी तरह, वह बेहतर तरीके से यह निर्णय लेने में सक्षम होगा कि उत्पादन हेतु जारी की गई सामग्री अत्यधिक थी या नहीं और यदि हां, तो किस हद तक। मशीन की प्रति घंटे की क्षमता और उत्पादन के एक चक्र को पूरा करने में लगने वाला समय भी दिखाएगा कि क्या जारी की गई सामग्री आवश्यकता से अधिक है।

19. **सिद्धांत 3 - मूल्य श्रृंखला में शामिल सभी कर्मचारियों के कल्याण को बढ़ावा देना:** तीसरा सिद्धांत उन सभी पहलों से संबंधित है जो किसी कंपनी को अपने कर्मचारियों के लाभ हेतु उनकी गरिमा, स्वास्थ्य, कल्याण के दृष्टिकोण से करनी होती हैं।

इस सिद्धांत से जुड़े मुख्य घटकों का संक्षिप्त विवरण यह है:

- (क) कंपनी को कर्मचारियों के संबंध में सभी विनियामक अनिवार्यताओं का अनुपालन करना चाहिए।
- (ख) कंपनियों को इंसान के रूप में कर्मचारी की गरिमा का सम्मान करना चाहिए और उनके अधिकारों के लिए सामूहिक बातचीत और कार्यस्थल पर उनके सामने आने वाली समस्याओं के निवारण हेतु संघों, यूनियनों और अन्य भागीदारी तंत्र की उनकी स्वतंत्रता को प्रभावित नहीं करना चाहिए।
- (ग) कंपनियों को सभी प्रकार के बाल श्रम, बंधुआ मजदूरी और अनैच्छिक श्रम के किसी भी अन्य रूप को रोकना चाहिए।
- (घ) कंपनियों में ऐसी प्रणाली होनी चाहिए जिससे कर्मचारियों का वर्क-लाइफ बैलेंस प्रभावित न हो।

- (ड) कंपनियों को कर्मचारी के वेतन व मुआवजे का समय पर भुगतान करना होगा।
- (च) वेतन का भुगतान जीवन निर्वाह पारिश्रमिक के अनुसार होना चाहिए, जिससे बुनियादी जरूरतें पूरी हो सके और कर्मचारियों को आर्थिक सुरक्षा प्रदान कर सके।
- (छ) संस्थाएं ऐसा कार्यस्थल और कार्य परिवेश बनाने के लिए जिम्मेदार हैं जो लोगों के लिए लंबे समय तक काम करने हेतु सुरक्षित, स्वच्छ और आरामदायक हो।
- (ज) कार्यबल का कौशल विकास, कैरियर ग्राथ और प्रशिक्षण उन्हें नियुक्त करने वाली संस्थाओं की एक अन्य जिम्मेदारी है।
- (झ) उत्पीड़न और हिंसा से मुक्त कार्यस्थल बनाना भी संस्था की जिम्मेदारी है।

दिए गए मामले में, कर्मचारियों ने वेतन भुगतान में देरी, अत्यधिक कार्य घंटों के बारे में मुद्दे उठाए हैं जो उनके वर्क-लाइफ बैलेंस को प्रभावित करते हैं और कारखाने में अपर्याप्त सुरक्षा उपायों के बारे में शिकायत की है।

उपर्युक्त को देखते हुए, सुकरन लिमिटेड को इस सिद्धांत के अनुरूप सुधारात्मक कार्रवाई करनी चाहिए।

20. (क) चार्टर्ड अकाउंटेंट्स एक्ट, 1949 की पहली अनुसूची के भाग 1 के खंड (8) के अनुसार, यदि कोई चार्टर्ड अकाउंटेंट, जो इन प्रैक्टिस है, किसी अन्य चार्टर्ड अकाउंटेंट या किसी प्रमाणित ऑडिटर, जिसे प्रतिबंधित प्रमाणपत्र नियम, 1932 के अंतर्गत प्रमाणपत्र जारी किया गया है, द्वारा पूर्व में धारित ऑडिटर के पद को उससे लिखित रूप में संवाद किए बिना स्वीकार कर लेता है, तो उसे व्यावसायिक कदाचार का दोषी माना जाएगा।

हालांकि, चार्टर्ड अकाउंटेंट होने के नाते पूर्व ऑडिटर से चर्चा की अनिवार्यता, एक समान तरीके से, सरकारी और गैर-सरकारी दोनों संस्थाओं के ऑडिट पर लागू होती है, फिर भी सरकारी कंपनियों/बैंकों या उनकी शाखाओं के ऑडिट के मामले में, यदि नियुक्ति समय रहते की जाती है, ताकि इस खंड के दायित्व को पूरा किया जा सके, तो ऑडिट स्वीकार करने से पहले ऐसे दायित्व का अनुपालन किया जाना चाहिए। हालांकि, यदि असाइनमेंट के लिए दी गई समय-सीमा ऐसी है कि निवर्तमान ऑडिटर से उत्तर मिलने तक रुकने का समय नहीं है, तो अगला ऑडिटर

नियुक्ति की सशर्त स्वीकृति दे सकता है और इस खंड के अनुसार पिछले ऑडिटर को संचार भेजने के तुरंत बाद उस कार्य को शुरू कर सकता है, जिस पर ध्यान देने की आवश्यकता है। अपने स्वीकृति पत्र में, उसे ग्राहक को यह स्पष्ट करना चाहिए कि उसकी नियुक्ति की स्वीकृति पिछले ऑडिटर से व्यावसायिक आपत्तियों, यदि कोई हो, के अधीन है और वह पिछले ऑडिटर से प्राप्त जानकारी को ध्यान में रखने के बाद अपनी स्वीकृति के बारे में निर्णय लेगा।

दिए गए मामले में, केबी एंड एसोसिएट्स को आयरन कंपनी लिमिटेड का वैधानिक ऑडिटर नियुक्त किया गया है, जो एक सरकारी कंपनी है क्योंकि केंद्र सरकार के पास कंपनी की चुकता शेयर पूंजी का 72% हिस्सा है और सीए यश ने नियुक्ति की सशर्त स्वीकृति दी है और ऑडिट शुरू किया है। उपरोक्त के मद्देनजर, यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि सीए यश कदाचार के लिए उत्तरदायी नहीं है और उसने चार्टर्ड अकाउंटेंट्स एक्ट, 1949 और उसके तहत अनुसूचियों के प्रावधानों का अनुपालन किया है।

(क) यदि सीए यश को चार्टर्ड अकाउंटेंट्स एक्ट, 1949 की पहली अनुसूची के भाग 1 के खंड 8 के अंतर्गत व्यावसायिक कदाचार का दोषी पाया जाता: तो मामला अनुशासन बोर्ड के समक्ष रखा जाता। अनुशासन बोर्ड द्वारा दी जाने वाली सजा इस प्रकार हो सकती थी:

- (i) सदस्य को फटकार लगाना।
- (ii) 3 महीने की अवधि तक सदस्य का नाम हटाना।
- (iii) ₹1,00,000/- तक का जुर्माना लगाना।

**मानकों/मार्गदर्शन टिप्पणियों/विधायी संशोधनों  
आदि की  
मई, 2025 की मुख्य परीक्षा हेतु प्रयोज्यता  
मुख्य पाठ्यक्रम**

**प्रश्न-पत्र 1: वित्तीय रिपोर्टिंग**

**(I) पाठ्यक्रम से विषयवार हटाए गए विषयों की सूची**

(1)	(2)	(3)
पाठ्यक्रम में क्र. सं.	पाठ्यक्रम के विषय	हटाए गए विषय
3.	<p>सामान्य प्रयोजन वित्तीय विवरणों के संदर्भ में भारतीय लेखा मानकों (इंड एस) का अनुप्रयोग</p> <p>(iv) वित्तीय विवरणों की परिसंपत्तियों और देयताओं पर भारतीय लेखा मानक</p>	<p>भारतीय लेखा मानक (इंड एस) 16 'संपत्ति, संयंत्र और उपकरण'</p> <ul style="list-style-type: none"> <li>• परिशिष्ट ख - सतही खदान के उत्पादन चरण में स्ट्रिपिंग लागत</li> </ul> <p>भारतीय लेखा मानक (इंड एस) 37 'प्रावधान, आकस्मिक देयताएं और आकस्मिक परिसंपत्तियां'</p> <ul style="list-style-type: none"> <li>• परिशिष्ट क: डीकमीशनिंग, बहाली और पर्यावरण पुनर्वास निधि से उत्पन्न होने वाले हितों के अधिकार</li> <li>• परिशिष्ट ख: किसी विशिष्ट बाजार में भाग लेने से उत्पन्न होने वाली देनदारियाँ - अपशिष्ट विद्युत एवं इलेक्ट्रॉनिक उपकरण</li> </ul>
	(vii) अन्य इंड एस	<ul style="list-style-type: none"> <li>• भारतीय लेखा मानक (इंड एस) 29: अति मुद्रास्फीति अर्थव्यवस्थाओं में वित्तीय रिपोर्टिंग</li> </ul>

		<ul style="list-style-type: none"> <li>• भारतीय लेखा मानक (इंड एएस) 106: खनिज संसाधनों की खोज और मूल्यांकन</li> <li>• भारतीय लेखा मानक (इंड एएस) 114: विनियामक आस्थगित खाते</li> </ul>
		<ul style="list-style-type: none"> <li>• भारतीय लेखा मानक (इंड एएस) 117: बीमा अनुबंध</li> </ul>

## (II) विचारणीय महत्वपूर्ण बिंदु

- (1) अध्ययन सामग्री का नवंबर, 2024 संस्करण मई, 2025 की परीक्षा हेतु प्रासंगिक है।
- (2) कंपनी अधिनियम, 2013 द्वारा जारी प्रासंगिक संशोधन/अधिसूचनाएं/परिपत्र/नियम तथा 31 अक्टूबर, 2024 तक जारी मौजूदा मानकों में सीमित संशोधन मई, 2025 की परीक्षा हेतु उपयुक्त होंगे।
- (3) हाल ही में अधिसूचित भारतीय लेखा मानक, उनकी अधिसूचना के एक वर्ष पश्चात ही लागू होते हैं। तदनुसार, 12 अगस्त, 2024 को अधिसूचित भारतीय लेखा मानक 117: बीमा अनुबंध मई, 2025 की परीक्षा हेतु उपयुक्त नहीं होंगे। हालांकि, भारतीय लेखा मानक 117 की अधिसूचना के परिणामस्वरूप मौजूदा लागू भारतीय लेखा मानक में सीमित संशोधन मई, 2025 की परीक्षा में लागू होंगे।
- (3) भारतीय लेखा मानक बनाम भारतीय लेखा मानक में विशेष प्रावधान के अंतर के रूप में प्रासंगिक स्थानों पर लेखांकन मानकों की सीमित चर्चा दी गई है। लेखांकन मानक पाठ्यक्रम का हिस्सा नहीं हैं। हालांकि, एएस 7, एएस 9, एएस 19 और एएस 22 के संबंध में जहां भारतीय लेखा मानक और एएस के बीच महत्वपूर्ण अंतर हैं, इन लेखांकन मानकों (यानी एएस 7, एएस 9, एएस 19 और एएस 22) पर प्रश्न दोनों मानकों (यानी भारतीय लेखा मानक और एएस) में अलग-अलग लेखांकनों के संबंध में परीक्षा में दिया जा सकता है।

## प्रश्न-पत्र 3: वृहत लेखा परीक्षा, आश्वासन एवं व्यावसायिक नैतिकता

- I. संशोधित एसए 800, "विशेष विचार-विशेष उद्देश्य ढांचे के अनुसार तैयार वित्तीय विवरणों की लेखा परीक्षा" की प्रयोज्यता, संशोधित एसए 805, "विशेष विचार-एकल उद्देश्य वित्तीय विवरणों और वित्तीय विवरण के विशिष्ट घटकों, खातों या मदों की लेखा परीक्षा" और संशोधित एसए 810, "सारांश वित्तीय विवरणों पर रिपोर्ट करने की प्रतिबद्धताएँ" अध्याय 8 मई, 2025 परीक्षा हेतु विशेष विषयों में शामिल हैं।
  - II. मई, 2025 परीक्षा हेतु विधायी संशोधनों की प्रयोज्यता: छात्रों से अपेक्षा है कि वे परीक्षा से 6 महीने पहले तक की गई अधिसूचनाओं, परिपत्रों और अन्य विधायी संशोधनों से अपडेट रहें। तदनुसार, 31 अक्टूबर, 2024 तक विनियामक प्राधिकरण द्वारा जारी प्रासंगिक अधिसूचनाएं/परिपत्र/नियम/दिशानिर्देश सहित प्रासंगिक अधिसूचित धाराएं और विधायी संशोधन मई, 2025 की परीक्षा हेतु प्रासंगिक होंगे।
- टिप्पणी: संशोधित अध्याय 8 और मई, 2025 की परीक्षाओं के लिए लागू महत्वपूर्ण अधिसूचनाएं और परिपत्र अध्ययन सामग्री के नवंबर 2024 संस्करण में शामिल हैं।